जन्म ९ अगस्त , १९४३

शिक्षा - "कामायनी और उर्वशीमे नारी चित्रण" शोध पर पटना विश्वविद्यालय सँ पी० एच० डी० 'क उपाधि प्राप्त,



डा० (श्रीमती) शेफालिका वर्मा

उपलब्धि - ७४क सर्वश्रेष्ठ गद्य लेखिकाक लेल महा० महो० डॉ० उमेश मिश्र स्मृति पदक डॉ० बाबूराम सक्सेना द्वारा इलाहाबादमे प्राप्त, संगे 'काव्य विनोदिनी 'क उपाधि सेहो, 'रिफरेन्स एशिया 'क हूजहू वोल्यूम - II मे बिहारक एकमात्र महिला साहित्याकारक जिनक परिचय प्रकाशित, पेनगुइन सीरीज ऑफ इंडियामे अर्लिन आर० के० जिडे, शिकागो वि० वि० द्वारा हिनक कविताक अंग्रेजी अनुवाद संगृहीत, हिनक कविता सभक अनुवाद हिन्दी, अंग्रेजी, उड़िया, गुजराती, डोगरी आदि कतेको भाषामे भेल अछि ।

संपादन कार्य - पटना सँ प्रकाशित हिन्दीक बाल पत्रिका 'चमकते सितारे'क संपादन ७-८ बरस धरि, किछ काल लेल मैथिली 'टटका'क सह संपादन सेहो।

सामाजिक कार्य - सहरसा नगरपालिकाक आयुक्त दस बरिस धरि, संगे कतोको सरकारी, गैर सरकारी समितिक सदस्या रहलीह ।

प्रकाशन - मैथिली - विप्रलब्धा (कविता संग्रह), स्मृति रेखा (संस्मरण संग्रह), एकटा आकास (कथा संग्रह), यायावरी (यात्रा वृत्तांत), भावांजलि (गद्य गीत) ।

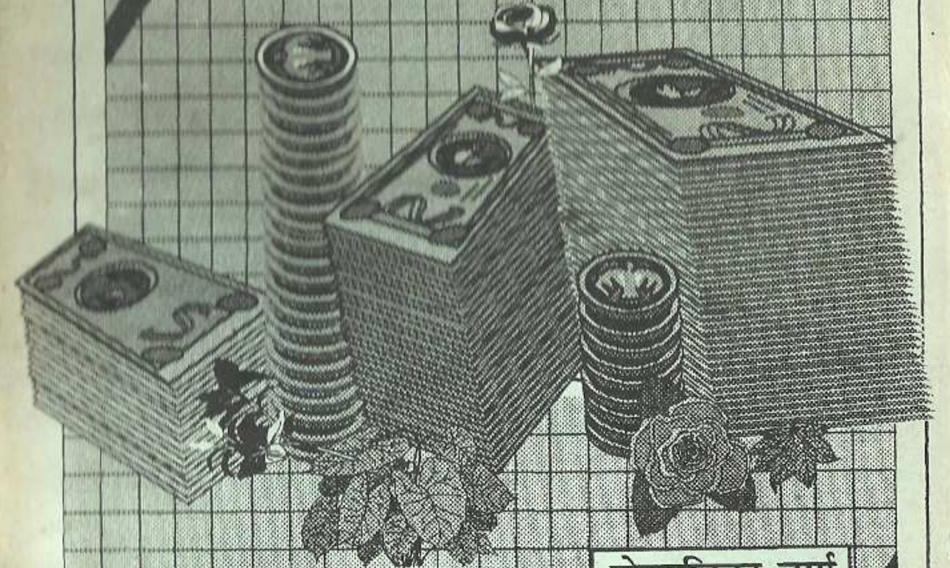
हिन्दी - ठहरे हुए पल (कविता संग्रह) ।

शीघ्र प्रकाशय - अनाम अनुभूति (कविता संग्रह), नागफास (उपन्यांस), रजनीगंधा (कविता संग्रह), आ बान्ह टुटि गेल (यात्रा वृत्तान्त), किस्त किस्त जीवन (आत्म कथा-हिन्दी मे), सो आइ होप (अंग्रेजी कविता संग्रह) ।

संप्रति सर्व० राम० महा० सहरसाक हिन्दी विभागाध्यक्ष ।

सेवा - हिन्दी विभाग, ए० एन० कॉलेज, पटना ।
साहित्य अकादमी दिल्लीक मैथिली केर सलाहकार समितिक पूर्व सदस्या ।
कोसी क्षेत्रीय महिला साहित्यकार संघक कार्य० अध्यक्ष ।

अर्थयुग



शेफालिका वर्मा

अर्थयुग

(कथा संग्रह)

डा० शेफालिका वर्मा

प्रकाशक
अरुषी अदिति संस्कृति प्रकाशन
पटना

अर्थयुग

(कथा संग्रह)

प्रकाशक
अरुषी अदिति संस्कृति प्रकाशन, पटना

शब्द संयोजन
मुन्ना

साज-सज्जा
गंगोत्री बिजनेस प्वाईंट,
सुमति प्लेस, बोरिंग रोड, पटना
☎ : 2524715

प्राप्ति स्थान

1. संजीव कु० वर्मा
एडवोकेट, पटना हाई कोर्ट,
103 & 105 A (राजललन होम्स)
अभिषेक एपार्टमेंट, मौर्या पथ,
बेली रोड, पटना-14
☎ : 2290869

2. विद्याकान्त अमर दास
गंगोत्री बिजनेस प्वाईंट,
सुमति प्लेस, बोरिंग रोड, पटना
☎ : 2524715

प्रथम संस्करण - 2003

मूल्य - अजिल्द - रु० 51/-
सजिल्द - रु० 70/-



ललन कुमार वर्मा

(वरीय अधिवक्ता, पटना उच्च न्यायालय)

समर्पण

हिनका

जे जिनगी भरि गीता रामायण जकाँ हमरा सहेजि

राखलैथ-आइयो साँस बनि हमरा एहि भवसागर पार करबाक

शक्ति आ साहस दय रहल छथि-

तन मे मन मे नयन मे ताको कोना समर्पण

तँ

स्वयं सँ स्वयं कें

राजललन

अनुक्रमणिका

पृष्ठ संख्या



आभार

कोन कोन बाट-बीथि सँ भटकैत, क्षत-विक्षत लहुलुआन होइत आइ इ 'अर्थयुग' सुधी आ सह संवेद्य पाठकक मध्य आबि सकल - इ एकटा नम्हर व्यथा-यात्रा थीक ।

एहि बीच जीवन सागर मे कतेक ज्वार आयल कतेक प्रबल प्रभंजनक वेग आ देखतहि देखतहि जीवन रंगीन टीवी सँ ब्लैक एन्ड व्हाइट बनि गेल। कतेक उत्साहित छलाह वर्मा जी 'अर्थयुग' के प्रकाशन लेल, मुदा, सभ कुछ तँ क्षण मे तिरोहित भ' गेल । हम सभ पति पत्नी नय प्रेमी प्रेमिका छलौं । ओ हमर पथ प्रदर्शक, हमर इष्ट देव छलाह, यथार्थक धरती पर डेग डेग पर हमर रक्षा करैत ! आइ ओ प्रत्यक्षतः नय छथि किन्तु हुनके दिशा निर्देष, संकेत पर हम एहि पुस्तकक पाण्डुलिपि पुनः तैयार करवा मे सक्षम भेलों । एहि 'रजनीक' ओ 'शेफालिका' बनौलन्हि आ आइ हम अनुभूत करैत छी जे वर्माजी हमर साँस बनि हमर एहि नश्वर तन केँ सम्हारने छथि - हम तँ हुनका संगे चलि गेल छलौं - अचक्के हुनक महाप्रयाण- हमर मूर्च्छित मानस अन्धकारक घाटी मे सुप्त पड़ल छल - किन्तु एकटा, विशाल परिवारक विस्तृत फलक पर हम जीवैत छी । नैहर सँ सासुर धरि परिवार मे ज्येष्ठ हेवाक गौरव आ आदर हमरा भेटल छल । हमर अपन संतान सभ मिलि आदर, प्रेम, साहस, उत्साह के संचार हमर मोन मे करबाक प्रयास केलैथ । राजीव, भावना, वंदना, सुपर्णा, संजीव तरुणाक हृदयक प्रेम आदर सदिखन पिताक अभाव केँ पिताक अस्तित्व बना देलक तैं हम लिखने छलौं हिनक युगल जोड़ी लेल - भगवती 'जया केँ कृपा सँ, 'प्रकाश' सँ आलोकित, 'कौशलेन्द्रक' सहारे, 'मनोज'-मोन नेने 'शबनमक' बून्न पर नचैत जिनगी सतत 'विकास' दिसि अग्रसर भ' रहल अछि - प्रभो ! आब की चाही - किन्तु, नय जनैत छलौं एहि सभ सँ परिपूर्ण कय वर्मा जी स्वयं अदृश्य, अलभ्य भ' जेताह -

कोना बिसरब अपन अरुषी अदिति, सुप्रभा प्रसून, अंकिता, अनुपमा, संस्कृति केँ - अपन दादाजी-नानाजी केँ आइयो हृदय मे बसौने हमर अश्रुपुरीत नयन अपन नान्हि नान्हि हथेलीक स्नेहिल स्पर्श सँ दुलरावैत छथि । हमर तीनू भाई कृष्ण, शरद, असीम, चंद्रा, अन्नु समीताक संगे हमरा मे साहस आ उत्साहक संचार करैत रहलैथ - दीदी, अहां केकरो सामने कमजोर नय बनू.... इ तँ साँच अछि जाहि ठाम प्यार, अपनापन, आदर अछि हमर वर्माजीक निवास ओहि सभ ठाम अछि - तखन हम निराश किएक ?

हम हृदय सँ आभारी छी श्री योगेन्द्र नारायण मल्लिक आ हुनक पत्नी मायाजीक जे एहि दुर्गम जीवन यात्रा केँ सहज सरल बनएबा मे आलोक-लोक

बनि हमरा पुनः लेखनी उठेबाक प्रोत्साहन देलथि । हमरा मे आत्म विश्वासक दीया पुनः प्रज्वलित करबाक हेतु हम पं० गोविन्द झा, डॉ० देवकान्त झा, जटाशंकर दास, चन्द्रेश, भक्तीश्वर झा, रविकांत नीरज, नीरजा रेणु, डॉ० मनोरंजन झा आदिक हृदय सँ धन्यवाद दैत छी खस कय अपन सहृदय पाठक गण कें सेहो ।

इ सभ कथमपि संभव नय छल अनायास अनचोके हीरा जकाँ भेटल पुत्रवत विद्याकान्त दास जीक पूर्ण सहयोग हमरा नय भेटतैक तँ आय अर्थयुग भोतियाले रहि जैतेक । एहि पुस्तक कें साकार करबाक संपूर्ण श्रेय विद्याकान्त आ मुन्ना के छैन्ह - हम हुनका धन्यवाद दय हुनक महत्ता कें लघुतामे नय बान्हब।

अंत मे हम प्रो० आनंद मिश्र जी सँ भरल हृदयसँ आभार व्यक्त करैत छी। कतेक प्रेम आ आदर सँ मिश्रजी सँ मिलवा लेल हम आ वर्मा जी हुनक गंगा तीरक रानी घाट निवास मे गेल छलौं - कतेक ममत्व आ वात्सल्य सँ ओ अर्थयुग के अशीर्वाद देने छलाह । कालखंड कत' सँ कत' ससरि गेल - गंगा मगह छोड़ि जाय लगलीह किन्तु एकर उपयोग आय भ' सकल ।

प्रत्यक्ष अप्रत्यक्षतः भेटल अपन साहित्यकार-समाजक सहयोग लेल हमर हार्दिक आभार - छोट पुत्र संजीव वर्मा, अधिवक्ता, पटना उच्च न्यायालय, पुत्र वधू शबनम एहि पुस्तक कें साकार करवामे हमर अशक्त तनमोन कें शक्त बनौलेन्ह तँ पुस्तक अपनेक समक्ष अछि ।

एहि संग्रहक प्रत्येक कथा विभिन्न भाव-भूमि, विभिन्न परिवेश आ विभिन्न काल खंड मे लिखल गेल अछि, एहि कारण भाषा मे विभिन्नता अछि। खास कय प्रवासी मैथिल आ हुनक संतति कें मैथिली बजैत देखलौं, अपन सुविधानुसार अपन सहज तरंग आ उन्माद सँ - किन्तु मैथिली बजैत छथि इएह हमर सभक विजय थीक -

- शेफालिका
28.03.2003

वर्तमान समाजक पर्दाफास करैत 'अर्थयुग'

अपन भावक अभिव्यक्ति सभ करए चाहैत अछि आओर करितहुँ अछि। सबहक अपन-अपन माध्यम होइत छैक आओर होइत छैक अपन-अपन अभिव्यक्ति करबाक शैली । ककरहु अपन विचार यदि कविताक माध्यमें व्यक्त करबाक सुबिधा छैक तँ दोसर कथाकें अपन माध्यम बनाएब उचित बुझैत अछि । केओ नाटकक माध्यमसँ अपना विचारकें बेशी बनएबाक चेष्टा करैत अछि तँ दोसर एहि हेतु उपन्यास विधाक शरणमे आइछ । एहिसँ साहित्यक विभिन्न विधाक भण्डार भरैत अछि लोकक विचार धारा सँ आओर ओहिसँ सतत् अनुप्राणित होइत रहैत छथि पाठकवर्ग ।

अपन परिवेशक संग देश-कोशक स्थिति तथा देश-विदेशमे घटित अनेक घटना लोककें किछु सोचबाक हेतु बाध्य करैत अछि आओर ओकर अभिव्यक्ति रचना मे होइत रहैत अछि, पाठक ओहिसँ प्रेरित एवं अनुरंजित होइत रहैत छथि ।

सभ व्यकितमे सभगुण समान नहि रहैत छैक, सबहक प्रतिभा एक रंग भेने तँ संसारमे प्रायः एकरसता आबि जएतैक, विचारक आदान-प्रदान बन्दे जकाँ भऽ जाएत। प्रकृति मनुष्यमे ई भिन्नता बनओने अछि तँ लोक अपन-अपन विचारक संघर्ष चलबैत रहैत अछि आओर क्रम आगाँ बढ़ैत जाइत छैक ।

श्रीमती शेफालिका वर्मा अपन चारूकात पसरल प्रकृतिक पर्यवेक्षण करैत छथि ओहिमे कार्यरत लोककें देखैत छथि तथा ओकर क्रिया-कलापसँ प्रभावित भए चिन्तनक मुद्रामे आबि जाइत छथि । समाजमे पसरल अनेक समस्या, जे मनुष्यकें साधारण पशुओसँ नीच बनाए देने अछि, लेखिकाकें लेखनी उठएबाक हेतु बाध्य करैत अछि ।

समाजमे सम्प्रति सभ क्षेत्रमे मूल्यक जे ह्रास देखबामे आबि रहल अछि से चिन्ताक विषय बनि गेल अछि, सहृदय लेखक-लेखिका ओकरा सँ अपनाकें पृथक राखत तँ कोना ? समाजमे लोककें पाईक आगाँ आओर वस्तु सुझितहिँ नहि छैक । सभ एकटा बनाबटी 'मुखड़ा' पहिरने 'भीतर सँ किछु बाहरसँ किछु' बनल समाजमे अपन अस्तित्व बनओने अछि । जीवन केहन दूरूह भऽ गेल अछि जे माए-बाप अपन संतानकें वात्सल्यो नहि दऽ पबैछ । मात्र अपन स्वार्थपूर्तिक हेतु आई अपस्याँत अछि मानव । मानवक इएह दिशाहीनता कचोटक विषय बनि अभिव्यक्ति पओलक अछि 'दिशाहीन' मे ।

समाजक सभ व्यक्ति एकटा घुटनसँ जिनगी काटि रहल अछि । पति यदि कैंचा कमएबामे व्यस्त छथि तँ ततबा व्यस्त छथि जे अपन पत्निओक उपेक्षा कऽ दैत छथि । ओ बेचारी घरक एहन वातावरणसँ मुक्ति पएबाक हेतु 'क्लब'क शरण लैत छथि किन्तु की एहिसँ पति-पत्नीक चिन्ता समाप्त होइछ ? देखू 'मुक्ति' कथा ।

सम्प्रति समाजमे वैवाहिक समस्या दहेजक कारणें जटिलतम भऽ गेल अछि तकर प्रतिक्रिया केहन भऽ रहल अछि, फल समाज पर केहन पड़ि रहल छैक, लोक की सोचि रहल अछि तकर चित्रण भेल अछि 'परिताप' मे ।

आजुक साहित्यमे मनोवैज्ञानिक विश्लेषणकें महत्वपूर्ण स्थान भेटल छैक। मनोवैज्ञानिक चित्रण करबामे लेखिकाक गम्भीर चिन्तन, मोन मे चलैत घात-प्रतिघात

बनि हमरा पुनः लेखनी उठेबाक प्रोत्साहन देलथि । हमरा मे आत्म विश्वासक दीया पुनः प्रज्वलित करबाक हेतु हम पं० गोविन्द झा, डॉ० देवकान्त झा, जटाशंकर दास, चन्द्रेश, भक्तीश्वर झा, रविकांत नीरज, नीरजा रेणु, डॉ० मनोरंजन झा आदिक हृदय सँ धन्यवाद दैत छी खस कय अपन सहृदय पाठक गण कें सेहो ।

इ सभ कथमपि संभव नय छल अनायास अनचोके हीरा जकाँ भेटल पुत्रवत विद्याकान्त दास जीक पूर्ण सहयोग हमरा नय भेटतैक तँ आय अर्थयुग भोतियाले रहि जैतेक । एहि पुस्तक कें साकार करबाक संपूर्ण श्रेय विद्याकान्त आ मुन्ना के छैन्ह - हम हुनका धन्यवाद दय हुनक महत्ता कें लघुतामे नय बान्हब।

अंत मे हम प्रो० आनंद मिश्र जी सँ भरल हृदयसँ आभार व्यक्त करैत छी। कतेक प्रेम आ आदर सँ मिश्रजी सँ मिलवा लेल हम आ वर्मा जी हुनक गंगा तीरक रानी घाट निवास मे गेल छलौं - कतेक ममत्व आ वात्सल्य सँ ओ अर्थयुग के अशीर्वाद देने छलाह । कालखंड कत' सँ कत' ससरि गेल - गंगा मगह छोड़ि जाय लगलीह किन्तु एकर उपयोग आय भ' सकल ।

प्रत्यक्ष अप्रत्यक्षतः भेटल अपन साहित्यकार-समाजक सहयोग लेल हमर हार्दिक आभार - छोट पुत्र संजीव वर्मा, अधिवक्ता, पटना उच्च न्यायालय, पुत्र वधू शबनम एहि पुस्तक कें साकार करवामे हमर अशक्त तनमोन कें शक्त बनौलेन्ह तैं पुस्तक अपनेक समक्ष अछि ।

एहि संग्रहक प्रत्येक कथा विभिन्न भाव-भूमि, विभिन्न परिवेश आ विभिन्न काल खंड मे लिखल गेल अछि, एहि कारण भाषा मे विभिन्नता अछि। खास कय प्रवासी मैथिल आ हुनक संतति कें मैथिली बजैत देखलौं, अपन सुविधानुसार अपन सहज तरंग आ उन्माद सँ - किन्तु मैथिली बजैत छथि इएह हमर सभक विजय थीक -

- शेफालिका
28.03.2003

वर्तमान समाजक पर्दाफास करैत 'अर्थयुग'

अपन भावक अभिव्यक्ति सभ करए चाहैत अछि आओर करितहुँ अछि। सबहक अपन-अपन माध्यम होइत छैक आओर होइत छैक अपन-अपन अभिव्यक्ति करबाक शैली । ककरहु अपन विचार यदि कविताक माध्यमें व्यक्त करबाक सुबिधा छैक तँ दोसर कथाकें अपन माध्यम बनाएब उचित बुझैत अछि । केओ नाटकक माध्यमसँ अपना विचारकें बेशी बनएबाक चेष्टा करैत अछि तँ दोसर एहि हेतु उपन्यास विधाक शरणमे आइछ । एहिसँ साहित्यक विभिन्न विधाक भण्डार भरैत अछि लोकक विचार धारा सँ आओर ओहिसँ सतत् अनुप्राणित होइत रहैत छथि पाठकवर्ग ।

अपन परिवेशक संग देश-कोशक स्थिति तथा देश-विदेशमे घटित अनेक घटना लोककें किछु सोचबाक हेतु बाध्य करैत अछि आओर ओकर अभिव्यक्ति रचना मे होइत रहैत अछि, पाठक ओहिसँ प्रेरित एवं अनुरंजित होइत रहैत छथि ।

सभ व्यकितमे सभगुण समान नहि रहैत छैक, सबहक प्रतिभा एक रंग भेने तँ संसारमे प्रायः एकरसता आबि जएतैक, विचारक आदान-प्रदान बन्दे जकाँ भऽ जाएत। प्रकृति मनुष्यमे ई भिन्नता बनओने अछि तँ लोक अपन-अपन विचारक संघर्ष चलबैत रहैत अछि आओर क्रम आगाँ बढ़ैत जाइत छैक ।

श्रीमती शेफालिका वर्मा अपन चारूकात पसरल प्रकृतिक पर्यवेक्षण करैत छथि ओहिमे कार्यरत लोककें देखैत छथि तथा ओकर क्रिया-कलापसँ प्रभावित भए चिन्तनक मुद्रामे आबि जाइत छथि । समाजमे पसरल अनेक समस्या, जे मनुष्यकें साधारण पशुओसँ नीच बनाए देने अछि, लेखिकाकें लेखनी उठएबाक हेतु बाध्य करैत अछि ।

समाजमे सम्प्रति सभ क्षेत्रमे मूल्यक जे ह्रास देखबामे आबि रहल अछि से चिन्ताक विषय बनि गेल अछि, सहृदय लेखक-लेखिका ओकरा सँ अपनाकें पृथक राखत तँ कोना ? समाजमे लोककें पाईक आगाँ आओर वस्तु सुझितहिँ नहि छैक । सभ एकटा बनाबटी 'मुखड़ा' पहिरने 'भीतर सँ किछु बाहरसँ किछु' बनल समाजमे अपन अस्तित्व बनओने अछि । जीवन केहन दूरूह भऽ गेल अछि जे माए-बाप अपन संतानकें वात्सल्यो नहि दऽ पबैछ । मात्र अपन स्वार्थपूर्तिक हेतु आई अपस्याँत अछि मानव । मानवक इएह दिशाहीनता कचोटक विषय बनि अभिव्यक्ति पओलक अछि 'दिशाहीन' मे ।

समाजक सभ व्यक्ति एकटा घुटनसँ जिनगी काटि रहल अछि । पति यदि कँचा कमएबामे व्यस्त छथि तँ ततबा व्यस्त छथि जे अपन पत्निओक उपेक्षा कऽ दैत छथि । ओ बेचारी घरक एहन वातावरणसँ मुक्ति पएबाक हेतु 'क्लब'क शरण लैत छथि किन्तु की एहिसँ पति-पत्नीक चिन्ता समाप्त होइछ ? देखू 'मुक्ति' कथा ।

सम्प्रति समाजमे वैवाहिक समस्या दहेजक कारणें जटिलतम भऽ गेल अछि तकर प्रतिक्रिया केहन भऽ रहल अछि, फल समाज पर केहन पड़ि रहल छैक, लोक की सोचि रहल अछि तकर चित्रण भेल अछि 'परिताप' मे ।

आजुक साहित्यमे मनोवैज्ञानिक विश्लेषणकें महत्वपूर्ण स्थान भेटल छैक। मनोवैज्ञानिक चित्रण करबामे लेखिकाक गम्भीर चिन्तन, मोन मे चलैत घात-प्रतिघात

आदिक हेतु 'लांछित के?' 'कर्त्तव्यबोध' आदि कथा द्रष्टव्य ।

'चिता पर विहुँसैत फूल' मे एकटा बाल-विधवाक आत्म-विश्वास एवं दृढ़ता कोनो सहृदय पाठकक मोनकेँ झकझोड़ि देतैन्हि ।

श्रीमती शेफालिका वर्मा मूलतः कवियत्री छथि सेहो कनेक बेशी चिन्तनशील। किन्तु जे विषय ओ कवितामे फरिछाएकेँ नहि कहि सकैत छथि तकरा अभिव्यक्ति देबाक हेतु ओ कथा-विधाक शरण लैत छथि । तेँ हुनक कथामे कविता एवं निबन्ध दूनू शैलीक समावेश भऽ गेल अछि । हिनक अधिकांश कथा ललित-निबन्धक बेशी निकट अछि । औचित्यक रक्षा ई सर्वत्र कएल अछि आओर तेँ आदर्शवादिताक आश्रय ई सभठाम लेल अछि।

श्रीमती शेफालिका जी एकटा आदर्श समाजक कल्पना करैत छथि । विचारात्मक कथा, मनोवैज्ञानिक चित्रण तथा एक आदर्शक स्थापना प्रायः प्रत्येक पाठककेँ किछु सोचबाक हेतु विवश करतैक ई हमरा आशा अछि। एहन रचनासँ किछु गोटे अवश्य प्रेरणा ग्रहण करताह ।

विचारात्मक कथा, मनोवैज्ञानिक चित्रण तथा एक आदर्शक स्थापना प्रायः प्रत्येक पाठककेँ किछु सोचबाक हेतु विवश करतैक ई हमरा आशा अछि । एहन रचना सँ बहुत गोटे अवश्य प्रेरणा ग्रहण करताह । श्रीमती शेफालिका जी एकटा आदर्श समाजक कल्पना करैत छथि । हुनक प्रायः मान्यता अछि जे समाजके एखन समस्या सभ जर्जरित कऽ देने अछि जकरा ठीक करबाक हेतु सभकेँ अपन चिन्तन-धारा, क्रिया-कलाप मे परिवर्तन आनब आवश्यक । प्रायः सभ कथा मे अर्थक चित्र-विचित्रक संगहि नारीक आत्मसम्मानक इजोत पसरल अछि ।

भाषाक प्रसंग श्रीमती शेफालिका जी किछु बेशी उदार छथि अथवा ई कही जे ओकरा पर बेशी साकांक्ष नहि रहए चाहैत छथि कारण ओहिसँ भावक तीव्रता मे प्रायः कमी ने आबि जाइन्हि । हिनक भाषामे भाषान्तरक शब्द-भंडारक अभाव नहि । ठाम-ठाम किछु बेशी मात्रा ओकरा हिन्दी आइन बनेबामे सक्षम सेहो । प्रायः श्रीमती शेफालिका जी राजशेखरक 'उत्तिबिसेसो कव्वो भासा जा होइ सा होउ'क सिद्धान्तक अनुशरण करैत छथि। भावप्रवणताक कारणेँ भाषाकेँ यथावत् ई रखने छथि ।

हिनक कथासंग्रह 'अर्थयुग' वर्त्तमान समाजक पर्दाफाश करैत, समाजकेँ एक नव संकेत एवं सन्देश दैत अछि । समाज मे मूल्य-स्थापना दिसि ध्यानकेँ आकृष्ट करैत अछि तथा एक आदर्शोन्मुख प्रवृत्तिक पोषण करैत अछि ।

संग्रहक प्रसार-प्रचारक कामना करैत ।

- आनन्द मिश्र

युगधर्म

ई कोन टीशन थीक बाबू - वृद्ध व्यक्तिक प्रश्नक उत्तर मे खगड़िया नाम सुनतहि रोमा सतर्क भ' गेलीह।

दिसम्बर मासक सर्द राति मे कैपिटल एक्सप्रेस चारि बजे भोरे खगड़िया स्टेशन पर ठाढ़ छल । रोमाक मोन छह पाँच होम' लागल - एहि ठाम उतरि जाय वा नै ? पता नै जानकी चलि गेल की ? आ कि मानसी चलि जाय-डिब्बा महक सभ व्यक्ति फोंफ काटि रहल छल - कदाचित कटिहारक सवारी होथि?

चाह-गरम-गरम चाह-ओतेक धड़फड़ीक मध्यो रोमाक मोन मे तरंग उठि गेल-गरम चाह लोक किएक बजैत अछि-चाहक अर्थे भेल, गरम, ठंडा भ' गेल तँ शरबत ! आ जहिना ओ स्वर लग आयल रोमा पूछि बैसलीह-जानकी गेल की?

नै, आबि रहल अछि-सुनितहि रोमा आनन फानन मे गाड़ी सँ उतरि जानकीक प्लैटफार्म दिसि विदा भ' गेलीह। कैपिटल खुजि गेल जेना ओ रोमाक उतरबाक प्रतीक्षाक' रहल छल ।

दाँत सँ दाँत बजैत अहि सर्द रात्रिक अन्धकार मे छतविहीन प्लेटफार्म पर जानकीक पैसेंजरक कमी नै छल। कमी छल तँ कोनो संगी केर । रोमा दूनू हाथ शाल मे नुकौने, कान्ह सँ एयर बैग लटकौने प्रतीक्षारत छलीह ।

कुहेस सँ भरल औँघायल राति मे जीरो पावरक बल्ब सन इजोत पसरल छल । गाड़ी अयबा मे किछु विलंब छल । गरम चाहक चुस्की सँ सवारी सभ स्वयं केँ गरमा रहल छल । सभ सहरसा, सुपौल, मधेपुराक यात्री । एतेक भीड़ मे रोमा असगर छलीह । चाह पीबा लेल मोन छटपट करैत छल, मुदा असगरे चाह पीबितौ कोनादन लगैत छैक।

'चाची, कत्त, सँ आबि रहल छी ?' - पएर स्पर्श करैत केओ बाजल ।

'ओह सुदेश ? रोमा के जेना चैन भेटल' - तो कत सँ ?

'हम तँ पटना सँ आबि रहल छी'

'पटना सँ ? पटना सँ तँ हमहुँ आबि रहल छी ।'

'अच्छा अहाँ केपिटल सँ आयल होयब । हम तँ बस सँ आयल छी।'

'बस सँ ? तँ भेंट नइ भेल की ? पटना मे बुझल रहितै तँ संगे अबितहुँ।'

'हमरा बुझल कहाँ छल चाची जे तों पटना मे छहक । कहिया एलहक पटना चाची ?'

'बाउ, हम तँ विद्यापति पर्व मे आयल छलौं । काल्हि समाप्त भेल आ हम सरपट सहरसा भागि रहल छी।'

'चाह पीअब चाची, सुदेश रोमाक बेटाक संगी छल, मुदा बेटा जकाँ

रोमाक मोन के पढ़ि लेलक ।'

'पीबाक इच्छा तँ अछि, मुदा गाड़ी आबि जायत तखन ?'

'गाड़ी ? एखन तँ लाइनो क्लीअर नइ भेल छैक ।'

आ माटिक चुक्कड़ मे गरम-गरम चाह, ओकर भाप रोमा के नीक लागि रहल छलैक । मोन होइत छल जे केओ एक डेगची गरम चाह आगू मे राखि दैक जकर भाफ सँ घूर जकाँ रोमा अपना के गरम कय लैक । कतेक प्रेम सँ पटना सँ खगड़िया धरि अयलौं । रोमाक मोन चाहक भाप मे गलि रहल छलैक, मुदा एहिठाम सँ सहरसा पहाड़ भ'- गेल । कोना सहरसा पहुँचब, अथाह सागर बुझाइत अछि । बेटा दिल्ली सँ अबैत अछि तँ सहरसा पहुँचैत बाजत माँ दिल्ली सँ खगड़िया नीकजकाँ आबि जाइत छी मुदा एहिठाम सँ सहरसाक दूरी अमेरिका इंगलैंड लगैत अछि-अमेरिको इंगलैंड-आठ दस घंटा मे आराम सँ पहुँचि जाइत अछि बेटा-मुदा - आइ रोमाँके वएह अनुभव भ' रहल छैक - कोनो पार्टीक सरकार बनैक सभ सँ बेसी मंत्री सहरसे कमिश्नरीक रहैत अछि तखन एकर ई दुर्गज्जन?

'सुदेश, जानकी में जगह भेटि जायत ने ? सुनैत छी, लोक डिब्बा बाटने रहै छैक ।'

जगह कोना ने भेटत चाची ? आइ धरि केओ स्टेशन पर छूटल अछि-रोमाक मन मे साहस भेल । मानसी मे उतरलौ तँ सात बजेक पैसेंजर सँ नीक जकाँ सहरसा पहुँचि जैतौं । जानकीक नाम सुनि खगड़िया मे उतरि गेलौं। कैपिटल चलि गेल, जानकी मे जगह नइ भेटल तँ की करब ? - एहि आंशके सँ रोमाक मोन दुखी भ' जाइत छल। अपने रहितथि तँ हमरा कोन सोच छल मुदा ओ तँ सहरसा मे बाल बच्चा संग हमर प्रतीक्षा क' रहल छथि आ हम ? यात्रीगण मे एकटा हलचल मचि गेल-चाची, जानकी आबि रहल अछि ।

भीतरे भीतर रोमाक देह-हाथ थरथरा रहल छल-हे भगवान, जगह त' भेटि जाय-स्टेशन पर बड़ भीड़ भऽ गेल। कैपिटल आ बसक यात्रीगण भादवक मेघ जकाँ एके ठाम घनघोर भ' गेल । फोंफिआइत, हहराइत जानकी एक्सप्रेस स्टेशन पर आबि गेल । सौंसे ट्रेन पहिने सँ कुचल काचल। लगनक समय, पौदान सँ डिब्बा धरि लोक लटकल । सामने एकटा स्लीपर कोच लागि गेल । रोमा ओही मे चढ़वाक उपक्रम कर- लगलीह - हाँ, हाँ, ई रिजर्व डिब्बा थीक, बरिआती जा रहल छैक ।

सुदेश जगह लेबा लेल आगू बढ़ि गेल छल । घुप्प अन्हार मे इजोतक एकटा रेख कें पकड़ने रोमा भोतिआ रहल छलीह । आ फेर ओहि बराती कें दीन स्वर मे कह' गलैक - 'हमरा कत्तै कात मे जगह द' दिय।'

'ई रिजर्व अछि, एहि मे अहाँ कोनो जायब', ताहि मे बरिआती सभक संग-एकटा केओ शुभचिन्तक बराती बाजल आ रोमा कें जेना होश अयलै-ठीके

तँ बजैत अछि । बरिआतीक उच्छृंखलता, उन्मुक्तता एवं उन्मादक मध्य हम असगर-छी, ई आग्रहक दुस्साहसो हम कोना केलौं ? रोमा आगू दौड़ गेलीह-फर्स्ट क्लासक डिब्बा मे यात्रीगण जबरदस्ती चढ़ि रहल छल आ कंडक्टर सभकें डाँटि फटकारि रहल छल-यह फर्स्टक्लास है-ओहि धक्कमधुक्का मे रोमाक साहस जवाब द' देलक । डिब्बा मे सुइया रखबाक स्थन नहि छल । एकबारगी रोमा के अन्हार लाग' लगलैक जे आब गाड़ी छुटि गेल, सुदेशोक पता नइ छल, आब हम की करब? जेना मृत्युकाल मे मानव अंतिम साँस धरि हाथ पएर पटकि बचबाक प्रयास करैत छैक तहिना रोमा साहस क' ओहि रेलमपेला मे फर्स्ट क्लास कम्पार्टमेंट मे घुसि गेलीह । गाड़ी खुलि गेल, कंडक्टर बाजि रहल छल-ई कोन तरीका थीक, नियम कानून सभ टुटि गेल, केकरो नइ चढ़' देब । मुदा उद्धत आ हताश यात्रीगण की स्त्री की पुरुष गैरकानूनी काज कय कानूनदा टी० टी० के उत्तरहीन क' देलक ।

रोमा चुपचाप स्थिर भाव सँ टी० टी० सँ बजलीह- हमर टिकट एहिठाम सँ फर्स्ट क्लासक बना दिय' । टी० टी० रोमा कें चुपचाप कूपा मे नीक सँ बैसा देलक । गाड़ीक गति तीव्र भ' गेल छल । ओहि डिब्बा मे अनाजक बोरा जकाँ आदमी जाकल छल- ई टीटीया करैत छल कोना, लोकक जान जाइत छल आ ओकरा कानून सुझैत छल- कोनो पुरूषक स्वर उठल ।

एह, बड कानूनक भय छल तँ दोसर गाड़ीक प्रबंध किएक ने क' देलक। एकटा जनाना स्वर तीव्र भेल।

देखू, अहाँ सभ चुप रहू । कथी लेल गर्दमघोल करैत छी? गाड़ी पर त चढ़ि गेलौं कि ने? आब सभ गोटे बीस बीस टाका निकालि टी०टी० कें द' दिऔक । ओकरो आराम अपनो सभ के आराम । नहि रौ बा, बीस टाका? तखन टिकेत नइ कटा लितहुँ? विद्यार्थी सभ पाँच टाका देतैक- कतेको युवा तुर्क एहि कोन सँ ओहि कोन धरि अपन अपन स्वर मुखरित क' रहल छल- हँ, हँ विद्यार्थी सभ पाँच टाका- सभ अपन राग अलाप' लागल- की हेतैक जे जेहेन लोक से तेहेन टाका देतैक । पाँच, दस, पन्द्रह कैयो क' सभ देत तँ टीटी खूब कमा लेत । हँ रे हँ, मोने मन तँ सोचैत होयत टीटीया जे एहेन एहेन दिन रोज आबैक । गंगा तँ कहियो नहवैत अछि लोक? कारी वरदी सँ लैस, कैप लगौने ताहि पर चमकैत, लिखल पढ़ल स्लैब सभ ओ रोबीला आ सुर्दशन व्यक्तित्ववाला फर्स्ट क्लासक कंडक्टर कत' छल से रोमा नइ जनैत छलीह । ओकर मोन रहि रहि धड़कैत छल जे आइ ट्रेन छुटि जेतियैक तँ की हेइतैक? खगडियाक अन्हार राति....

माछक हटिया जकाँ डिब्बा मे सवाल जबाब भ' रहल छल । विषय एकेटा छल जे आइ टी टी खूब कमा लेत । ओकरा खूब सुतरत । तीन चारि सय सँ उपर टाका ओकरा भ' जायत । यात्रीगण सहर्ष टाका देबा लेल तैयार छल।

गाडीक हिचकोला सँ कनिक काल लेल रोमाक आँखिलागि गेल । एकटा झटका सँ गाड़ी अटकल तँ रोमा अकचका उठलीह । उषाकालीन वायु समस्त डिब्बा मे पसरल छल आ जेना रोमाक कान मे गुनगुनाय रहल छल-उठू, आब अहाँ आबि गेलौं अपन देस कोसमे ।

कोन स्टेशन थीक?

बंगल मे बैसल एकटा स्वतंत्रता सेनानी बजलाह-सिमरी बख्तियारपुर।

रोमा कें चैन भेटल ।

अयँ यौ, ई टीटीया कत' चलि गेल?

-कोनो जनाना स्वर व्यंग्य सँ बाजल । रोमा बुझि गेलीह टीटी प्रसंग एखन धरि चलि रहल छल । पता नई किएक रोमा के कोनो महिलाक टहंकार अंहकार सँ उठल व्यंग्य मिश्रित टोन नीक नइ लगैत छल । स्त्री तँ लक्ष्मी सरस्वती थिकीह, संगीतक रसधार ।

- की जानि केकर मुँह देखि उठल छल-तीन चारि सय टाका मंगनी मे छोड़ि देलक ।

बाप रे, एहेन आदमी आजुक युग मे नइ देखलौ - जेना विषधर पर पएर पड़ला सँ मनुख चिचिआइत छल-नै, ओकर आजुक दिन बड़ खराब छल । कतेक कमा नेने रहितै । बड़ बेकूफ छल ओ टीटी । लोक टाका निकालने रहि गेल आ ओ ... एकरे कहैत छैक बुड़िबक-एहने लोक सभी धरतीक भार होइत छथि । की महिला की पुरुष सभक एके स्वर छल ।

आ रोमाक ह्रदय मे दाह उठल-की जमाना आगि गेल छैक । पहिने सभ ईमानदार होइत छल । आ एकटा दू दूटा घुसखोर । सभ बजैत छल - साला बड़ घुसखोर अछि आई जखन सभ बेइमान भ' गेल तँ एकटा ईमानदार देखि लोक बजैत अछि - साला बेकूफ छैक । अकिल रहितैक तँ इएह हाल होइतैक ?

की भेल जाइत छैक युग कें ? सुनैत छलौं गंगाजल मे कीड़ा नइ फड़ैत छैक-की आब इहो फुसि भ' गेल? की इएह युगधर्म थीक ? इनारे से भांग घोरि देने छैक तें तँ मानव एना बौराय रहल अछि । पता नहि माटि पानि के की भ' गेलैक ? समस्त वातावरण मे रबड़ जरैक चिराइन गंध पसरल अछि । कतहु किछु प्रेममय नइ, विवेकमय नइ । विवेकहीन मानव की करत देशक लेल, राष्ट्रक लेल ? मुदा, नइ, कायाकल्प होयत, अवश्य होयत। जखन समस्त सृष्टि जलमग्न भ' जायत आ एकटा मनु एवं श्रद्धा बाँचि नव सृष्टिक सर्जना करत । ई हिंसा, ई बाढ़ि, रौदि दाही, रेल दुर्घटना हवाई जहाज दुर्घटना, आतंक सन्निपात - सभ पृथ्वीक जलमग्न हैवाक पूर्व पीठिका नहि थीक? - सौचैत सोचैत रोमा अपन माथ पकड़ि लेलीह - सहरसा स्टेशन आबि रहल छल । रोमा अचक्के जोर जोर सँ बाज' लगलीह-अहाँ सभ ओहि टीटी के एतेक बेकूफ बुझि रहल छी, मुदा सोचू तँ ओ आइ आम आदमी सँ कतेक उपर उठि गेल जे

पेटैत पाइ के लात मारि देलक । पाइ तँ सभ कमाइत अछि, मुदा प्रतिष्ठा कतेक थोड़े अर्जित करैत छथि ?

आ सभक बोलती बंद भ' गेल । ओ टीटी कोनो दोग सँ निकलि डिब्बाक गेट पर ठाढ़ भ' गेल छल । कूपाक कोन कोना मे, रात्रिक अन्धकार मे चुपचाप बइसल एतेक वाग्धारा के ओ बर्दाश्त केने होयत ई अनुमानो असंभव छल । टीटीक चेहरा आन्तरिक उर्जा सँ दीप्त छल । सभक चेहरा पर अपन व्यंग्यमय मुस्की दैत सभकैं आवरणहीन करेत स्टेशन पर उतरि गेल ।

बढ़ि बढ़ि के बाज' वाला सभ व्यक्ति जेना अनेरे छोट भ' गेल ।

◆◆◆

दिशाहीन

'हे रे, सुनैत छें - अपना सभकेँ एकटा ऑफर भेटल छौक -''कथीक? कथीक?''

दीनू, रामू, सजल, सुमन चारू उत्सुक भऽ उठल-

बिन्नू नव अंकुरित तृण नोक सन मोंछपर ताव दैत बाजल - सुनबीही तँ खुश भऽ जेवही - दुइ बोतल दारू-गाँजा आ मीट भेटतहु... दारू-गाँजा, मीट? कतऽ रे कतऽ ? रे ककर पैसा मारलीही... दसमा-एगारहमा मे पढ़ऽ वाला स्कूली छौड़ा सभक जमघट चौकपर छल... सभक आँखि मे भोलापन, चेहरा... निष्पाप चान सन मुदा कलंकित.

केओ प्रोफेसरक बेटा, केओ वकील साहेबक, केओ बिजनेसमैनक आ केओ मैजिस्ट्रैट साहबक... पंद्रह सँ अठारक आयुक सीमा रेखा... मे भटकैत...

ककरो माय नौकरी करैत छलि, ककरो माय समाज-सेविका, ककरो माय गृहस्थीक जाँतमे पीसल मूढ़ अज्ञानी देहातक स्त्री... पैसा... पैसाक पाछा दुनिया भागि रहल अछि । मानव मूल्य कत्तौ नहि रहल । प्रेम, ममता वात्सल्य ई सभ एतेक सस्ता भऽ गेल जे पैसापर बिका रहल अछि। मानव अपन प्रकृतिसँ वंचित भऽ कतेक दिन टिकत दानव बनि । बेईमानी जिनगीमे मानवता बनि गेल आ ईमानदारी मूर्खताक आवरणमे नुका गेल । ईमानदार व्यक्ति केँ उपेक्षाक नजरिसँ समाज देखैत अछि... आह... बेचारी सती साध्वी नारी सीता सन कलंकित भऽ अग्नि परीक्षा दैत जिनगी जीवैत अछि आ पाश्चात्य सभ्यता सँ रंगल-पोतल सफेदीक ओटमे स्याहीक सर्जना करैत अछि। ई अछि अपन देश, जे त्याग, तपस्या प्रेम लज्जासँ गौरवान्वित छल । आइ नग्न निर्वासित चौराहा पर देशक अतीत दण्डित अछि.... पयरसँ रौदैत यांत्रिक मानव बेतहाशा दौड़ि रहल अछि ।

आ पैसाक पिआस रहल तँ अपन बहीन बेटी पत्नी सभसँ नौकरी करा रहल अछि... आ ताहूसँ मानवक दानवी भूख नहि मेटल तँ दहेजक नाम पर बेटा केँ बेचब शुरू कँ देलक... बाप बेटाकेँ बेचि रहल अछि । पैसा पैसा... हाय पैसा... आ सेवाक मोन व्यथित छल... सजल ओकर भाय कखनो घरमे पढ़ैत नहि अछि ।...

माय तों एको बेर किएक नहि ध्यान दैत छहीक । मजिस्ट्रेटक बेटा कतौ गली-गली घुमय.... गैसक चुल्हर पर अरबा चाउरक सोहारी बनबैत माय बजलीह अपन पापा के कही । तों जनैत छें हमरा गुदानैत अछि.... ओ सोहाड़ियो पकबैत छलीह आ पड़ोसिन सँ गप्प करैत.... अहाँक नूआ बड़ नीक अछि । हमहूँ एकटा एहने कीनब. घर गृहस्थी मे फँसल देहातक स्त्री सजलक माय सेवाक

बातकेँ अनठा देलक... ओ बेचारी पढ़नाइ, लिखनाइक महत्त्व एतबे बुझैत छलीह 'बेटा सभक पढ़ैत अछि तँ हमरो पढ़ैत अछि आ सेवा पढ़तीह नहि तँ आजुक जमाना मे बिवाह मे दिक्कत होयत । सेवाक मन उदास भऽ गेल .... पापाकेँ तँ फाइल आ टूर सँ फुरसति नहि, घर के देखत....?

माँ-माँ जल्दी खाय लेल दे । स्कूलक बेर भऽ गेल-दीनू अपन माय सँ लिपटि गेल... रे अभगलाहा देखैत नहि छै । कत्तौ सँ अबैत अछि आ खट्टसँ देह सँ लिपटि जाइत अछि । अपन सिल्कक साड़ी कँ तह दैत बजलीह तरला, जो भनसा घरमे नोकरवा छैक.... खाना लगाय देतौक... हमरा कॉलेजक बेर भेल जा रहल अछि ... आ बड़बड़ाइत तरला ओहिठाम सँ चलि गेलीह, ड्रेसिंग टेबुल मे अपन सौंदर्यक छवि निहारवा लेल । अप्रतिभ दीनू उदास आ खिन्न मोन सँ भनसा घर दिसि चलि गेल । खाना नीक छल मुदा ओहिमे ओकरा स्वाद नहि आबि रहल छलैक... बैसक मे हुलकी देलक । पिताजीक हाथ मे कड़-कड़ नमरी आ चेहरा पर व्यंग्य मिश्रित मुस्कान... कतेक बेर ओ चाहलक पापा सँ पूछी... महिना मे पापा एके वेर ने अहाँक तनखाह भेटैत अछि... रोज कड़-कड़. मुदा नौकरशाहीक मानसिकताक ओ दीनू शिशु-शावक की बुझि सकत ?

माँ, की खेबा लेल अछि.... सुमन बस्ता ठीक करैत बाजल... खाना तँ फ्रिज मे राखल अछि... रातुक खाना फ्रिजमे राखि देने छी.... किएक... अहाँ कतो जाइ छी की माँ.... आइ महिला समाजक मीटिंग अछि । आ अहाँक पापा तँ हरदम फाइले मे लागल रहैत छथि.... अपनो खाय लेब हुनको खुआय देबैनि. तखन स्कूल जायब... हमरा बेर भऽ रहल अछि... हम जाइत छी... हमरा तँ स्कूलक बेर भऽ रहल अछि.... पापाकेँ देर छनि.... मुदा सुमनक शब्दक दर्द विनिताक ह्रदय तँ दूर जे कर्ण-मूल धरि नहि पहुँचि सकल.... आ सुमन स्कूलमे देर सँ पहुँचवापर मास्टरजीक बेंतक दर्दक कल्पनामे अपन दर्द बिसरि गेल ।

रमुआ रे, की कऽ रहल छेँ रे । स्कूल नहि जेबाक छौक । नसपीटा कोनो काजक नइ... कनि बाजार सँ सब्जी आनि दहीक - रामूक माय सरला दहाड़ि उठलीह.... खन स्कूल जाय लेल डँटैत छैक.... खन सब्जी अनबा लेल.... कनन मुँह रमुआ बाजल.... अपन कोठरी के साफ कऽ रहल छी.... छौंड़ा जवाब कतेक दैत अछि । अपना बाप पर गेल अछि । भरि दिन व्यापार बिजनेस ठीका ठीकेदारी मे मस्त... किछु टोकु ने तँ घरमे सब सामान भरि देलौ, मौज करू.. ।

माँ, हमरा सभक परीक्षा आबि गेल.... पढ़बाक समय नहि.... पढ़िकऽ की करबीही ? बापक लाखक सम्पति असगर बेटा.... आ परीक्षा पास कयनाइ... एके बेर टाका लऽ के बाबूजी घुमि जेतौक सर्वोच्च स्थान तोरे भेटतौक.... रमुआक मोन खुश तखन सब पर हम रोब जमायब... मुदा तुरते ओकर मोन खसि पड़ल, मुदा सभतँ.... टाका वला अछि.... सबहक बाप तँ इएह करत.... अच्छा की हेतैक.... पढ़ैक जंजाल सँ तँ छुट्टी भेटल... की सोचैत छीही रे जो

दौड़िकैं चौक परसँ सब्जी कीनि आनि दे । आइ हम टी० वी० खरीदबा लेल जाइत छी... देर भऽ रहल अछि.... सभक घर मे टी० वी० आ.... ।

टी० वी० - रामू उछलि गेल वाह - वाह.... ।

मायक कठोर उक्ति परीक्षा पैरवी पैसा सभ बिसरि गेल रामू टी० वी० नाम सुनतहिँ ।

चारू गोटैक दादा छल बिन्नू, मातृ पितृ विहीन । सभक घर दुआरि माय बाप देखि ओकर अन्तर मे एकटा अतृप्त आकांक्षा दम तौड़ैत छल.... मुदा ओ नहि जनैत छल जे दीनू रामू सुमन सजल माय बाप रहितो कतेक अनाथ छल माय बापक प्रेम, ममता, वात्सल्यसँ कतेक दूर - कतेक दूर.... बिन्नू दादाक प्रेम स्नेह मे सभ अपन उदासी बिसरि बिन्नूक बात मानबा लेल तत्पर....

समाजमे भटकल दिशाहीन ई निश्छल शैशव सभ कोना जीबैत अछि जकरा लोग 'सड़क छाप' कहि देत अछि... ई सोचबाक फुरसति माय बापकैं कत'-

मुदा करबैक की हम सभ.... ई बोतल शराब कबाबक लेल....

देख, अपना सभकैं एकटा स्कूटरक आवश्यकता छौक । एकटा स्कूटर देखने छी । बाटमे घेरनाइ अछि। राति भरि शराब बाला चलाओत भरि दिन अपन सभ? इएह बात तय भेल अछि । मुदा, पकड़ा जायब तँ केओ बचबय वाला नहि...

इह... हम सभ बिन्नू दादाक चेला छी... कहियो नहि पकड़ायब...

तखन एडवांस भऽ जाय आ दारूक बोतल खुजल गाजाक सोंट लागल. ... बिन्नू दादा जिन्दाबाद.... जिन्दाबाद....

सजलक माय पड़ोसिन संग न्यू मार्केट मे साड़ी मोलबैत छलीह कि चौंकि उठलीह....

तलराकॉलेज मे लेक्चर द' रहल छलीह.... विद्यार्थी कैं सदिखन अनुशासन मे रहबाक चाही अनुशासन देश कैं महान बनबैत छैक । कोनो बालकक संस्कार सँ ओकर परिवारक संस्कार बुझल जाइत अछि । चैरीटी बीगिन्स एट होम घरे बालकक प्रथम पाठशाला अछि । माय बाप अपन बच्चाकैं कर्त्तव्य-प्रेम....

मैडम, अहांक टेलीफोन कतहु सँ आयल अछि... बीचे मे कालेजक पीउन आबि कहलक... तरलो प्रिंसिपलक चैम्बर दिसि दौड़लीह.... हलो-हलो आ समाद सुनतहि अचेत जकाँ होमऽ लगलीह...

विनीता महिला समाजक मीटींग मे भाषण दऽ रहल छलीह.... हमरा सभ कैं अपन घर कैं बनयबाक हेतु प्रयास करबाक चाही । हम यदि अपन घर के नहि बना सकब तँ समाज आ देश के कोना बनायब ? हमरा सभ पर बड़का दायित्व अछि जे एहि देशक कर्णधार कैं योग्य, उत्साही ।

बीचे मे विनीता जी कैं नोकर आबि किछु कानमे कहि देलक । विनीता

हतप्रभ-पाउडरक गहीर परत पर कारीखक रेख खिंचि अएल ।

सरला टी० वी० पर बैसि आराम सँ प्रोग्राम देखि रहल छलीह - रातुक आत बजैत छल-एखन धरि रामूक पता नहि छल । मुदा एहि सँ बेखबरि सरला टी० वी० मे मस्त, रामूक पिता सेहो आबि प्रोग्राम देखय लगलाह।

अचानक टी० वी० मे प्रोग्राम रुकि गेल आ एकटा सुन्दरी स्क्रीन पर आबि बाजऽ लगलीह....

हम सभ काज काजी महिला अपन घरकैं उपेक्षित कऽ देने छी ! घरक स्वामी कैं टाका कमयबाक पाछा अपन संतान पर ध्यान देवाक फुरसत नहि । जे स्त्री एहि देश मे महाराणा प्रताप, शिवाजी, स्वामी विवेकानंद, महात्मा गाँधी, डा० राजेन्द्र प्रसाद, जवाहर लाल नेहरू आदि पैघ पैघ महापुरुष कैं जन्म देने अछि से स्त्री आइ सड़क छाप हीरो के जन्म दऽ रहल अछि । रिश्वतक रुपया पशचात्य सभ्यता आ महिला जागृतिक ओट मे अपन परिवार कैं स्वयं महिला बर्बाद कऽ रहल अछि । एकर जीवित नमूना अछि दीनू, रामू, सजल, सुमन आ बिन्नू.

पाँचो फोटो टी० वी० पर देखाओल गेल । हाथ मे हथकड़ी, चेहरा पर भय आतंक.... निश्छलता....

एकटा स्कूटर चोराय गांजा दारू पीबैत एहि स्कूली बच्चा सभकैं पुलिस रंगल हाथ गिरफ्तार केने अछि..

◆◆◆

क्षणक आवेग

रोज रोज स्कूलक भाग दौड़, परिवारक आलि-जाल, समाजक हाल चाल-एहि सभक मध्य बिखरि जायत छलीह सोमा ? ऋषि-मुनिक केशराशि सन जीवन कोना ओझरा जायत अछि - ई भावुकमना सोमा नीक जकाँ अनुभूत करइंत छलीह । एहि भौतिकवादी युग मे एहेन कोमल हृदय वाली सोमाक कोन आवश्यकता छल-सदिखन सोमा सोचैत रहैत छलीह - क्रास जकाँ अपन जिनगीक बोझ ओ उठा रहल छलीह -

अकासक एक खंड खिड़की दिसि सँ आवि सोमाक बगल मे सोफा पर बैसि गेल-आसमानी रंग मे रंगल ओहि आकास दिसि अपलक तकैत सोमा बुदबुदाइत रहलीह-सपनाक आकास-अहाँ कथी लेल हमरा धरती सँ उठाय अपना दिसि खींचैत रहैत छी ? किएक वास्तविकता सँ हटांय कल्पना मे भटकाय दैत छी ? आ आकासक आंखि जेना सेहो मेघ सँ भरि गेल अश्रु मय कोमल कतँ अहाँ आवि गेलौ परदेसिनी रे.....

कएक बजे स्कूल जायब ? रीतेशक स्वर सुनतहि सोमा सोफा पर सँ आकास के उठाय देलक आ वास्तविकता दिसि ताकय लागल - दस बजे -

हँ तखन तँ समय अछि-कनि माँ के डाक्टर सँ देखाय दियौक ने-

हम असगरे जायब-सोमाक स्वर थाकि जायत अछि-

असगरे कोना ? माँ तँ साथ मे रहतीह ने? अहाँ तँ कतेक बेर गेल छी । हमरा इन्डस्ट्रीज आफिस मे किछ जरूरी काज अछि - भिनभिनाइत रीतेश बाजल सोमा किछु नय बजलीह । माए गाम सँ अयल छलीह पेट मे दर्द होयत छल । ज्वर बोखार हरारत सेहो । रीतेश कतेक प्रेम सँ अनने छलाह माए के डाक्टर सँ देखेवा लेल ?

ठीके छैक । हम देखा दैत छी - सोमा देखलक कतेक आश्वस्त भऽ रीतेश चलि गेल ओसारा पर ! ओ एकटा बिजनैस मैन छल जकर दृष्टि मात्र लाभे पर रहैत छल - प्रत्येक पूंजी मे लाभ ? माय पूछि बैसलीह - रीतेश नय जायत डाक्टर ओत? -?

की हेतैक माँ ! हम जे जाय छीयैन्ह । हमरो तँ डाक्टर सभ चीन्हैत अछि। - रीतेशके वचेनाय सोमाक फर्ज छल ।

ठीके छैक - माँक मोन अनमने रहल, वेटाक बात किछु आर होयत छैक पुतौहक आर - प्रत्येक माएक हृदय मे भाव रहैत छैक जे हमर बेटा हमरा श्रवण जकाँ, कान्ह पर उठाय के तँ नहि, मुदा अपना संगे हमरा कत्तौ लऽ जाय जहि सँ ओहि बेटाक माय हेबाक गरिमा कनिको काल लेल हमरो प्राप्त होय जकर शत प्रतिशत भागीदार ओकर पत्नी होय छैक-मुदा, माय प्रत्यक्षतः किछ नय

बजलीह ।

डाक्टर ओतऽ सँ आबि सोमा जल्दी-जल्दी भनसा कऽ रहल छलीह - दस बाजयवाला छलैक । ओसारा पर सँ लोकक भीड़ फागुनक मेघ जकाँ उड़ल जा रहल छल । इना स्कूल चलि गेल छलीह । सोमा-दालि आलू एके संग कूकर मे दऽ जल्दी जल्दी आटा सानय लगलीह - हमर दाढ़ी बनवऽ वाला कतऽ अछ-? रीतेशक स्वर सुनतहि ओ आटा छोड़ि दौड़लीह रेजर खोजवा लेल ।

बाप रे कोनो चीज जगह पर नय भेटैत अछ । की करैत छी अहाँ घरक काज मे पता नय । कहियो कमीज नय साफ-तँ कहियो बटन टूटल-कंघी कत्ती-जूता कत्तौ-एहेन कतौ घर होय रीतेश देर भेला सँ बड़बड़ा रहल छल, खौंझा रहल छल-कनिया-खोजु ने-कत छैक दाढ़ी बनवऽ वाला ? ओकरा अबेर भेल जा रहल अछ - माएक स्वर सोमाक कान मे पड़ल । ओ बिन किछ उत्तर देने चारु दिसि खोजि रहल छलीह - कूकर सीटी पर सीटी द' रहल छल । अंतमे बाथरूमक कोन मे कल्हुका दाढ़ी बनायल रेजर ब्रश ओहिना खरखट्ठल पड़ल छल-सोमाक मस्तिष्क मे रीतेशक गप्प स्वर दऽ रहल छल-विद्यार्थी जीवन मे हम अपन सभ वस्तु-जात सहियारि कैं राखैत छलौ। बिछानक सफेद चद्दर पर एकटा क्रीज नय रहैत छल । सभ वस्तु-जात अपन स्थान पर-मोने ज्वार उठैत रहैत छलैक सोमा कैं-की कनिको हिस्सक रहतीक तँ आय-? मुदा, सोमा चुप रहैत छलीह किएक ई रोज-रोजक कथा छल-

दोसर दिन सोमा रितेश के कहलीह-आय माएक पेशाब पैखाना जाँच हेवाक छैक - दूनू राखल अछ ।

ठीक छैक भऽ जेतैक - सभ काज भऽ जेतैक । अहाँ स्थिर रहु- मुदा स्थिर कतेक काल- फेर वएह कनिक काल बाद -

कए बजए स्कूल जायब -

१० बजे बजैत सोमा डरा जाय अछि नवीन कार्यक आशंका सँ । रीतेश जनैत अछ जे रोज दस बजे स्कूल जायत अछि तैयो पुछवाक प्रकृति भऽ गेल अछ ओकर ।

पैखाना पेशाब ओहि दने दैत चलि जायब अहाँ -

अस्पताल स्कूलक विपरीत दिशा मे अछ । रीतेशक आफिस अस्पतालक दिशा मे-सोमा किछ नय बजलीह। रीतेशक मनुहार ओकरा चुप कऽ दैत छल । अस्पताल होइत स्कूल अयवा मे देर भऽ गेल छल । दस मिनट क्लास बीति गेल छल । प्राचार्य प्रश्नवाचक दृष्टि सँ ओकरा देखलन्हि टा नय वरन् उपस्थिति पुस्तिका मे प्रश्नवाचक चिन्ह सेहो लगा देने छलीह ।

अहाँ दस मिनट लेट छी -

'सॉरी' - कहि सोमा झेंपि जायत अछ । ओ महिला प्राचार्य के अपन हाल सुना के की करितैथ । सभ तँ शिक्षिके छलीह आ घर गृहस्थी वाली । पता

नय कोना ताल मेल घर बाहर मे बैसबैत छलीह । सोमा तँ घर खुश बाहर खुश करबाक तालमेल मे सदिखन टूटल रहैत छलीह ।

घर आपस होयत अछि । सभटा बिछान मेज, कपड़ा लत्ता, बरतन वासन अस्त व्यस्त-रुग्ण माए एक कोन मे सुतल । आस्ते आस्ते सोमा सभ समान कें ठीक करय लागल । एक कप चाह पीवाक मोन भेल-फेर काज देखि मोन अनमन भऽ गेल । इना थाकल साढ़े चारि बजे आयत, रीतेश थाकल ५ बजे आ हम ? आ सोमा माथ कैं झटका दैत अछ अपने आप बुदबुदायत अछ । सासु-ससुर पति-पुत्र पुत्री हमरा सभ अपन जीवन समर्पित कऽ दैत छी । एकटा साँच भारतीय नारीक आदर्श बनवा मे । स्वयं के समर्पित कय हमरा सभ के पूर्णता भेटैत अछ, मुक्ति भेटैत अछ । नारी जावत जीवैत अछ खंड खंड भऽ - संपूर्ण अन्तिम श्वास मे ओ होयत अछि।

साँझ पड़ि गेल । रीतेश अपन काज मे, इना अपना मे । घर मे तरकारी नय छल । आलू रीतेश खाइत नय छल, ओना आलूक चोखा ओकरा प्रिय छल। रीतेश सँ तरकारी मँगवा देवाक लेल कहबाक साहस ओकरा नय भेल ।

खाइत काल आलू चोखा देखतहि - की आय हरा तरकारी किछ नय बनल ?

घर मे नय छल तैं चोखा बनाय देलौं -

घर मे नय छल तँ स्कूल सँ घुरै काल तरकारी लऽ लितहुँ । एकटा तरकारियो अहाँ नय कीनि सकैत छी-

ठीके तँ कहैत अछि कनिया-माय सेहो बेटाक पक्ष लय बजलीह । जी जरि गेल सोमाक - पता नय हमरा की बुझैत छथि - खन बैंक सँ टाका नेने आयब, खन अस्पताल, खन रेलवे रिजर्वेशन पोस्ट ऑफिस, तरकारी तीमन, चाउर दालि- हम तँ मशीन छी मशीन । भरि दिन तँ बाहरे रहैत छथि, घरो घुरैत छथि तँ लोक सभक भीड़ मे - मुदा ओ चुप रहि गेलीह । सोमा घर परिवारक नियम संयमक अनुदेशक उल्लंघन कहियो नय करैत छलीह। ओ ता धरि रूकल रहैत छलीह जाधरि दिशा संकेत नय भेटैल छल । कल्पना भावनाक दुनिया मे तेजी सँ हरिहर बत्ती देखि मोन भगैत अछ दौड़त अछ - मुदा ओहि समय अपार कष्ट होयत छैक जखन अचक्के लालबत्ती बरि कोनो घटनाक आशंका दऽ जायत अछि । आ एहि लालबत्तीक डर सँ सोमा आस्ते आस्ते आगु बढ़ैत छलीह।

चुपचाप ओसारा पर ठाढ़ छलीह सोमा कि प्रोफेसर साहबक घरवाली बजबऽ लगलीह । ओना ओ अड़ोस-पड़ोस मे नय निकलै छली व्यर्थ घंटो घंटा साड़ी कपड़ा गहना जेवरक गप एकर निंदा, ओकर निंदा मे फालतू समय बरबाद केनाय सोमाक पसिन्न नय छल मुदा, सामने पड़ि गेला सँ ओकरा जाय पड़ल - आउ, आउ, इनका माय, अहाँ तँ कहियो निकलितो नय छी । केहेन अछि सासुक मोन ? की कहलकैक डाक्टर -?

सोमा प्रोफेसर साहबक ड्राईंगरूम कैं देखऽ लगलीह । अलमारी मे राखल दुर्लभ एवं बहुमूल्य ग्रंथ सभ पर धूल जमल । एम्हर-ओम्हर किताब सभ छिरिआयल । अनमने सन जवाब देलीह सोमा-पेशाब पैखानाक जाँच भेल छैक। रिपोर्ट आय आबि जायत । ओना डाक्टर कहलक गैसक कारण एतेक हरारत छैक । - पुनः पुस्तक सभ दिसि तकैत बजलीह - एतेक दुर्लभ ग्रंथ सभ पर धूरा किएक जमि गेल । एकरा झाड़ि कियक नय दैत छी -? ओ हँसैत बजलीह - झाड़ि कोना दी ? कोनो अहाँ सभ जकाँ पढ़ल लिखल छी हम ? मूर्ख-चपाट-प्रोफेसर साहब छुवऽ नय दैत छथि कोनो वस्तु जात -

देखैत नय छी हुनका -

अहाँक नय बुझल अछि ? हमरो छोटका आय तीन चारि दिन सँ बीमार अछि ओकरे पेशाब पैखाना लऽ कऽ अस्पताल गेल छथि ।-एकटा उसाँस लैत बजलीह - देर हेतैक बेचारा कें - ओम्हर सँ तरकारी तीमन सेहो कीनने एताह- हम की कोनो अहाँ सनक पढ़ल लिखल छी - कोनो जोगरक छी ।

आ सोमाक अन्तर मे एकटा विद्ध शलाकाक दाह उठल - कतेक सुखी अछि प्रोफेसर साहबक पत्नी ? पढ़ल लिखल नय तँ कोनो लाय लपेट नय । प्रोफेसर सहब दिन राति दौड़ैत रहैत छथि ई घर मे बैसल भरि दिन भानस भात, सिंगार पटार कतेक मस्ती अछि । प्रोफेसर साहबक पत्नी सँ सोमा के ईर्ष्या होमँ लागल । इएह पढ़नाय लिखनाय जपाल भऽ गेल । ओतऽ खुशी खुशी रीतेशक कार्य भार के हल्लुक करवा मे उताहुल छलीह। सोमाक मोने होयत छल जे असगरे मर्द पर कमबै सँ लऽ कऽ बाहरक सभ जिम्मेदारी रहैत अछ ताहि सँ मर्दके आयु कम भऽ जायत अछि आ हिन्दुस्तान मे विधवाक संख्या बेसी । ओ वैज्ञानिक ढंग सँ सोचि समझि तखन कोनो कार्यक आरम्भ करैत छली । आ सोमाक चातुर्य कार्य पटुता देखि रीतेश आस्ते-आस्ते सभ कार्य भार ओकरा पर सौंपि निश्चिन्त भऽ अपन बिजनेस मे लागि गेलाह-नारीक उत्साहवर्धक प्रेरणा यदि पुरुष आकासक ऊँचाई पर पहुँचाय दैत छैक तँ पुरुषक उत्साहवर्धक प्रेमिल दृष्टि नारीकें कर्म क्षेत्र मे फूल जकाँ विहुँसाय दैत अछि-ई प्रायः पुरुष बिसरि जायत छथि ।

मुदा जिनगीक वास्तविकता एवं मोनक उड़ान मे बड़ अन्तर होयत अछि। सोमा आब टुटि रहल छलीह। कोनो तरहक सहयोग ओकरा रीतेश सँ नय भेटैत छल । ओ जीवन गाड़ीक जुआ सोमाक कान्हा पर दय निश्चिंत छल । बिजनेस मे पाइ-टाकाक कमी नय छल सोमाकें, हँ आदमीक कमी छल -

सोमाक स्वास्थ्य दिनोदिन खसि रहल छल । माए गाम चलि गेल छलीह। सोमा के ज्वर आबि रहल छल। सुइया दवाय सभ चलि रहल छल। ज्वरे पर एक दू दिन ओ स्कूल गेली पुनः छुट्टी लँ लेलीह ।

आय अचानके सोमाक मोन बड़ खराब भऽ गेल । कमजोरी आ ज्वर सँ भरि दिन अचेत रहलाह। इना स्कूल आ रीतेश अपन काज पर चलि गेल । सोमा

कें कनिको सक नय छल जे जलखै बनाय राखि देतीयैक । एक गिलास पानियो देमऽ वाला सोमाके केओ नय छल । ई नय छल जे रीतेश ओकरा पर ध्यान नय दैत छल। ओकर एक उदासी पर रीतेश हजार जान सँ हाजिर छल । मुदा सोमा के काज करबाक मायनीया भऽ गेल छल । जातक ओ, खसैत नय छलीह ताबत बैसैत नय छलीह । काज करैत देखि रीतेश आश्वस्त रहैत छल ।

रीतेश इना सोमाक स्थिति देखि अपने सँ किछु खा पी लेलक । रातुक भानस इना कऽ देलीह । कमजोर सोमा कें रीतेश अपना सँ बाँहि मे उठाय बिस्कुट दूध दवाय खुआय सुता देलक । थाकल हारल इना सुति रहलीह रीतेश बाहर मे लोग सभ सँ गप करैत छल । मसहरी के टाँगत? बाहर सँ रीतेशक हँसीक स्वर अबैत छल तँ ओकर मोन भेल जे रीतेश कें कहि मसहरी लेल - बिजली सेहो चलि गेल छल । मोमबत्तीक थरथराइत प्रकाश आ एकटा गहन मौन । अंधकार संग मौन नीक लगैत छल । मुदा, मात्र अंधकार आ मात्र मौन-दूनूक अलग-अलग कल्पना विचित्र लगैत अछि । मौन आ अंधकार एके डोरीक दूई छोर । यदि मौनक कोनो रंग हेतैक तँ निश्चित रूप सँ कारी हेतैक अन्हार हेतैक । यदि अन्हारक नस कें अनुभूत कयल जाय तँ निश्चित रूप सँ ओ मौनक स्वर होयत - चुप्पीक स्पन्दन । एहि अन्धकार कें चीरैत रीतेशक स्वर लहरी-कमजोर सोमाके मसहरी के टाँगबाक अनिवार्यता । ओ साहस कय थरथराइत देह यष्टि सँ मसहरी टाँगि देलक कोहुना कोहुना -बीचे मे रीतेश आबि गेल - इह - कोना मसहरी अहाँ टाँगलौ ? एहि मे लोक कोना सुतत ? एहेन कत्तौ डोरी होय । नायलौनक डोरी किएक नय, मँगाय लैत छी । कतेक खराब लगैत अछ - एके स्वर मे रीतेश बाजि गेल -

केकरा सँ मँगायब - सोमाक स्वर काँपि रहल छल ।

किएक स्कूल जायत अबैत रहैत छी लै अनतहुँ से नय ? आ नय तँ केकरो सँ मंगा लितहुँ । हमरा एहेन मसहरी मे सुतबाक आदत नय अछ । बिद्यार्थी जीवन मे हमरा देखतहुँ ... आ रीतेश दस बजे राति मे पुराण बाँचैत रहल।

सोमाक अन्तर मे हाहाकार उठि रहल छल । ई बिसरि गेलैथ जे हम बीमार छी - भरि दिन अचेत छलौं। लोक हिनका लग रहैत छैन्ह हम मसहरीक डोरी केकरा सँ मंगा दितौं? विद्यार्थी जीवन विद्यार्थी जीवन-हमरा तँ विद्यार्थी जीवन मे इ करबाक आदत नय छल ओ करबाक आदत नय छल । आ ध्यान चलि गेल सोमाक प्रोफेसर साहबक पत्नीक उसाँस पर हम की कोनो अहाँ जकाँ पढ़ल लिखल छी - सोमाक मोन होयत अछि ओ प्रोफेसर साहबक पत्नी कें चिकरि के कहय -'अहाँ पढ़ल लिखल नय छी किन्तु, अहाँ हमरा सँ बेसी सुखी छी नय तँ अहाँक सोफा पर इन्द्रधनुषी आकास बसैत अछि आ नय तँ विद्ध शलाकाक दाह दाहैत अछि - अहाँ हमरा सँ बेसी सुखी छी-बेसी सुखी छी... ।

◆◆◆

मंदिर कतऽ

शिखर अहाँ होशमे आउ । आइ-काल्हिक जमाना इमानदार लोकक नहि छैक । हम दुनिया देखने छी इ देश एकटा लहाश जकाँ अछि, जकरा लोक सभ गिद्ध जकाँ नोचि रहल अछि । सभ अपन-अपन स्वार्थ मे लीन। सभ पाइ कमयबाक लेल बेहाल । अहाँ अपन नोकरी बचाउ, शिखर । बॉस सँ झगड़ा करब नीक नै- बुझबैत चन्द्र बाजल ।

मुदा चन्द्र, हमरासँ बडा बाबू एक हजार टाका मंगलनि, डी०ओ० साहेबक नाम पर । ई हम कोना बर्दाश्त करब । डी०ओ० हमर बदली दोसर ठाम कऽ देलक । हम जा कोना सकब ? हमर माय मृत्युशय्या पर अछि, जकर इलाज एहि ठाम चलि रहल छैक। पिता नहि छथि । एकसर बेटा हम, केकरा पर ओकरा छोडबै ?

अहाँ साहेबसँ भेंट कयने छलहुँ ?

साहेबसँ एक बेर भेंट कयने छलहुँ । ओ कहलनि जे बदलीक चेन बनि गेल अछि । ओ बदलि नहि सकैत अछि । तखन बड़ा बाबू हमरा बजौने छल । कहलक जे दू हजार टाका हमरा दियऽ हम ट्रांसफर रोकादैत छी । हम अकचका गेल रही । हम कतऽसँ दी । आइ धरि एक मुश्त एको हजार नइ देखने छी तँ दू हजार कतऽ सँ दी । एक साँझ खाइत छी आ दोसर साँझ लेल झखैत छी ।

ओ बाजल छल - शिखर बाबू, नै जनैत छी । चानीक नाह जखन चलैत अछि तँ सभ चेन बदलि जाइत अछि । पाइ की कोनो हमरा लग रहत, सभ टा तँ साहेबेक खातामे... लोक तँ पाँच-पाँच हजार दैत अछि..... हम तँ अहाँसँ दुइए हजार माँगि रहल छी .।

आ तखन हमर दिमागमे एक टा योजना आयल । हम ओकरा लग घिघिआय लगलहुँ । हम मात्र एक हजार टाका दऽ सकैत छी । अपन बाल बच्चाक पेट काटि- तखन बड़ा बाबू कहलनि ठीक छैक, देखैत छी एक हजारमे हम कोना काज करा सकैत छी।

शिखर, अहाँ की बुझैत छी जे अहाँक काज एहि सँ भऽ जायत ? एकटा नम्हर साँस लऽ चन्द्र किरानी पुराण बुझाबऽ लागल। आँफिसक किरानी सभ कतेक दौडबैत अछि से अहाँ एखन नहि बुझैत छिएक । नव-नव नोकरी आ नव-नव आदर्श । कतेको दिन धरि खुशामद, चाह-पानपर खर्चा । हमतँ अहाँ सँ वेसी देखने छिएक शिखर। कोनो काज ओकरा सभ सँ पड़त तँ चाह पिबाक बहाने कैंटीन लऽ जायत । भरि पेट दुनू गोटे चाह जलखै करत। तकर बाद खड़िका करैत आस्ते-आस्ते पानक दोकान दिस बढत, अहाँ चाह-पानीक दाम भरैत पाछू धऽ लियऽ जे काज कोना हेयत। आ ओ ओहिना स्थिर स्वरे बजता

-देखू काज एतेक जल्दी थोड़बे होइत अछि । हमरा एक-दू दिन सोचऽ दियऽ । कालि्ह आउ, देखैत छी .... आ फेर वैह प्रक्रिया ।

की चन्द, अपन सहयोगी सभ संग सेहो यैह व्यवहार करैत अछि ओ सभ।

शिखर, अहाँ नहि जनैत छी जे प्रत्येक पैघ माछ छोट माछकेँ खा जाइत छैक । ई तँ प्राकृतिक नियम छैक। एहिमे हम अहाँ की कऽ सकैत छियैक ।

नई चन्द, हम एक हजार टाका देने छी । ई बात हम डी० ओ० साहेबक लग जा कऽ बाजब ।

शिखरक बातपर चन्द हँसऽ लागल । अहाँक बातपर के विश्वास करत। उनटे अहाँ के सभ फँसा देत । आजुक युगमे इमानदार बइमानीसँ नहि लड़ि सकैत अछि । आइ बइमानी, घूसखोरी बलमान भऽ गेल अछि इमानदारी शक्तिहीन । कतेक लोक इमानदार छथि?
अहाँ लड़ैत-लड़ैत लहुलुहान भऽ जायब मुदा अहाँक संग क्यो नहि देत । अहाँ घूसखोर सभक किलाक दरबज्जो नै तोड़ि सकैत छी।
नीक होयत जे अहाँ चुप भऽ जाउ । लैत नहि छी तँ देबैक कतऽ सँ ?

चन्द, की इमानदार आदमी जीवि नहि सकैत अछि ? शिखरक स्वर मे जिद्द छल ।

हँ शिखर, जीयत किएक नइ ? जहिना हम जीवि रहल छी । एकटा पैंट आ एकटा शर्टपर आइ पाँच बरखसँ ठाढ़ छी । बाल-बच्चा वेलल्ला भेल रहैत अछि । पत्नी हमर पुरान धोती मे अपन पुरान नुआक पाढ़ि लगा कऽ पहिरैत छथि । बस, हमर हिम्मति परास्त भऽ गेल अछि । हमरामे आब बइमानो बनबाक क्षमता नहि अछि ।

नइ चन्द, हम लड़ब अवश्य । हमरा मे क्षमता अछि चन्द । आत्मसम्मानसँ शिखर थरथरा रहल छल ।

मुदा अहाँक पत्नी ? अहाँक दुनू नेना, दुखित माय ? बइमानीसँ लड़बामे सभक आहुति भऽ जाइत अछि दोस्त । शिखरक कन्हापर हाथ रखैत चन्द बाजल।

नइ चन्द, दुनिया मे सभ एके रंगक नहि अछि । किछु हमरो अहाँ सन इमानदार व्यक्ति छथि जिनका बलपर पृथ्वी टिकल अछि ।

मुदा शिखर, गंगामे प्रदूषण होमऽ लागल, गंगाजलमे कीड़ा पड़ऽ लागल, भूकम्पक आवेगसँ धरती बेर बेर डगमगाय लागल किएक ? एहने-एहने व्यक्तिक स्पर्शसँ हमर देशक छवि समाप्त भऽ गेल - चन्द्र हताश छल।

शिखर शिक्षा विभागक ईमानदार कर्मचारी छल । शिक्षा की, देशक प्रत्येक विभागमे किछु लोकक कारणे कलंक लागल अछि।

एहिमे इमानदार व्यक्ति घोंघा-सितुआ जकाँ फेटायल अछि ।

दोसर दिन शिखर बड खुशी छल । आइ बडा बाबू घूस लैत पकडा गेल।

अहाँ पकड़ौलियैक अछि की शिखर - चन्द अकचकाइत पुछलकै। हँ यार, हम पहिनहि पुलिसकेँ खबरि कऽ देने छलिऐक । हम टाका दऽ रहल छलिऐक आ ओ लऽ रहल छल, बीचेमे पुलिस पकड़ि लेलकै ।

अहाँ एखन बड़ बच्चा छी शिखर । चन्द माथपर हाथ लैत बाजल। कालि्ह ओ जमानति पर छुटि जायत। मोकदमा चलत आ ओ रिहा भऽ जायत।

रिहा .....! रिहा कोनो होयत ? जखन पुलिस स्वयं अपना आँखिसँ देखलकै ।

दोस्त ! ओ गिरफ्तार भेल मुदा ओकरा संग ओकर डी० ओ० बान्हल छैक । ओ एहि लेल ओकरा नै बचाओत जे ओ घूस लेलक,एहि लेल बचाओत जे ओ ओकरा भेद खोलि देत । ओकर सभक जाति एक अछि, अहाँ एकसर छी ।

हमर गवाहीक अदालतिमे की कोनो मोल नै रहत । हम आर० डी० डी० सँ भेंट कऽ सभ बात कहि देबैक।

देखू शिखर, एहि मामिलामे क्यो अहाँक मदति नहि करत । चोर-चोर मसियौत बला संबंध एक दोसरक संग रहैत छैक । कोर्ट-कचहरीकेँ अहाँ नै चिन्हैत छिऐक । एकटा खूनक केस छल । ओहिमे खूनक दागकेँ जानवरक खूनक दाग बना देल गेल । सौँसे केस बदलि गेलैक । खूनी बेदाग छूटि गेल ।

असंभव ई कोना भऽ सकैत अछि ? शिखर उतेजित छल ।

सभ किछु रूपैया करैत अछि शिखर । एकर शक्ति कलयुगमे सभसँ बेसी मानल गेल अछि । चन्द उदास भऽ गेल ।

'नै चन्द अहाँ खाली निराशा वाला गप्प करैत छी । हम किछु करऽ चाहैत छी चन्द । अहाँ तँ डरपोक छी ......।' एक बात बुझि लियऽ। प्रत्येक खराब विचार, आशंका कोनो किराएदार जकाँ अवैत अछ ओकरा तुरंते भगा देवाक चाही । नहि तँ अतिथि जकाँ घर मे बैसि जयात केओ हमर स्वागत करय - आ हम ओकरा पर ध्यान देम' लगैत छी तँ ओ हमरा अपन भृत्य बना लैत अछि जिनगी भरि लेल । तँ डरपोक नय बनु चन्द्र ।

नै शिखर, घूस लेब, डाका देब, चोरी करब आसान अछि मुदा भूख आ तंगीसँ भरल जीवन गुजारब कठिन। ई कोनो डरपोक नहि कऽ सकैत अछि । जे कानून तोड़ैत अछि ओ कायर अछि । जे जीवनसँ मेल रखैत अछि, दुख आ कष्टकेँ जीवन मूल्य बनबैत छथि ओ कायर नहि अछि ।- पता नै चन्द अहाँ की सभ बजैत छी ? हमहूँ कहियो बेइमान नै बनि सकैत छी मुदा अहाँ सन जिनगी नहि जीवि सकैत छी ।

जहिना चन्द कहने छल, दोसर दिन ठीके बड़ा-बाबू जमानत पर छुटि गेल । आफिसमे जेम्हर शिखर जाय लोक कनफुसकी करऽ लगैक; जेना कोनो

अनचिन्हार होअय । डी० ओ साहेबक व्यवहार सेहो बदलि गेलैक । सभ स्टाफ एकरा सँ कन्नी काटऽ लगलैक जेना कोनो विषधर होअए ।

बड़ाबाबू अपन बयानसे कहने छल हमरासँ किछु टाका शिखर पँच लेने छल । हम तगादा करैत छलहुँ । एहि लऽ कऽ ओकरा संग किछु बकझको भेल छल तँ ओ हमरा एना फसाँ देलक । दू टा स्टाफ गवाह बनि गेल आ ओ वेदाग बचि गेल ।

ई सभ कोना भऽ गेल चन्द्र किछु बुझाबामे नहि अबैत अछि ।

'शिखर, कानून सबूतपर चलैत अछि । जजक कोनो दोष नै । सबूतक वैसाखी पर चल ऽ वला कानून कतेक निर्दोष भऽ सकैत अछि से अहाँ आँखि सँ देखि रहल छी ।

तँ अदालतोमे न्याय नहि भेटैत अछि ? शिखरक मोन बैचैन छल ।

भेटैत किएक नै छै शिखर । व्यवस्थे उनटा पुनटा अछि । कानूनक प्रक्रिया ततेक विषम अछि जे परिस्थितिक तह धरि पहुँचैत-पहुँचैत सभ घटना दिसाहीन भऽ जाइत अछि । बहुतो लोक सभ बात जनैत अछि मुदा चुपे रहैत अछि ।

ओ सभ डरपोक अछि चन्द्र ! ओकरा सभके विरोध करबाक क्षमता नै अछि । अही स्वर उठौलहुँ तँ अहाँकें की भेटल ?

से तँ ठीके चन्द्र । हताश स्वर छल शिखरक । हम आफिस गेल छलहुँ तँ बड़ा बाबूक पूरा ग्रुप हमरापर हँसि रहल छल । सभ बोली दऽ रहल छल - कलजुगिया साधू । क्यो बाबाजी डंडवत कहैत पुक्की मारैत अछि। ई सभ देखैत हमर मोन खिन्न भऽ गेल अछि । एक वेर डी ओ आ आर डी ओ सँ भेंट करबाक मोन होइत अछि।

'सभ व्यर्थ थिक । कपड़ाक भीतर सभ एक्के । सभक क्लब, पार्टीमे उठनाइ वैसनाइ, रहन सहन एक, अछि। एक जाति। एहिमे अहाँ कतऽ सकब । अहाँ एखनो चुप भऽ जाउ शिखर । अपन परिवारक जिनगी देखू। एखन अपन सभक ज्वलंत समस्या भूख अछि । हम सभ भूखसँ लड़ी की व्यवस्थासँ' ।

'नै हम स्थिर नै रहब ।' विषाक्त हँसी छल शिखरक-हमर शिक्षा, संस्कार सिद्धांत हमर पूजा थिक, की ओकर हम खून कऽ दी ? हम कोना मानव जे इमानदारी अपराध अछि, घूस लेब पुण्य अछि । हम अखने डीओ साहबसँ भेंट करबा लेल जाइत छी। तमतमाइत शिखर ओहि ठामसँ विदा भऽ गेल ।

'क्रोध, उन्माद आ उतेजनामे कोनो काज नै करब दोस्त, उचित रस्ता नै भेटत-चन्द्रक स्वर ओकरा पछुअबैत रहल ।

आफिसमे फेर वैह कनफुसकी - शिखरकें देखितहि सभ अपनामे बाजऽ लागल-रौ पार्टी देबौ रौ एक नै दू दू टा पार्टी ।

दू पार्टी-शिखर चौकल । थोड़े कालक बाद डी ओ साहब शिखरकें

बजाय बिन किछु कहने एकटा कागत एकरा थम्हा देलकै अपन सहयोगी पर झूठ मोकदमा करबाक कारणे ओकर निलंबित कऽ देल गेल छलैक । नीचा आर डी डी क दस्तखत छल । एक क्षणक लेल तँ शिखर स्तब्ध भऽ गेल मुदा तुरते व्यथा-विवशताक सोचमे साहेबक आगू कलपऽ लागल- श्रीमान हम बाल बच्चा बला लोक छी । अहाँ लग हम न्याय लेल आएल रही । हजूर हम मरि जायब।

'आर जा कऽ शिकाइत करू अपन सहयोगीक । निकलि जाउ एतऽसँ।'

हजूर माफ कऽ दिअ, एहन गलती आब फेर नहि होयत । साहेब चपरासी कें शिखरेकें आँफिससँ निकालबाक आदेश देलक।

सभ स्टाफ हँसि रहल छल । बेचारा इमानदार । सभक हँसी कोड़ा जकाँ शिखरक पीठपर बरसि रहल छलैक। ओ चोट्टे आर डी डी लग गेल।

ओ, तँ अहीं छी शिखर बाबू । अपने सहयोगीपर मोकदमा करैत छी। बड़ नाम अहाँक सुनलहुँ ।

आर. डी. डी. के हँसैत देखि शिखरक मनोवल किछु बढ़लैक । बाजल-हुजूर हमर कोनो गलती नहि अछि। हमरासँ बड़ा बाबू डी. ओ. के नामपर पाइ मंगलक। डी. ओ.साहेब ठीके बड़ कमेलाह अछि । पत्नीक नामपर जमीन, सारक नामपर बैंकमे सोना ।

चुप्प । अहाँ एहन खतरनाक प्राणीकें एहि विभागमे की कोनो विभाग मे राखब कठिन अछि ।

हजूर, हम एक इमानदार लोक छी । - चुप रहू । - एहि ठाम के बइमान अछि ? सत्यवादी हरिश्चन्द्र एकटा अहीं टा छी ?

आर. डी. डी. क खिसिआयल स्वर सम्पूर्ण ऑफिसकें हिला देलक। सभ स्तब्ध छल । सभक ठोरपर वक्र मुस्की ।

चारू कातसँ भूखल अजगर ओकरा गीड़बा लेल आतुर आ एकटा पराजित आहत मानव शिखर बीचमे छटपटा रहल छल । शिखर सिहरि गेल । सोचऽ लागल, ठीके तँ बजैत छल चन्द्र जे कतेको लोक सत्य कें जनितहुँ संग नहि दैत अछि । ओकर इमानदारीकें बइमान लोक पराजित कऽ देने छल । ओकरा शिक्षा भेटल छलैक जे बइमानी पाप थिक मुदा समाज एहि शिक्षासँ वंचित छल ।

एकरा अहाँ अपमान नहि बुझु दोस्त । ई शासन आ समाजक व्यवस्थाक षड्यंत्र क विजय थिक । अहाँ हारल नहि छी । एक व्यक्ति एकसर सभसँ लड़ाई नहि लड़ि सकैत अछि...... चन्द्र सांत्वना आ स्नेहक स्वरमे शिखरकें बोल-भरोस दैत रहल ।

शिखरकें अपन इमानदारीपर पूर्ण आस्था छलैक । ओकरा पूर्ण विश्वास छलैक जे सत्यक विजय निश्चित छैक । मानव एक दोसराक नीक बेजाय कहय बला के होइत अछि । मानव तँ एहि जनममे एक हाथसँ करैत अछि आ दोसर हाथे पबैत अछि । भगवानक घरमे देर छनि अन्हेर नहि ।

किछुए दिनक बाद भोरे-भोरे चन्द्र दौड़ल छल शिखर लग । शिखर एकटा गप सुनलहुँ, डी ओ साहेब कें राति हार्ट अटैक भेलनि आ आधा अंगमे लकबा मारि देने छैक ।

शिखर तँ स्तब्ध रहि गेल । बाजल - हँसबाक कोन गप छैक । भगवानेकें प्रणाम करू दोस्त । कतऽ छथि साहेब ?

अस्पतालमे ! सुनैत छी जे बोली-तोली सभ बन्द छनि ।

चन्द, अपना सभकें देखऽ जयबाक चाही । की बजैत छी शिखर । जे अहाँक पेटपर लात मारलक तकरा देखऽ जेबैक । अपन कर्मक फल भोगऽ दियौ।

नै चन्द, मालिक मजदूरक हैसियत सँ नहि अपितु मानवताक कारणे हमरा सभकें जयबाक चाही ।

अस्पतालमे सभ कर्मचारी भरल छल । आइ क्यो शिखरकें देखि हँसल नै । सभक चेहरापर एके पाँती-पता नै ईश्वर प्रकोप ककरापर ? कोना? साहेब बेडपर पड़ल छलाह । किछु होश आएल छलनि । दाहिना कात माथसँ पयर धरि सुन्न भऽ गेल छलनि आ सिकुड़ि गेल छलनि । जी निकालि ऐं ऐंक स्वर मे चिचिया रहल छलाह । आँखिक दुनू कोरसँ पानि टघरैत । शिखरक माथ घुमऽ लागल । पाइक पाछू बेहाल, भरल बैंक बैलेंस मुदा आइ किछु काज नहि दऽ रहल छनि । अपन प्राणक भीख जेना प्रत्येक लोकसँ माँगि रहल छलाह ।

ईश्वरक दंड विधानसँ सभ काँपि गेल । शिखर घर जा कऽ सभसँ पहिने भगवतीकें प्रणाम कयलक आ सोझ रास्ता चलबाक शक्ति आ साहसक प्रार्थना।

नव डी ओ बदली भऽ कऽ आबि गेल छलाह । लोक कहैत छल जे बड़ कड़ा आ इमानदार अफसर छथि। सम्पूर्ण आफिस सकदम छल । क्यो दबल स्वरे व्यंग्य करैत छल डी ओ आ इमानदार, हुँह ? देखबै । आर . डी. डी . पहिनहि बदली करा भागि गेल छल । नव आर. डी. डी. क सेहो अपन कार्यपटुता आ क्षमताक रेकर्ड छल।

शिखरक मोनमे फेर ज्वार उठलै, किएक ने नवका बेंच लग एकवेर आवेदन दी ।

नवका आर. डी. डी. तुरत ओकरा बजौलकै । अहाँक आवेदनपत्र हम पढ़लहुँ । ऑफिसक किछु कर्मचारीसँ हमरा सभ बातक ज्ञान भऽ गेल अछि । हम इमानदार लोकक आदर करैत छी । हम स्वयं एहि रास्तापर चलि कऽ एतऽ पहुचल छी । हीरा जौहरीक हाथमे पड़ेत अछि तखने ओकर मोल होइत अछि । हम अहाक प्रोन्नति दैत अहाके बड़ा बाबूक पद पर बहाल करैत छी । आर . डी. डी. क बगलमे डी. ओ. साहेब बिहुसि रहल छलाह। शिखरक आँखिसँ अनायासे नोर झहरय लागल - ईश्वर कतऽ एहि मानवमे, मन्दिर कतऽ, जाहि ठाम एहन मानव सभक निवास -।

◆◆◆

आरम्भक दर्द

साँझक पहर ! मंद समीरण बहि रहल छल । अभिषेक कऽ हृदय मे एकटा आंदोलन भऽ रहल छलैक। ओकर उदास मोन दूर क्षितिज पर धरती आकासक मिलन देखि रहल छल । सौन्दर्यक एकटा नैसर्गिक आभा, बीतल युगक एकटा अज्ञात अनाम भारतीय मनीषी केर अपूर्व कल्पना आ विराट दृष्टि केर झलकि ओकरा भेटि रहल छलैक। आस्ते आस्ते कल्पना चित्रक एकेकटा रेख अभिषेकक आँखिक आगु इजोरिया सँ नहा गेल ।

संध्याकालीन आकास । कतौ रक्तिम वर्ण, कतौ श्याम वर्ण । लगैत छल जेना नीलवर्ण नारायण शेषनाग क छितरायल सहस्रफन पर सूतल होथि, मंद मुस्कीक संग । प्रकृतिक कण-कण अपूर्व सौन्दर्य-चेतना भरि देलक अभिषेकक उदास मोन मे ।

कतेक काल धरि स्तब्ध निर्वाक सन ओ बैसल रहल ! आइ भरि दिन अभिषेक कतेक उदास छल ! एकटा अनहद नाद ओकर हृदय सँ निसृत होइत छल आ कविता बनि पांती-पांती मे छिरिया जाइत छल । मोन पड़ि जाइत अछि ओकरा अपन कवि मोनक, कलाकार हृदयक ।

शहरक साहित्यक लोकनिक एकटा संस्था छल । हफ्ता मे एक बेर काव्य पाठ होइत छल । आमंत्रित अनामंत्रित सभ केओ के भाग लेबाक सुविधा छल। एक सँ एक कवि आलोचक सभ अबैत छलाह । हुनक रूप रंग देखि अभिषेकक हृदय मे ज्वार-भाटा उठैत छल की साहित्य, कला, संस्कृति पर मात्र हुनके अधिकार अछि ? सरस्वती की खास खास लोक पर कृपा करैत छथि ? अभिषेक इजोत मे आब लेल अन्हार सँ लड़ैत छल। मुदा, अंधकार एतेक गहन-सघन छल जे बाहर एनाइ मामूली गप नहि । दोस्त ! एहि ठाम असगर किएक बैसल छी ? - विधुक स्वर सँ अभिषेक चौंकि गेल ।

- 'आइ काव्य-संध्या मे नहि जायब की अभिषेक ?' - विधु ! लगैछ किछु गोटे मिलि दर्शन, संस्कृति साहित्य पर अपन एकाधिकार जमा नेने होथि! जेना सभ किछु हुनके सभ लेलहो । युग-युग सँ अबैत राग-विराग पर हुनक आधिपत्य हो । हुनका सँ फराक नहि तँ केओ कवि अछि आ नहि तँ लेखक।

विधु अभिषेकक दर्द के जनैत छल । अपन कविताक कॉपी लए ओ कतेक गोटे लग पहुंचल छल । मुदा, उपहास आ अनादर छोड़ि किछु नइ भेटल छलै । अभिषेक, ई गप नहि थीक । प्रत्येक भाषाक साहित्य मे एकटा परंपरा रहल अछि । नव आ पुरानक संघर्ष । पुरान बिसरि जाइ छथि जे हम कतेक संघर्ष कऽ आइ एहि स्थान पर पहुंचल छी । आ नव मे धैर्यक बड़ कमी । ओ राताराती आकास छुवा लेल चाहैत छथि । जे प्रायः जीवनक, कोनो क्षेत्र मे

असंभव अछि । ई ठीक सासु-पुतहूक झगड़ा सदृश्य अछि । सासु बिसरि जाइछ जे हमहु कहियो पुतहु छलौं ! हमरो अपन सासु सँ डर होइत छल । हमरो गंजन सहए पड़ैत छल । आ एम्हर पुतहु के मालकिन बनबाक आतुरता ।

वाह, वाह की उपमा अहाँ देलौं - कतेक सुन्दर तुलना - अभिषेकक ठोर पर मुस्कीक चिड़ै उड़य लागल।

हंसु नहिं अभिषेक - विधु गंभीर स्वर बाजल कोनो ससुर सँ बेसी सासु ठुकरा दैत अछि पुतहु के देखते छियैक ? आहां कोनो भाषाक साहित्यकार केर रचना-यात्रा पढ़ने होयब । कतेक संघर्ष-कतेक आगि मे तपि ओ एहि स्थान पर पहुँचैत अछि ।

अभिषेक आजिज भऽ बाजल यार ! कोनो कलाक प्रदर्शन लेल 'ब्रेक' तऽ भेटय ? हम तऽ ओकरो सऽ वंचित छी । आकाशक रचनाक कोन रंग अछि। विशालक कविताक कोन रूप अछि ? कतेक प्रशंसा भेटैत छैक हुनका लोकनिके कवि सम्मेलन मे ?

अभिषेक ! अहाँ तँ खाली भावना मे जीबैत छी । रागदरबारीक कलाक जकरा ज्ञान भए जाइत अछि ओकरा सफलताक सीढ़ी अपने-आप भेटि जाइत छैक । आजुक युग मे एहि कलाक ज्ञान आवश्यक - हंसैत रहल विधु बजैते रहल विधु । मुदा, अभिषेकक हृदय जेना कोनो चोट सँ क्षत विक्षत छल - ओहि गोष्ठी मे हम अपन कविता सुनएवा लेल चाहलौ । सभक चेहरा पर व्यंग्यक मुस्की आबि गेल छल । ओ भाव हम आइधरि नहिं बिसरलौं। एकटा कविता अछि विधु निरालाक टीवी दू टी वी टू टू टू कतेक नाम कमएलक ? प्रतिष्ठित लोक किछु लिखित दैत छथि तँ ओ कविता भऽ जाइत छैक । आ कोनो नव कवि-अभिषेक ! कविता नहि कविक व्यक्तित्व बेसी अर्थ रखैत अछि । लोक व्यक्तिक प्रति पूर्वाग्रह सँ ग्रसित रहैत अछि तैं न्याय नहि भऽ पबैत अछि । - विधु एकटा नम्हर सांस लैत बाजल - छोड़ू, ई अहीं टा नइ अहां एहन एहन कतेक नव कविक रचना सधन्यवाद आपस भए जाइत छैक -

हमरा मोन मे एकटा विचार आयल अछि - गंभीर स्वर छल अभिषेकक - विधु आ अभिषेक कतेको काल धरि एक दोसराक कान मे किछु गुनैत रहल किछु गबैत रहल । योजना बनैत-बिगड़ैत रहल ।

अहि शहरक सभ सँ पैघ कवि-आलोचक-साहित्यकार छलाह समदर्शी बाबू । हृदय सँ बड़ उदार बड़ संवेदनशील मुदा पारंपरिक बंधन हुनको पर एहन छल जे मुक्त स्वरे ककरो तारीफ नइ कऽ सकैत छलाह। ओ भोरे-भोरे अपन कम्पाउन्ड मे टहलि रहल छलाह । उषाक अरुणिमाक संग मंद समीरण अठखेली कए रहल छल। समदर्शी बाबूक मोन सोनकमल सन मुदित छल । अचक्के हुनक पएर सँ कोनो कागत क पन्ना लटपटा गेल । स्वभावतः ओ ओहि पन्ना के उठा लेलथि । कोनो कविता छल । मोती सन आखर मे भाव-सौंदर्य छिड़िआएल ।

ओ मुग्ध भऽ गेलाह नीचा सँ ऊपर कवि क नाम ताकए लगलाह कतौ किछु नइ लिखल छल । ओ ओहि पन्ना के बड़ जतन सँ मोड़ि अपन जेबी मे राखि लेलनि।

सांझुक काव्य-संध्याक फूही बरसि रहल छल । गोष्ठी जमल छल । अचानक समदर्शी बाबू बजलाह आजुक उषाकाल हमर बड़ मनोरम बीतल । आइ एकटा बड़ सुन्नर कविता फाटक लग उधिआयल भेटल । नहि जानि ककर लिखल ई कविता छै ?

समदर्शी बाबूक प्रशंसा जकर भेटल, ओ इतिहास बनि गेल। विधु आ अभिषेक चुपचाप पाछाँ से बैसल छल उपेक्षित जकाँ । अभिषेक के आइ धरि कवि सम्मेलन में उपेक्षा अनादरक मुस्की छोड़ि की भेटल छल?

सुनाउ-सुनाउ-कोन बेनामी कविता भेटल अछि - कतेको स्वर हहरा गेल। समदर्शी बाबू कविता पढ़य लगलाह । सभ केओ वाह-वाहक धुन बजबऽ लागल - आह कतेक हृदय हारिल भाव अछि ।

की शब्द योजना छैक ? कोनो पैघ कविक रचना थीक । लगैछ बसात मे उधिया के चलि आयल अछि। वाह वाहक मध्य समदर्शी बाबू संवेदनशील स्वरे कविता पढ़ैत रहला । अच्क्के विधु बाजि उठल - अरे ई तँ अभिषेकक कविता थीक ?

वीणाक तार टूटि गेल । सभ चुप्प जेना सांप सूंघि गेल । जेना मुंह मे कुनैन आबि गेल । जाड़क अर्द्धरात्रि सन एकटा निस्तब्धता..- सभ केओ समदर्शी बाबूक मुंह जोहए लगलाह - ओ बड़ाइ करताह तं हमहू सभ करब ।

कतेक बेर एहन होइत छैक जे मानव ककरो बड़ाइ हृदय सँ करय चाहैत अछि । मुदा किछु लोक नाराज भऽ जेताह एहि भय सँ चुप्पीक लबादा ओढ़ि लैत अछि । ई दोसर गप थिक जे जहिना एकान्त भेटल नहि कि तुरंत ओकर तारीफ मुंह पर करऽ लगैत अछि । मानव - मोनक रहस्य ! हम कोना बूझब जे ई अभिषेकक कविता थीक-समदर्शी बाबूक स्वर सभक चेहरा पर शांति आनि देलक ।

अभिषेक अपन कविता क कॉपी समदर्शी बाबूक हाथ मे दऽ देलक। मोती सन आखर मे छिड़िआयल भाव-सौंदर्य सभ ।

◆◆◆

परिताप

प्रीता ! ई एहि मासक दरमाहा अछि - बारह सय टाका-एहि सँ आठ सय घरक खर्च लेल राखि लियऽ आ चारि सय अलग कय दिऔक अहाँक बाबूजी केँ मनीआर्डर करब -

सुदेशक बात सुनि प्रीता अकचका उठल छलीह - किएक ? हम अपन नैहर टाका किएक भेजब ? अहाँ अपन गाम बाबूजी केँ पठा दिऔक-

अहाँ ई सभ नय बुझब प्रीता । अहाँक हृदय प्रीत, अहाँक रूप प्रीत, ई सभ अप्रीतिकर बात अहाँ कोना बुझब-

प्रीताक मोन उदास भऽ उठल छल । सासु-ससुर केँ टाका नय पठाय हम अपन माय बाप केँ पठाएब । छी छी लोक की कहत घरक बुनियाद पुतौह सँ होयत अछि - परिवारक मान, मर्यादा, प्रतिष्ठा हँसी खुशी - सभक उत्तरदायित्व पुतौह पर अबि जायत अछ जाहि सँ ओ अपन संस्कार-समर्पण सँ नव पीढ़ीक सृजन करैत अछि -। सुदेश सँ रहस्य जानबा लेल ओ व्याकुल छलीह । एखन धरि ओ पतिक हृदय केँ नहि चीन्हि सकलीह । कतेक प्रेम, कतेक स्नेह, कतेक वात्सल्य पतिक हृदयमे ओकरा लेल छल - मुदा, कोनो बिन्दु अन्तरक वेदना-व्यथित छल ।

मुदा-सुदेशक ई मनीआर्डर प्रतिमास चारि सय टाका चलैत रहल अविरल। सासु ससुर चकित, विस्मित पहुँचल छलाह - विरोध केने छलाह । मुदा सुदेश एतबे बाजल - अहाँ ई टाका नहि स्वीकारब तँ हम प्रीता केँ नहि स्वीकारब ।

एहि कठोर उत्तर सँ माय-बाप सिहरि गेल छलाह - पता नहि बेटीक भविष्य की होयत ? ओहि टाका केँ चुप-चाप प्रीताक नाम जमा करैत रहलाह - समयक गति प्रत्यंचा सँ छूटल बाण जकाँ आगू दिसि भगैत अछि। जीवन के जे क्षण पाछू छुटि जाइत अछि पुनः वापस नहि अवैत अछि ।

सुदेश अस्पताल सँ आयल तँ प्रीता एकटा चिट्ठी ओकरा आगू मे राखि देलक - 'बेटा जाहि दिन सँ अहाँ कनिया केँ लऽ कऽ गेल छी हमरा सभ केँ बिसरि गेल छी । माय बाप कतेक आस अरमान सँ बेटा केँ पालैत पोसैत अछि - आब हमर सभक वृद्धावस्था भेल - आ सुदेश आध चिट्ठी पढ़ि कऽ राखि देलक । सिगरेटक कश पर कश खींचने जाइत छल - सरिपहुँ, आइ ओ एकटा सफल डाक्टर अछि - यश आ धनक उत्तरोत्तर वृद्धि भेल जाइत छल -

भनसा घर सँ निकलि आँचर सँ हाथ पोछैत प्रीता बजलीह - कतेक अधिकार माय बाप केँ बेटा पर रहैत अछि -

अधिकार - हूँऽऽहँ - विद्रूप भाव सँ बड़बड़ा उठल सुदेश-

अहाँ केँ की भऽ गेल अछि ? पाथर भऽ गेल छी ? बाबूजी माँ पर दया

नहि अबैत अछि ? एकटा बेटा-बूढ़ाक सहारा -

प्रीता, पाथर-नहि भेल छी । दया, ममता सभ अछि मुदा, स्वयं केँ बाबूजीक बेटा हेबाक योग्य बना रहल छी । अहाँ नहि बूझब ।

अहाँ नहिं बुझब - अहाँ नहि बुझब अहाँ हरदम हमरा बहटारैत रहैत छी। हम किएक नहि बुझब-खौंझा उठल छलीह प्रीता पतिक एहि मौन रहस्य, बाचाल कार्यरूप पर । प्रीता, प्रीत बनू, शांत रहू-सहज आ स्निग्ध स्वर मे सुदेश बाजल -

अश्रुमय आनन सँ प्रीता अपन काज करऽ लगलीह । आ खिड़की लग ठाढ़ सुदेशक आँखि मे माय बाबूजीक चेहरो नचैत छल । हृदय सँ एकटा आह कराह निकलैत छल कि पुनः कोनो धधरा जगजगा जाय-ओहि धधराक आँच एखनो सुदेशक आँखि मे छल -

माय, हम, अहाँ केँ कोनो बुझाबी ? ई क्रय-विक्रय मोल-भाव की ब्याहक इएह पवित्रता थीक-खरीदल पति, पौरुषहीन, पराक्रमहीन पति सँ कोना केओ नारी अपना केँ सौभाग्यवती मानत? नय माय, हम अहाँक, बाबूजीक कोनो बात नय मानब -

सुदेश विचित्र मनःस्थिति मे छल । जाहि ब्याहक ओ इन्द्र धनुषी सपना देखैत छल ओ खंड खंड भऽ गेल माय-बाबूजीक कारण -

बेटा, अहाँक बाबूजीक सभ दिन सँ इच्छा छल अहाँ केँ पैघ सर्जनक रूपमे देखथि ।

तँ की माय ओहि मे कोनो त्रुटि भेल हमरा सँ ? फोर्थ इयर मे आबि गेल छी । २-३ बरीस मे डाक्टर हेबे करब -

बेटा ओ त एतबे कहैत छैथ जे मेडीकलक खर्च आ आगू पढ़ाई लेल विलेंत जेबाक खर्च-

-माय शांत स्वर मे बजलीह -

माँ हमरा जनमते किएक नय माहुर दऽ देलौं । हम आय बोझ बनि गेल छी - आ-ह, आ हताश सुदेश सोचैत रहल-की भऽ गेल अपन समाज केँ ? की भऽ गेल माय बाप केँ ? बेटीक बापो तँ इन्साने अछि कोनो लखपति कुबेर नय। बेटाक माय-बापक हृदयक सभ संवेदना मरि जाइत अछि की ? एक तँ जिनगी भरि खटबा लेल एकटा दाइ मुफ्त मे भेटि जाइत अछि आ ताहि पर सँ एतेक मांग -

दाई -? साँचे तँ बेटीक गुजर-बसर कोना हेयत ताहि चिन्ता सँ माय बाप पतिरूपी संरक्षक ओकरा दैत अछि। ई नय जे बेटी केँ पढ़ा लिखा कर्ममय जीवन मे प्रेरित कय स्वतंत्र व्यक्तित्वक विकास कराबथि ! नय ई सभ हमर सभक समाजक सड़ल गलल मान्यताक प्रतीक थीक - व्याह पुरुषक लेल विनोदक साधन, स्त्री लेल जीवन-निर्वाहक सुरक्षा ।

अंत मे एकटा कठोर निर्णय, शिव-संकल्पक संग ओ माय बाबूजीक समक्ष हथियार डालि देने छल । माय कहने छलहि-बेटा, लड़की देखि लिय । सभ इन्तजाम लड़की देखाबैक करैत छी । चलू, पसन्द होयत तँ करब नय तँ।

माँ, विवाह-योग्य कन्या कें बिकौआ पशु जकाँ देखनाय कोनो गर्वक वस्तु नय थीक । बेटी केहनो अछि ओ पवित्र होइत अछि । रूप रंग वाह्य वस्तु थीक । दोसर बात जे लड़की देखि लेबाक बाद छोड़नाय नीचता अछि पशुता अछि । माँ अहाँ सभ कें जे करनाइ अछि, करू । हमरा शिरोधार्य अछि । मुदा, हमरो एकटा बात राखब लड़की यदि अहाँ बाबूजी देखब तँ केहनो होयत हमरा स्वीकार्य-मुदा देखि कें छोड़ब नय-जाहि सँ कल्हि हमर छोट बहीन नीता कें केओ देखि छोड़ि नय दियय-अहाँक पोती कें भविष्य मे अपमान नय करैक...

आ प्रीता सहज स्नेह सुकुमार भार सँ लदल ओकर जीवन कें प्रेममय बना देने छलीह-

एक दिन साँझ सुदेश घर आयल तँ दुआरि पर सँ तरह तरहक व्यंजनक सुगन्धि असरि-पसरि रहल छल-ड्रइंग रूप मे सुदेशक बाबूजी बैसल छलाह ।

अहाँ तँ पत्रो देनाय छोडि देलौं । अहाँ के मायकें लऽ दू चारि दिन लेल अहाँ सभ कें देखऽ चलि अयलौं।

वृद्ध पिता कें प्रणाम करैत सुदेशक भावुक हृदय कचोटि उठल अहाँ सभ एहिठाम रहू । कोनो दिक्कत नहि होयत एहिठाम -

नय, गाम केकरा पर छोड़ब-जेहो डीह-डावर बचल अछि लोक जबद कय लेत ! नीता कें कारी लग राखि देने छी -

आ ओहि राति प्रीताक समक्ष रहस्य उजागर भऽ गेल । ओ भनसा घर मे रोटी पकबैत छलीह । कान छल बैसकी मे माय बाबूजी आ सुदेशक गप्प पर-

बाबूजी, अहाँक सभटा उपराग हम सुनलौं । मुदा, जहिना प्रचीन काल मे आदमी कें बेचि दास बनाओल जाइत छल तहिना अहाँ सभ हमरा सासु ससुरक हाथ बेचि देलौं । हम अहाँक बात एहि संकल्प पर मानलौं जे नोकरीक बाद चारि सय टाका अपन ससुर कें दय हुनक दासता सँ मुक्त हेबाक प्रयास करब । जाहि दिन डाक्टरीक पढ़ाइक खर्च चूकि जायत हम उऋण भऽ जायब। एहि कारण अहाँक इच्छा विलेंत जेबाक हम नहि पूरा कऽ सकलौं । अपने देश मे रहि विलेंतक डाक्टर सँ पैघ डाक्टर बनब । नय तँ विलेंतक कर्जक बोझ उतारैत उतारैत हम बीच्चे मे रहि जयतौं......

माय-बाप ग्लानि सँ अपन मूड़ी झुकाय लेलन्हि । आ प्रीताक आँखि सँ झहरैत नोर चकला पर पड़ल रोटीक संग बेला गेल ।

◆◆◆

अर्थयुग

रमुआं, चारि-पाँच प्लेट जलखै लेनें आ ! -जूनियर इंजीनियर आलोक बाबूक स्वर, मित्र मंडली मे एकटा उछाह आनि देलक !

जलखै ? कतेक नीक शब्द अछि ! जाहि ठाम आतिथ्य-सत्कार मात्र एक कप चाह मे सिमटि गेल अछि, ताहिठाम जलखै शब्द अपना-आप मे महत्वपूर्ण भऽ जाइत छैक ।

आ आर्डरक संगे भरल-भरल प्लेट सभक आगू मे आबि गेल । जेना भीतर मे तैयार-मात्र स्वामीक आदेशक प्रतीक्षा छल । जूनियर इंजीनियर आलोक बाबू लेल ई कोनो नव बात नै । मित्र मंडली जुटैत रहैक। यानी किछु ठेकेदार, किछु स्टाफ आ किछु दोस्त सेहो । गप्पक तर्रा संग चाह-नाश्ताक तर्रा सेहो चलैत छल आ आलोक बाबू अपन अभिमानी नेत्र सभ पर टिकौने रहैत छलाह।

जे होय, भाभी जिन्दाबाद कहबाक चाही ! राजेश बाजि उठल-कखनो बिन जलखै, बिन खेने, हमरा सभकें जाय नय दै छथि ।

आलोक बाबू बजलाह-हौ तो सभ कीबुझैत छहक ? ई कोनो जज साहेबक घर छी जे एक कप चाहो पर आफत ! कमबैत छी, खायत छी, खुअबैत छी, मस्ती मे डूबल रहैत छी - आलोक बाबूक कटाक्ष अपन पड़ोसी अपर न्यायधीश गुप्ता जी दिसि छल ।

मित्र मंडली एकटा चाटुकार ठहाका लगौलक । -ठीके जज साहेब कोन तरहक जीवन जीयैत छथि ! ने कोनो सौख-सेहन्ताक पूर्ति आ ने जीवन मे कोनो मस्ती ! - राजेश बाजल ।

-एतबे नै, दूधवाली, तरकारी वाली बरण्डा पर टका लेल घिघियौनी काटैत रहैत अछि । सामाजिक मर्यादा सेहो किछु छी कि ने ? लोक देखैत अछि, हँसैत अछि - रामजस बाबू बजलाह । एकटा ठहाका फेर उठल ।

आलोकक बालसंगी उदय सँ नै रहल गेल । बाजि उठल - आलोक, खाली धन सँ मानवक प्रभुताकें लेखा-जोखा केनाय हमर सभक मूर्खते नै वरन् क्षुद्रता सेहो अछि ! शिक्षित हेबाक गर्व हम तखने कऽ सकैत छी जखन नैतिकताक पाठ पढ़ि सकी । ओकरा निरपेक्ष भाव सँ स्वीकार कऽ सकी।

-ओह उदय, तो नै बुझैत छह । युग बदलि गेल, युगक मान्यता बदलि गेल । ईमानदारी, बेईमानीक परिभाषा बदलि गेल । आइ सभ किछ टाका छी । हम सभ अर्थयुग मे जीवि रहल छी । एहि अर्थक आवरण मे अनर्थक अन्धकार नुका जायत अछि ।

-मानव-मूल्य की किछ नै रहल आलोक ?-उदयक स्वर खिन्न छल।

-मानव-मूल्य? हा-हा-हा ! हँ, उदय, मानव-मूल्य मात्र टाका रहि गेल।

हमहीं किएक, आय प्रत्येक मानव टाकाक पाछाँ बेतहाशा भागि रहल अछि । टाका मे किछु शक्ति छैंक तखन ने दोस्त ? टाकाहि धर्मः टाकाहि स्वर्गक युग सरिपहुँ आबि गेल अछि । जज साहेब ईमानदार छथि-मुदा एतेक क्षणिक जीवन मे ओ की जीबलैथ? की भोगलैथ ? आगू मे आराम ऐश्वर्य पसरल सागर-विस्तार-मुदा, सभ सँ वंचित ! ई कोनो जीवन थीक उदय?

-आलोक ! भारतीय संस्कृतिक जीवन-मूल्यक रक्षा केओ करै छथि तँ एखनो इएह न्यायक रक्षक सभ? न्यायक कुरसी पर बैसय बला यदि अन्यायक पक्ष लियऽ लागत तँ हमर-अहाँक बहु-बेटी भरल सड़क पर लुटा जायत ।

-हे उदय, सतयुग चलि गेल, कलयुगो हारि-थाकि पड़ा रहल अछि - ई अर्थयुग मे कोन प्रकारक गप्प तों कऽ रहल छह ? हमर समझ सँ बाहरक बात छी । अर्थयुग मे काज कोना होयत अछि - सभ जनैत अछि। नेपोलियन जकाँ कागजी घोड़ा दौड़ैत अछि आ विश्व-विजय कऽ अबैत छैक ।

आलोक बाबूक पागल-प्रलाप सँ उदय खिन्न भऽ गेल । ओकर आँखि पर पट्टी चढ़ल छल । बेबस उदय ओहिठाम सँ उठि गेल ।

-बेचारा उदय बाबू कें अहाँ ततेक तर्कपूर्ण बात कहलियैक जे उठिए गेलैथ - रामजस बाबू हंसि रहल छलाह ।

-अर्थपूर्ण सेहो-राजेश संग देलक ।

-बेचारा-बड़बड़ाइत आलोक बाबू आराम कुरसी मे पएर पसारैत, ड्रेसिंग गाउनक फुदना हाथ सँ झुलबैत बजलाह-जनै छी रामजस बाबू ! बाँध तँ सभ बेर टुटबे करत ? हम सभ भगवान नै ने छी जे नदीक धाराकें सुखा देबैक आकि एहन बाँध बान्हि देबैक जे कहियो नै टूटय ! ओना आइ-कालि तँ चाउर-दालि, तरकारी तीमन सँ लऽ कऽ सीमेन्ट-बालू धरि मे मिलावट रहैत अछि । तखन हमर सभक कोन दोख ?

-हँ, सर, लोक जान-परान नै ने दऽ देतैक ! सभ साल टूटत, बाँध सभ साल बनत । सरकार टाका देबे करैत अछि । आ फेर हमरा सभ एहन ठेकेदारक रोजगार कोना चलत? की यौ रामजस बाबू? - बातकें चिबा-चिबा राजेश बाजि रहल छल ।

-हें हें... छेबै करैक ने । हम सभ बेरोजगार भऽ जायब तँ बेकारीक समस्या अलग ठाढ़ भऽ जायत । सरकारो बुझैत छै ने ? अचानक बात बदलैत रामजस बाबू बजलाह-सऽऽर आब अहाँ पुरना फिएट बदलि मारुति लऽ लियऽ। एक सँ एक माडेल निकलि रहल छैक ?

- हँ रामजस बाबू ? हमहूँ इएह सोचैत छी । मुदा, ततेक समान घर मे भरि गेल दि जे कखनो काल इनकम टैक्स वालाक भय....

-एह अहाँ ते हद्द कऽ देलियै - बीचे मे बात लोकैत रामजस बाबू बजलाह-सभकें तँ इएह बुझल छैक जे ई फिएट अहाँक ससुर सौख सँ देने

छथि ! सभटा समान सासुरक उपहार छी । एहि मे अहाँकें कोन डर अछि?

-सर ! राजेश बाजल - अहीं तँ बजैत छी । ई अर्थयुग अछि । जखन टाका पर सभ बीकैत अछि तँ.. -आ ने तँ फेर ई कोर्ट-कचहरी, वकील-मोख्तार कहिया काज देतैक - एहि भय सँ की लोक सौख-मनोरथ त्यागि देत?

-आलोक बाबू ! कहब छैक जे इंजीनियर सभ जतेक बेर सस्पेंड होयत अछि ओतेक बेर ओकर प्रोमोशन सेहो भऽ जायत छैक । घाटा अहाँके कोनो चीज मे नै अछि - रामजस बाबू हरदी-चून लगेलैथ ।

-सऽर, सरकारी-तंत्रक मेरूदंड जहिना किरानी वर्ग सभ छथि, तहिना अभियंत्रण निगमक रीढ़ जूनियर इंजीनियर सभ थीक ! अहाँ सभ तँ एक्जीक्यूटिव आ सुपरिटेन्डेन्ट सभकें चरा दैत छी - राजेश नहला पर दहला देलक !

गप्पक तर्राक मध्य एहि देशक अभियंत्रण निगमक एकटा कर्मचारीक मानसिकता जीवंत छल । पैसा कमएबाक धुन आ भौतिक-सुख साधनक उपलब्धिक पाछाँ आलोक बाबू बेहाल छलाह ।

आजुक मानव चान पर चलि गेल । अन्तरिक्ष मे गाम बसएबाक तैयारी कऽ रहल अछि । अणुकें विखंडित कऽ ऊर्जाक असीम श्रोतक पता लगा रहल अछि । कतेक उत्साह अछि मानव मे २१म सदी मे पहुँचबाक! मुदा, आय सभ उन्नति पदार्थक स्तर पर भऽ रहल अछि ! पश्चिमी देशक नकल करय बला मानव पदार्थक स्तर पर समाज आ राष्ट्रक विकास कय संतुष्ट भऽ सकैत अछि। मुदा, जाहि देशक संस्कृति मे पदार्थ सँ ऊपर चरित्र अछि, नैतिकता अछि मानवता अछि, ओहिठाम मात्र पदार्थ पर समाजक, राष्ट्रक संपूर्ण विकास कोना भऽ सकैत अछि? दया, तितिच्छा, करुणा, प्रेम, वात्सल्य - ई सभ गुण मनव-हृदय सँ तिरोभाव भेल जा रहल अछि । भारतीय संस्कृति मे जीवन-मूल्यक महत्ता जीवनो सँ बेसी अछि ।

मुदा, एहि अर्थयुग मे ने कोय गोर रहल, ने कारी ? गरीब आर गरीब भेल जा रहल अछि । अमीर आर अमीर । सभ सँ दयनीय स्थिति मध्यवर्गीय मानवक अछि, जे अर्थ रहितो अनर्थक पंक मे फंसैत अछि ।

-हुजूर ! रामपुरक मेट नेबुआ मुसहर आयल अछि ! रमुआक स्वर सुनि आलोक बाबू चौंकलाह । रामपुर मे आलोक बाबू सड़क बनवा रहल छलाह । नेबुआ मेट पर सभ काजक देख-रेखक भार छोड़ि आलोक बाबू, बीच-बीच मे कहियो फटफटिया पर, कहियो जीप सँ सड़क देखि अबैत छलाह । नेबुआ आ आलोक के अलग रिस्ता-नाता छल जे भजैत रहैत छलैक । आलोक बाबूक धन-संपत्तिक नृत्य भऽ रहल छल । आब दोमंजिला सेहो पिटा रहल छल-आ नेबुआक देह पर वएह मैल-कुचैल फटलाहा कॉपीन, माथ मुदा तेल सँ बेस चिक्कन-सीटल। गोलगलाक एकटा गंजी । बस, इएह नेबुआक शाश्वत संपत्ति छल । आ एहि सभक मध्य एकटा रोबदार व्यक्तित्वक मालिक, जेना ओ नेबुआ

नहि जूनीयर इंजीनियर आलोक बाबू होथि ! सभ मजदूरकें कमीशन पर काज दिआबैत छल । आ ई सभ तँ चलिते रहैत छैक तें चलि रहल छल । आलोक बाबू सभ कें बिदा कऽ नेबुआ दिसि उन्मुख भेलाह -

-हुजूर ! गामक मुखिया बड़ दमसाइत छल । कहैत छल, कतऽ गेलौ तोहर ओभरसीयर ?

-कोनो बदमाशी केने हेबही ! -आलोक बाबूक स्वर के दर्पक कड़क छल - किएक टोकलकौ तोरा सभकें?

-हुजूर ओ कहैत छल, कत्तौ चारि फीट माटि छैक तँ कत्तौ तीन फीट! कत्तौ खढ़-पात दयकें सड़क भरि देने छिही !

-किएक, ईंटा एखन धरि नै बैसेने छिही ?

-नै हुजूर ! ईंटाक काज सेहो शुरु अछि । मुदा मुखिया जी कहैत छथि जे सभटा दू नम्बरक ईंटा छी । तों सभ जनताक जानमाल सँ खेलबाड़ करैत छें! सभकें जखन जेल पठाय देवौक तँ बनबैत रहिऐक रोड... हुजूर काज बन्द भऽ गेल अछि । हमर सभक प्राण अवग्रह मे अछि।

-तोरा सभकें हम पहिने कहि देने रहियौक जे गामक काज मे देर नै हेबाक चाही ? बीच गाम सँ जे सड़क निकलैत अछि ओहि पर सभक दृष्टि रहैत अछि । खैर-कनिक काल धरि आलोक बाबू सोचैत रहलाह - जो तों गाम चलि जो ? हम काल्हि भोरे पहुँचि रहल छियौक । देखैत छियौ तोरो मुखियाकें! - फेर अपने-आप बड़बड़ाय लगलाह - सभ हमरे दुहैत अछि । स्साला ! -एकटा मुरगा कतेक जगह हलाह होएत ?

दोसर दिन भोरे रामपुर जेबा लेल तैयार होमऽ लागलाह । पत्नी शुभदाकें एहि सभ सँ बड़ चिढ़ छल । सुख केकरा पसन्द नै पड़ैत छेक मुदा कोनो वस्तुक अतिरेक मानवकें डुबा दैत छैक-अहाँ कथी लेल एतेक झंझट माथ पर लादने रहैत छी ! सभ सुख अछिए ! जमाना खराब भऽ गेल । अपन घर-दुआरि सेहो लोककें अप्पन होइत छैक ?

-अरे रानी, पैसा सँ बढ़ि किछु नै दुनिया मे । देखैत नै छी जज साहेबक पत्नीकें ? देह पर साधारण वस्त्र, कोनो जेवर-जात, टीप-टाप किछु नै । हमर पत्नी तँ रानी अछि रानी, सरिपहुँ रानी !

अभिमानक दुलार मे माधुर्यक अभाव छल जे सतत खटकैत छल शुभदाकें ।

-जज साहेब, जज साहेब ! कम सँ कम दूनू वेकति भोर-साँझ एक-दोसराक संग, बाल-बच्चाक सँगे हँसैत छथि ? आ शुभदाक हृदय रुदन क' उठल । धन-संपत्ति सभ आराम घर मे भरल अछि मुदा शान्ति कतऽ ? शान्ति एकटा पिआस बनि गेल, जकर तरास सँ शुभदा छटपटाइत रहैत छलीह । व्यवहार, प्रेम सभ किछु आलोक बाबू मे अछि मुदा मिठास नै । एकटा

कुरूपताक अनुभूति शुभदाकें होयत रहैत छैक - अपन घर सँ शुभदाकें स्नेह अछि मुदा, एहि कोलाहलक मध्य एकटा विराट शून्यताक अनुभव करैत छलीह शुभदा । की भऽ गेल अछि मानव कें ? कतऽ भागि रहल अछि समाज? मानव आइ अर्थक पाछाँ अपन जीवन अर्थहीन बना लेलक ! ककरो एक-दोसरा लेल समय नै अछि । सभ अपने लेल बेहाल । अपने दुख-दर्द मे ओझरायल मानव कतेक बौना लगैत अछि । कर्मक बदला दुखक गाथा-कतो चरस-अफीम, कत्तौ शराब-जूआ - प्रकृति सँ संघर्ष करबाक बदला, कर्मक्षेत्र मे रत रहैक बदला मानव आर स्वयंकें दयाक पात्र बना लेलक । आ दयाक पात्र बनल पुरुष कथमपि पुरुष नै अछि ।

मुदा शुभदाक हृदय जानबाक फुरसत ककरा छल ! कहियो केकरो लग किछ बाजितो छलीह तँ ओ एकटा एहन विचित्र दृष्टि सँ ओकरा देखैत छल जेना कोनो आदिम-युगक प्राणी होय । आन तँ आन, अपन बेटा-बेटी धरि के ओकरा लेल फुरसत नै ! २१म सदी पहुंचैत-पहुंचैत की मानव एतेक यात्रिक भऽ जायत जे अपने धीया-पूता सभ टेस्ट-टयूब बेबी जकाँ संवेदनहीन, सड़क पर उधियाइत रहत आवारा मेघ बनि ? माय-बाप, रिस्ता-नाता की एकटा प्रश्नवाचक चिन्ह बनल रहत बाल बच्चाक आँखि मे ? - आ क्षण भरि लेल शुभदा आँखि मुनि लेलीह-नै-नै, जमानाक कतबो आगु बढ़ि जाय, युग बदलि जाय, समाजक परंपराकें, मानव मूल्यकें बदलबा मे बड़ देर लागत । रुपया-पैसाक सभ संगी अछि । दुख मे समाज मानवकें लहु-लहुआन कऽ दैत अछि ।

रामपुर पहुंचतहि सीधे मुखिया सँ गप करऽ लगलाह आलोक बाबू-हुजूर, हमरा पर किएक तमसायल छी? हम अहाँके नाखुश नै राखब। - जेब सँ हरियरी झलकि रहल छल ।

-अँय ! हम हरामक माल नै छुबत छी । हमरा की इंजीनियर-ओभरसीयर बुझि लेलौ-मुखिया जी नाक-भौं सिकोड़ने छलाह।

-हुजूर पाँच सय टाका फून-पान ! एक बेर हमरो सभकें सेवा करैक मौका दिऔक - आलोक बाबू, स्थिर स्वर मे गीत गओलाह ।

-नै यौ, पाँच सय टाका लेल हम ईमान नै खराब करब । जनताक सड़क बनि रहल अछि । गामक उद्धार भऽ रहल अछि । अहाँ सभक नाम भऽ रहल अछि । - मुखिया जी अडिग ।

-आर पाँच सय हुजूर ! -गीतक दोसर कड़ी ।

-नै यौ एतेक बड़का अन्हेर हम एक हजार से पचा जायब ? -मुखिया जी बैसाखक आकाश जकाँ गुम्म।

-हम दुइ हजार सँ कम नै लेब - आकाश खुजल । मुखिया जी हल्लुक भेलाह ।

-दुइ हजार मे हम मरि जायब सरकार ! हम गरीब आदमी...

-अहाँ सभ केहेन गरीब होयत छी, हम खूब जनैत छी ।

बड़ देर धरि मोलभाव बैसबैत-बैसबैत अन्त मे डेढ़ हजार में बात पटि गेल ।

सड़क बननाय शुरू भऽ गेल ।

आलोक बाबू प्रसन्न मोने खुलिकें गीत सभक कड़ी गबैत घर एलाह।

विगत-यौवना संग दिनक दुपहरिया अस्त-व्यस्त छल । साँय-साँय बहैत पछवा-पुरबाक मध्य अपन घरक निर्जीव उदासी देखि आलोक बाबू अकचका गेलाह । शुभदा हताश-उदास ठाढ़ छलीह । चेहरा पर कोशी-बान्हक टुटलाह कछेर सन सपाट भाव अन्तर मे बाढ़िक प्रलयंकारी भँवर -

-की बात छैक ? एना किएक हदमदायल छी ? -आलोक बाबूक स्वर सुनतहि शुभदाक हृदय हाहाकार करए लागल - सीमा घर मे नै अछि? - बाप रे एतवे टाले अहाँ एतेक घबड़ाय गेलौं । गेल हेतेक कोन संगी ओत । हमरा तँ अहाँ कें देखि लागल जेना किछ अघटित घटित भ गेल ।

मुदा, होनी अपन रंग देखा चुकल छल - नै यो, हम सभ जगह खोजि अयलौं । कत्तौ पता नै लागि रहल छैक ! अहाँक गेलाक कनिए काल बाद ओ तैयार भऽ कऽ जे निकलीह, तँ फेर एखन धरि.... शुभदाक अन्तर चीत्कार सँ भरल छल ।

-शशांक कतऽ अछि ?

-केकरो कोनो अता-पता हमरा रहैत अछि ! एखने कनिक काल पहिने कत्तौ सँ घुमि-फिरि आयल आ आब गेल सीमाक खोज मे - आ शुभदा फफकि-फफकि कानऽ लगलीह ।

आलोक बाबूक ठोर पर सँ मुस्कीक बसंत भागि गेल छल । हुनक दिमाग काज नै कऽ रहल छल । जहिना आयल छलाह, ओहिना सभ दुआर सँ खोजि अयलाह । कत्तौ कोनो पता नै लागल । जकरा ओतऽ खोजऽ जायत छलाह, वएह दुइ टा प्रश्न संग कऽ दैत छल ! सांझ पड़ि गेल । निराश, थाकल-हारल आलोक बाबू थाना मे रिपोर्ट लिखबाय देलैथ । धन-सम्पत्ति, ऐशो-आरामक सभ वस्तु रहितो आलोक बाबू अपनाकें सभ सँ निर्धिन्न प्राणी बुझऽ लगलाह । दिन-राति पैसा-पैसाक हाय-हायक पाछा बाल-बच्चा सभक उपेक्षा कऽ देने छलाह । कोन रास्ता कें जा रहल अछि?

पिताक भय संतानक हृदय मे नै छल । जाहि ठाम प्रेम भेटैत छैक, ताहि ठाम-भय होयत छैक । जाहि ठाम भय रहैत छैक, ताहिठाम अनुशासन।

चैतक आगि जकाँ सौंसे शहर में बात पसरि गेल । लोकक जगघट लागि गेल । जतेक मुँह ओतेक बात। आलोक बाबूकें सहानुभूति आ सांत्वनाक स्वर विष-बाण सन लगैत छल । ओ स्वयं कें नितांत असहाय आ अपमानित महसूस करऽ लगलाह । केओ ओकर बाँहि पकड़ि, उचित सलाह देमऽ वला नै ! मुँह

पर सहानुभूति पीठ पाछाँ कुटील मुस्की आ कनफुसकीक कृपा दैत छल ?

अन्त मे दुइ दिन बाद सीमाकें कोनदन शहर सँ पकड़ि पुलिस लऽ आनलक । रामजस बाबू ठेकेदार-जूनीयर इंजीनियर आलोक बाबूक अभिन्न संगी-क बेटा शेखर संग ! एतबे नै पुलिस ठीक ओहि समय मे पकड़लक, जखन शेखर कोनो दोसर आदमीक हाथे सीमाकें बेचबाक मोलभाव कऽ रहल छल ! सीमाक जानकारी मे ई बात नै छल । शेखर सँ ओ प्रेम करैत छलीह । नवीन दुनियाक नूतन कल्पनाक संगे ओ अपन माय-बापक घर त्यागि आयल छलीह ।

एकटा अनघोल मचि गेल जे रामजस बाबू ठेकेदारक बेटा लड़की बेचबाक ठेका लऽ लेने अछि । पैसा कमबैत-कमबैत आलोक बाबू आ रामजस बाबूक घर तँ उजड़िए गेलैक, एक-दोसराक दुश्मन सेहो भऽ गेलाह। अर्थ रहैत एहि अर्थयुग मे कनिको प्रतिष्ठा नै खरीदि सकलाह ।

जज साहेब गुप्ता जीक कोर्ट मे दूनू गोटेक पेशी भेल । रामजस बाबू जज साहेबक पेशकार लग हाथ-पएर जोड़ने छलाह । लक्ष्मीक भंडार खोलि देल गेल। सभ जनैत छल आ आलोक बाबूक कान मे सेहो ई बात पड़ल। ओ माथ पकड़ि लेलैथ ! आइ कोइ अपन नै रहल। सभ दिन ओ धन कें श्रेष्ठ आ उच्च, समर्थ आ शक्तिशाली बुझैत रहलाह। धनविहीन लोककें मेजर नै देलैथ । हुनको कोनो शक्ति भऽ सकैत छन्हि, ई मानबा लेल ओ तैयार नै रहथि। मानवता, नैतिकता, चरित्रक महत्ता आइ बुझि रहल छलाह आलोक बाबू । कखनहुँ काल मोन मे आशंका होनि-कही जज साहब लक्ष्मीक मायाजाल मे ओझरा जेताह... तखन... तखन-आ तकर आगू सोचबाक हुनका क्षमता नै छल। अपमानक ग्लानि सँ माथ झुकल । आँखिक नोर मे आहत दर्पक दुइ बुन्न झिलमिलाइत । कतेक वृथा जिनगी भऽ गेल - कतेक उपहासप्रद ! कतेक बेर मोनमे ज्वार उठैक, एक बेर जज साहेब सँ भेंट कऽ ली । हुनक हृदय जानि ली। मुदा, जज साहेबक दीप्त गरिमाक उज्वलताक समक्ष आलोककें आत्मबल नै रहैक जे अपन छाहरियो हुनकर दुआर पर खसा सकय ।

आइ कोर्ट मे तिल राखबाक स्थान नै छल । लोक सँ खचाखच भरल । सहानुभूतिक आड़ मे आनन्द उठाबऽ बला समाजक दृष्टि न्यायाधीश गुप्ताजी दिसि एक बेर पड़ैत छल आ आलोक बाबूक भावहीन पाथर चेहरा पर दोसर बेर खसैत छल ! एकटा अन्तर्द्वन्द्व, एकटा हिलकोर सभक हृदयक संग-संग चेहरो पर नाचि रहल छल। गुप्ताजीक धरि गंभीर निर्णय भऽ गेलैक - लड़कीकें माय-बापक सुपुर्द कऽ देल गेल । लड़काकें बेल नै भेल । कठोर कारावासक संग तुरंत जेल भेजबाक आदेश -

♦♦♦

मुक्ति

-'माँ, भरि दिन अहाँ सभ मीटिंग करै छी, जुलूस-नारा एहि सभसँ की होयतैक माँ ?'

-ओह, कालेजमे पढ़यबाली लड़की कें इहो नहि बुझल छैक । सौंसे देश तँ दूर, सौंसे विश्वमे महिला मुक्ति आन्दोलन भऽ रह अछि । तैं ने आइ हमरा सभकें दम मारबाक फुरसत नई' - अणु अपन काजमे डूबल मेहाक बातक समाधान करैत रहलीह ।

-मुक्ति आन्दोलन ? -मुक्त होयबाक ई आकांक्षा ककरासँ माँ ? पतिसँ पुत्रसँ, परिवारसँ-माँ किछु दिमागमे नई अबैत अछि-'-धृष्ट बालिका एहि अगम्य मुक्तिकें बुझबाक प्रयासमे छलीह ।

अणु पुत्रीक बात सुनि चौंकि गेलीह । जाही ठाम समाजमे चारू दिस महिला मुक्ति आन्दोलनक धारा प्रवाहित भऽ रहल छैक-जाहि धाराक अग्रमुख स्वंय मेहाक माय छलीह - अणुकें अपन पुत्री पर दया आयल, ममत्व, उमड़ल, एकटा निरीह दृष्टि नेहापर दैत ओ बेटीके? बुझबऽ लगलीह-बेटा, समाजमे महिलापर कतेक अत्याचार भऽ रहल छैक ? परिवारमे महिलाक शोषण, दहेजक कारणें अपमान, बलात्कार, अनाचार की नइँ भऽ रहल छैक ।

कमल कोमल सदृश्य भाव भरल नेहा चुपचाप अपन मायक बात सुनि रहल छलीह । पढ़ऽमे तेज, स्कूलसँ लऽ कालेज धरि प्रथम आबऽ वाली । बजवामे मधुरिमा, चालिमे गरिमा । अपन पिताक सौम्यता आ महानताक निखार लेने छलीह, हिमालय सन धीर-धीर-गंभीर-व्यस्त आ यशस्वी पिताक संतान मेहा।

व्यस्त डाक्टरक जीवनमे अपन स्थान आ समय नहि देखि अणु क्लब जाइत जाइत महिलाक नेताक रूपमे विख्यात भऽ गेलीह । महिला मुक्ति आन्दोलन ओ देखै छलीह, खूब बुझैत छलीह । मुदा ई नइ बुझैत छलीह जे मुक्ति ककरासँ ? बड़का-बड़का बैनर लऽ कऽ अर्द्धनग्न बाँहि कटल ब्लाउज पहिरने-समस्त लज्जाक आवरण आँचरक झिलमिलाइत पारदर्शी आभामे नियोन रोशनीसँ जरैत, मिझाइत देहक दीप शिखा एक दोसरापर खसैत, पड़ैत, हँसैत, ठिठिआइत बीच सड़कपर नारासँ बेसी-गप करेत चलल जाइत नारीक ई प्रदर्शन देखि किशोरी मेहाक मोन वितृष्णासँ भरि जाइत छल ।

प्रायः कोनो ने कोनो मीटिंग, कोनो ने कोनो पार्टी घरपर होइते रहैत छल। मेहा एहि सभसँ फराक रहैत छलीह । खाली चाह जलखैक बेरमे मायक कोठरी जाइत छलीह । डाक्टर पिता आश्वस्त छलाह जे पत्नी आब सेहो व्यस्त भऽ गेलीह । अणुक उपालंभक तनावसँ डाक्टर सहेब मुक्त छलाह ।

आ ओहि मीटींग सभक गप-शप बगलक कोठलीसं सुनि-सुनि मेहा माय बापक उच्छिष्ट तनावसँ भरल रहैत छलीह ।

मिसेज चौधरी ओहि दिन आयल छलीह मीटींगमे अपन प्रोफेसर पुतहुक संग । मिसेज झा पुतहुक साड़ीक बड़ाइ करैत पुछने छलीह - कोन दोकानसँ साड़ी कीनलहुँ, बड़ नीक अछि ।

क्लासमे भाषण देबऽ वाली आ घरमे सासु लग तीतल बिलाइ सन रहय वाली ओ दबल स्वरे बजलीह-'एहि ठामक नहि छी, मायक देल साड़ी छी ।' सुनिते देरी चौधराइनकें धधरा नेसि देने छलनि । -'एह, बड़ मायक गुण गबैत छी । एकटा नुआ दऽ कऽ माय सख पुरा देलक बेटीक-आर कोनो वस्तु जातक जोगाड़ै नइँ आ.... ।

-हे ये, आइ काल्हि पुतहु हरदम नैहरेक बखान करत । हमर पुतहुं बड़का ओकीलेक बेटी, घमण्डे भरल - मिसेज झा सेहो अपन पुतहुक दुखपर टपकि पड़लीह ।

-हे तै से बुझि लिअऽ जे बड़काक बेटीसँ नई करी बेटाक बियाह । वकील, डाक्टर, इंजीनियर, ठीकेदार ई सभ पाइवला छी । एकर सभक बेटीओ आकासेपर - लाल साहेबक पत्नीक रोष छल ।

-बड़काक बेटी ककरा कहैत छैक ? जेहन संस्कार देबैक, बेटा बेटी ओहने बनत ने ? हमरे मेहाकें देखू ने।

बगलक कोठलीसँ सुनैत एहि अनर्गल प्रलापक मध्य अपन बेटीक पक्ष लैत बाजऽ वाली मायक बात सुनि कुनैन आबि गेल छलैक मेहाक मुँहमे ।

मुदा मेहाक नामसुनिते सभ चुप भऽ गेल । मेहाक व्यक्तित्वक प्रदीप्त आभासँ सभ चकाचौंध भऽ जाइत छल ।

आ तुरंत विषय बदलैत क्यो बजलीह -'इह, एहन एहन बेटीक ब्याह दहेजक कारणे न इ होइत छैक ।'

-हँ, से तँ ठीके-नम्हर साँस लैत अणु बजलीह - हम तँ लागल छी । एहि बेर कोनो ने कोनो जोगाड़ लागि जायत ।

प्रसादजी वकील साहेबक बेटा प्रोफेसर अछि एक लाख टाका दाम रखने छथि । ताहिपर माय कहैत छथिन जे टी. वी. फ्रीज छोड़बै थोड़वे; कतेक दिनसँ सऽख लगोने छी - ओम्हरसँ अबैत प्रसाद जीक पत्नीक कानमे बात खसल-केकर बेटाक दाम एक लाख अछि ? हम तँ एके लाख रखने छी । ठाकुर जीक पत्नी तँ अपना चाटर्ड एकाउन्टेंट बेटाक लेल चारि लाखसँ कम नई मांगि रहल छथिन।

महिला संघक गप-शप सुनि-सुनि मेहाक मोन फाटल मेघ सन शून्य भऽ रहल छल । माय-बाप दुनू व्यस्त, छोट भाइ दिल्लीमे पढ़ैत छलनि आ अपन बी. ए. क परीक्षा । अपन पुस्तककें संगी बनओने रहैत छलीह । मुदा आइ मेहा

सजल जलद सन बरसि गेल छलीह - 'माँ, हम तँ अहाक मीटिंगमे नहि बैसैत छी मुदा सुनैत सभ टा रहैत छी । महिला मुक्ति ककरासँ चाहैत अछि ? ओकरा सभसँ पहिने स्वयं अपनासँ मुक्तिलेबाक चाही - अपन जड़तासँ, अपना अज्ञानतासँ आ अशिक्षाक अन्धकारसँ ।

माय अवाक् स्तब्ध रूकल मेघ जकाँ फेर हँसीमे बेटीक बातकें उड़बैत बजलीह -'तोरा बुझवामे एखन बड़ समय लगतौक, एखन तों नहि बुझबीही..।'

'माँ दहेज प्रथाक गप सभ स्त्री बजैत अछि । मुदा माँ स्त्री स्त्रीक दुश्मन छी ।'

-की बजैत छे मेहा ?

-माँ, हम बाजब, हमरा बाजऽ दे । हमरा नहि सहल जाइत अछि, तों सभक सुनैत छीही, कनी हमरो सुनि ले'-मेहाक एहि प्रलापीय प्रार्थना पर माय चुप भऽ गेलीह ।

-माँ, आइ यदि सभक बेटाक माय सप्पत खा लिअय जे हम अपन बेटाकें नहि बेचब, कोनो सामान नहि लेब तँ कोनो बेटाक बापकें सहस नइ होयतनि जे ओ टाका लेथि । पत्नीसँ विरोध कऽ क्यो अपन गृहस्थीमे अशांति नई चाहत ।'

अणु गुम्म । जेना हुनका आगू कोनो पुरान पुस्तकक नव पृष्ठ उनटि गेल होमय ।

-'ओहि दिन मीटींगमे चौधरी चाची अपन प्रोफेसर पुतहुक कतेक गंजन करैत छलीह आ झाजीक पत्नी अपन पुतहुकें । माँ ककरो बाप तँ अपन पुतहुक खिस्सा नइ कहैत छैक - सभक नामइए किएक ? ओ बिसरि जाइत अछि जे ओहो कहियो पुतहु छलीह । ओ अखन स्वयं माय नइ बनि सकैत अछि तँ पुतहुसँ बेटी बनबाक आशा कोनो राखत माँ? नारी स्वयं नारीपर अत्याचार करैत अछि माँ ।' मेहा साँसो नहि ले रहल छलीह - अहाँ बलात्कारक गप करेत छी माँ, फैशनमे सजल धजल रूप, लिपिस्टिकक रंगमे डूबल अर्द्धनग्न वस्त्र पहिरि नारी स्वयंकें पुरूषक लोलुपताक शिकार बना लैत अछि अपनासँ - अहाँ दिशा दिऔक माँ - मेहाक स्वर आर्द्र भऽ गेल छल, स्वरक सजलता आ संवेगतासँ मायक हृदय सिहरि उठल छल ।

नाम आ यशक सौभाग्यक पाँखिपर उड़बाक आकांक्षा रखनिहारि अणु अपन युवा पुत्रीक आवेगक समक्ष बिन पाँखिक भऽ खसि पड़लीह । जकरा हम नेना कहि बहटारैत छी ओ अपना हृदयमे एतेक तूफान रखैत अछि -'ई-नइ मेहाक कहनाइ गलत नहि छैक, कतऽ जा रहल छेक ई नारी समाज ? परिवार टुटि रहल अछि । जाहि संयुक्त परिवारक रूदंड नारी छथि से आइ मुक्ति तकबामे अपनो स्थानसँ वंचित भऽ गेलि । जे माय बाप अपन संतानकें पालि पोसिकँ लोक बनबैत अछि ओ लोक आइ अपन माय-बापकें नहि राखि सकैत

अछि मात्र पति-पत्नी आ संतानक सीमित संसार । मुदा संतानो माय-बापक व्यवस्तता देखि विमुख भेल जा रहल अछि । तखन नारीक संग की बचत मात्र नारी समाजक जमघट, साड़ी, कपड़ा, जेवर-जात आ आलोचना प्रत्यालोचनाक केन्द्रमे महिला मुक्तिक नारा ।

राति मे खाइत काल अणुकें नहि रहल गेलैक । भरि दिनक अन्तर्द्वन्द्व, पुत्रीक देल विचारधारामे प्रवाहित भऽ रहल छलीह । डाक्टर साहेबसँ पुछलथिन .... अहाँ महिला मुक्ति आन्दोलनसँ की बुझैत छी ?

'डाक्टर साहेब अकचकाकऽ बजलाह किछु नई, जे अहाँ बुझैत छी।

भभाकँ हँसि देलक मेहा । अणुक ठोरक कोणपर सेहो मुस्की आबि गेल। नइँ मजाकमे बातकें नई उड़ा। हमर बेटी मेहा हमर माय बनि हमरामे अपराध भाव आअन्तर्द्वन्द्व जगा देलक ।

-'सरिपहुँ ? हमर बेटी मेहारानीकें किछु बाजऽ अबैत छैक की ?' -डाक्टर साहेब हँसैत पुछलथिन । अणुक मुँहसँ सभ बात सुनि डाक्टर साहेब संयत भावसँ बजलाह -'अणु, कोनो देशक असली पहचान ओहि देशक नारी होइत अछि । अपन देशक स्त्रीगणक चेहरापर कान्ति आ चालि ढालिमे सुन्दरता आ मिठास रहैत अछि आ वएह मधुरता अकान्ति एहि देशक माटिमे, आकाशमे अर्थात् प्रकृतिमे अछि । भारतीय नारीक लाजसँ भरल कोमलतामे सौन्दर्य अछि। अणु, नारी-पुरुषकें सतत रहस्यसँ भरल देखऽ चाहैत अछि ।'

-'ईहो पुरुषक लोलुपता थिक -' झपटैत अणु बजलीह -'नारी कोनो भोग्या थिक ।'

-'अहाँ गलत बुझि गेलहुँ । एहि ठाम भोग्याक प्रश्न कतऽ? समस्त प्रकृति रहस्यसँ भरल अछि आ वैज्ञानिक एहि रहस्यकें तार तार कऽ देबाक पाछू बेहाल अछि । नारी वैह रहस्यमय प्रकृति अछि जकर अनुसंधान करबाक लेल पुरुष बेहाल रहैछ ।

नारीक त्याग, सेवा समर्पण पुरुषसँ संभव नहि ।

तखन आइ किएक महिला मुक्ति आन्दोलन भऽ रहल अछि ? अणुक प्रश्न ओहिना ठाढ़ छल ।

-अणु, महिला मुक्तिक नाम महिला उच्छृंखलता नहि थिक । नारीमे सभ किछु अछि । अभाव अछि साहस आ आत्मविश्वासक ! कतबो पढ़ि लिखि लिअय मुदा पुरुषक पाछां नुकायल रहबाक प्रकृति नहि प्रवृति बनि गेल अछि नारीक । छोट-छोट बातमे मर्दक आश्रयमे जाइत छी अहाँ सभ। क्यो बलात्कार कऽ लैत अछि, नारी स्वयंके कलंकित बुझऽ लगैत अछि । बलात्कार कयनिहार बेदाग रहि जाइत अछि । मेहा ठीक बजैत अछि अणु, अहाँ किछु कऽ रहल छी तँ स्त्रीक भीतर साहस आ आत्मविश्वास जगाउ।

-'पापा देखियौक ने मीरा चाचीकें बच्चा नहि भेलैक अछि । वियाहक

पाँच बरख बीति गेलैक । सभ स्त्रीगण ओकरा कतेक दुर्गंजन कहैत रहैत अछि । पापा स्त्रीगणे स्त्रीगणकेँ सतबैत अछि आ तेँ मर्द मोछपर ताओ दैत अलग ठाढ़ हँसैत रहैत अछि - मेहा तमतमा गेल छलीह ।

डाक्टर साहेब हँसऽ लगलाह । नई बेटा ईहो सत्य नहि जे स्त्री स्त्रीक दुश्मन अछि । स्त्री जाति आइ धरि एक भऽ कऽ नहि रहलीह । स्त्री स्त्री-जातिक सुख दुख नहि देखि अपन परिवारक हित अहित देखैत अछि।'

स्त्री किएक ? पुरूषो तँ अपने परिवार लेल जीबैत अछि । दोसर पुरुषकेँ भीख मंगैत देखि कहाँ कोने पुरुष अपन जेबी काटि कऽ ओकरा दऽ दैत छैक।' अणु बजलीह ।

डाक्टर साहेबक बात सुनि मेहा जतबा उमंगित छलीह ओतबहि अणु व्यथित ।-आइ धरिक कयल सभ प्रयास की दिशाहीन रहल । राति भरि करोट बदलैत रहलीह अणु । नाना प्रकारक विचार धारासँ प्रकंपित। कखनो अपना पर खौजाहटि - कोन प्रवाहमे बहल जा रहल छी । बैसल बैसल किछु कऽ देखयबाक प्रयास कतेक निरर्थक प्रयास छल । कखनो मेहाक विवाहक चिन्तामे आकुल भऽ जाइत छलीह । पुत्रीक भविष्यक की होयत ?

मुदा, के जनैत छल जे भविष्यक गर्भमे ककरा लेल विष आ ककरा लेल अमृत नुकायल रहैत अछि ।

व्यस्त डाक्टर गरीबक मसीहा छलाह । सभसँ कम फीस हुनकर छल आ हाथमे यश आ प्रतिष्ठा सभसँ बेसी। हुनकर द्वारिपर भीड़ ततेक रहैत छल । जे डाक्टर साहेबके साँस लेब मुश्किल । डाक्टरी पेशाकेँ ओ मात्र सेवा भावसँ अपनओने छलाह, अर्थोपार्जनक दृष्टिसँ नहि । तेँ लक्ष्मीक निवास छलनि । नीक जकाँ खाइत पीबैत परिवार, सुख सेहन्ता सभ किछु छल, नई छल त मात्र बैंक बैलेंस । बिन बैंक बैलेन्सक आजुक युगमे बेटीक विवाह असंभव ।

मेहाक मामा विपुल बाबू ओहि घरक कतेको समस्याक समाधान करैत छलाह । ओ जनैत छलाह जे ओकर बहीन अणु अपन बेटीक विवाह लेल कतेक चिन्तित रहैत छलीह । कतऽसँ ने कतऽ सँ हाहिजकाँ उधिआइत विपुल बाबू अयलाह आ बहीनक कानमे किछु फुसफुसा देलनि ।

चिन्तातुर प्रफुल्लित अणु पुछलथिन - विपुल कुल खानदान सभ चीज देखि लेने छियैक ने ।

-हँ बहीन, लड़का प्रोफेसर अछि । फर्स्ट, क्लास कैरियर, होनहार आ तेजस्वी । विपुल बाबू उत्साहित छलाह ।

-'मुदा, की हुनकर पितासँ डाक्टर साहेब गप नहि करताह । ई तँ कोनादन लगैत अछि' अणुक आशंका छल ।

-नई बहीन, आब समय कहाँ अछि । हम सभ काज कऽ अयलहुँ। बड़ सज्जन लोक ओ सभ छथि पांचम दिन विवाहक पक्का कऽ कऽ आयल छी ।

देखितहि-देखितहि विवाहक तैयारी शुरू भऽ गेल । व्यस्त डाक्टर साहेब सभ टा बूझि प्रसन्ने भेलाह । ईश्वर मदति कयलनि ।

मेहा सरिपहुं अकचका उठल छलीह । ओ मायक चिन्ता आ इच्छा जनैत छलीह । मुदा एना अप्रत्याशित। ओ एखन अपन कैरियर बनबय चाहैत छलि मुदा। माइक मनुहार गुहारपर ओ अनिच्छेसँ चुप रहि गेलीह।

साधारण साज सज्जाक संग विवाहक आयोजन भेल । दसटा बरियातीक संग बर पहुँचल । सभ किछु रहितो लड़काक चेहरापर हँसी नहि छलैक । एकटा उदासी, एक टा विराग भाव, अन्तरमे जेना कोनो छटपटी । विपुल बाबू आगू-पाछू करैत सभटा व्यवस्था अपना माथपर लेने छलाह । लड़काक कोनो भाइ सदिखन लड़काक लगेमे रहय, मेहाक चारि पाँचटा संगी सेहो मेहाक संगे। लड़काक भाइपर व्यंग्य वाण कसेत ठिठिआइत ।

सिन्दुरदानक बेर आयल । शान्त धीर लड़काक हाथमे सिन्दूर देल गेल. .. अचक्केमे राति जेना कारी भुजंग बनि गेल.... सभटा साज समान बीखा कीड़ा बनि गेल ।

लड़का सिन्दुर लऽ ठाढ़ भऽ गेल । भाइ ओकरा लग ओहि ना छल। मेहाके घेरने ठाड़ी ओकर संगी सभ ठिठिआय रहल छलि । प्रोफेसर साहेब स्थिर भावसँ मेहाक सीथमे सिन्दूर दऽ झपट्टा मारि मेहाक चारु संगीक माथमे सेहो सिन्दुर दऽ देलक ।

स्थिति भयावह भऽ गेल, धरती कांपऽ लागल, लोकक करेज हिलऽ लागल जे ई की भऽ गेल ? लड़का एना किएक कयलक ?

-हँ हम पाँचोसँ विवाह कयलहु, पाँचो हमर पत्नी छी - लड़का बाजल।

ई सुनि सभक चेहरा छाउर भऽ गेलैक । ककरो मुँहसँ कोनो शब्द नहि निकलि रहल छल ।

-'चारू लड़की हमर पत्नीकेँ पकड़ने, जकर की हम नामो नईं जनैत छी, वेदी घुमवा कालसँ लऽ कऽ सभ विधिमे रहलीह । शास्त्रक अनुसार पाँचो हमर पत्नी अछि ।

पंडित सभ माथ झुका लेने छलाह । अपन जीवनक एहि 'पोस्टमार्टम' के देखि मेहा स्तब्ध छलि । स्तब्धकताक एहि क्षणमे मौन मुखर भऽ जाइत अछि। एहि मौनमे त्रिशंकु जकाँ सभ लसकन छल कि एकाएक मेहा अपन नबकनियांक रूप त्यागि स्पष्ट रूपसँ लड़कासँ पुछलक, -'अहाँ हमर नामो नई जनैत छी । ई असत्य अछि।'

-'ई सत्य, अछि' प्रोफेसर साहेब बजलाह - 'विपुल बाबू एहि शहरमे आइ पाँच दिनसँ हमरा पकड़िकेँ रखने छलाह । अपन सहायता करबाक लेल ओहमरा एहिठाम अनलनि । हम बुझलहुँ जे हमरासँ यदि ककरो उपकार भऽ जायत ई हमर सौभग्य ओ कृतघ्न हमरा एकटा कोठरीमे बंद कऽ देने छलाह।

-तँ अहाँ शुरुएमे ई बात किएक नइ बजलहु । सभ विधक बाद बजलहुँ- डाक्टरक हृदय कमजोर भेल जा रहल छलनि ।

-हम कोना बजितहु ? हमरा लगक युवक सदिखन हमरापर चादरि तरसँ रिवाल्वर तनने रहैत छल । बरियातीमे जतेक गोट अछि ओ हमर नहि अछि । सभ टा विपुल बाबूक एक गिरोह अछि जे लड़काकेँ ठकि फुसिया कऽ आ पकड़ धकड़ि कऽ विवाह करबै वला धंधा करैत छथि ।

-ठीके, एतबहि कालमे नै तँ कतहु विपुल बाबूक पता छल हआनै तथाकथित बरियातीक । सभ केम्हर घसकि गेल क्यो नहि बुझलक ।

-सिन्दुर दानक बाद विपुल बाबू हमर जान अवश्ये छोड़ि दितथि तेँ हम इ खेल लयलहुँ ।

-दीन-हीन प्रोफेसरक हालपर जेना सभकेँ काठ मारि देने छल ।

-'नइ एना नइ होयत, कहियो नइ होयत तेजस्वी अणु अपन एक मात्र पुत्रीक ई गंजन देखि एकाएक- चिचिआ उठलीह ।

-अहाँ स्थिर रहू माँ । गंभीर स्वरमे मेहा बजलीह ।

-'अहाँ वेद मंत्र पढ़ने छलहुँ प्रोफसर साहेब ।'

-नइ हम डरसँ घिघिआइत छलहुँ तँ ओहि स्वर केँ सभ मंत्र बुझैत छल।

नेहा गरजऽ लागलि - प्रोफसर साहेब, जबर्दस्ती अहाँकेँ एहिठाम आनल गेल, विवाह मात्र वेद मंत्र पाठ आ सिन्दूरदान सँ नहि होइत छै। ओहि पाठ मे एकान्त भाव आ समर्णक क्षण होइत छैक । मुदा अहाँक प्राण अवग्रहमे छल। एहिठाम बैसल सभ पंडित पाँचो गोटाक संग अहाँक विवाहक मान्यता दऽ रहल छथि । की यैह थिक शास्त्र आ की यै थिक धर्म ? प्रोफेसर साहब हम अहाँके मुक्त करैत छी । हम एहि विवाहके नहि मानैत छी आ नै हमर संगी मानत। हम सभ एतेक गेल गुजरल नहि छी । प्रोफेसर साहेब - अहां विस्मित नहि होउ जे हम नारी भऽ कऽ कहि रहल छी । नारीक नियति मात्र विवाह छैक मुदा हम एकरा नहि मानैत छी । विवाह स्त्री-पुरुषक समर्पण थिक । हम एतेक छोट भऽ कऽ अहां के ई सभ कहि रहल छी । ई हम नहि हमर पिताक देल शिक्षा आ संस्कार थिक। हम असगर नहि छी । हमरा पाछाऽ हमर माता पिताक शक्ति अछि। हम एहि विवाहक सिन्दूरके नहि मानैत छी - जे बलजोरी देल जाय आ ओ सिन्दूर जे एके संग पाँच-पाँच गोटेकेँ देल जाय । धर्मक दृष्टिसँ मान्य भऽ जाय ई - हम कहियो नहि मानब ।

प्रोफेसर अवाक् । ओकर बुद्धि एकटा चतुर्थ वर्षक छात्राक तर्क-वितर्क, ओजस्विताक समक्ष निष्प्राण भऽ गेल छल । ओ की सोचैत छल । आ की भऽ गेल छलैक ? पूरा पासा पलटि गेलेक । सभ अतिथि बड़बड़ा रहल छल - घोर कलियुग आबि गेल । ने तँ एहन बदमाश छौड़ा देखने छलहुं आ ने एहन अगत्ती छौड़ी ।

डाक्टर साहेब आब स्थितिप्रज्ञ सन शान्त भऽ विहुसैत, कातमे चुपचाप ठाढ़ छलाह । अणुक हृदय स्थिर भऽ गेल छल । मेहा सेहो जलमय मेघ सन विनीत छलीह ।

-माँ, अहाँ अपन महिला संघक डर नहि करू । अहीं सभक आशीर्वाद सँ हम शक्तिमयी छी । पुनः प्रोफेसर साहेब दिस तकैत बजलीह -'हम अहाँकेँ मुक्त कऽ देलहु प्रोफेसर साहेब । महिला मुक्ति लेल आन्दोलन करैत छथि मुदा ओ ई नहि जनैत छथि जे मुक्त करबाक अधिकार आ शक्ति सबसँ बेसी महिलेकेँ छैक । अहां अपन घर जाउ । जे भेल ओकरा दुःस्वप्न बुझि बिसरि जाउ। लिअऽ निरर्थक सिन्दूरकेँ हम स्वयं मेटा दैत छी ई कहैत मेहा अपन माथक सिन्दूर पोछऽ लगली ।

प्रोफेसर साहेबकेँ लगलनि जेना को अस्तित्वव्यापी मूढ़ता मे पड़ल होथि। हुनक तंद्रा टूटल । अज्ञात सम्मोहनसँ आविष्ट भऽमेहाक हाथ पकड़ि लेलनि -अहाँ धन्य छी अहाँ पूज्य छी । हमर अपराध क्षमा कऽ दिअऽ। अहाँ हमर छी।

आस्तेसँ हाथ छोड़बैत मेहा बजलीह - 'नइ प्रोफेसर साहेब, हम एकटा उदास, पराजित पत्नीक जिनगी जीवऽ नई चाहैत छी । हम एहि विवाहकेँ स्वीकारब तँ समाजके कतको लड़का एहिना ठकि फुसिबाकऽ आनल जायत । जबरदस्ती ओकर व्याह कऽ एकटा निरीह लड़कीकेँ । सधवा बनाय विधवाक जिनगी जीवालेल छोड़ि देत । हम, स्वयं एकर विरोध करैत छी ।

-'ठीक छै, मेहा हम आयब । अपन सम्पूर्ण परिवारक संग बरियाती लऽ कऽ हम आयब । प्रोफेसर साहेबक हतशून्य आत्मसम्मान जागि गेल छल -'हमर अपूर्ण ज्ञानके पूर्णता अहाँ छी मेहा । अनचोके भेटल एहि दुर्लभ रत्नकेँ हम नई छोड़ब हम आयब -

◆◆◆

टूटा बाट

कतेक मर्मांतक पीड़ा होयत अछि जखन सागर-तीर पर ठाढ़ मानव लहरक स्पर्श नय कऽ सकय । अक्षय कोषक स्वामी रहितहु किछ देबा मे असमर्थ । हृदयमे उठैत ज्वार कें शब्द नय दऽ सकी, केकरो दिसि समर्पित हृदय कें, वस्तुवादी चेतना कें आध्यात्मिकताक गिरह सँ बान्हि देनाय - सतत हँसय वाला नीरज आइ मुस्काइयो नय सकैत अछि । नीरजक आँखि मे नोर स्वयं उपहास बनि जायत अछि । जकरा लेल इ नोर बहि रहल हुनका एहि सभ कें, एकर कोनो प्रतीति नय... नोर भावनाक उदगार अछि - अविरल बहि रहल अछि। - एक नय अनेक संबंधक लेल .... खुशी आ पीड़ा सँ भरज अश्रुकण ।

संबंधो विचित्र होयत अछि । कोनो एकटा संबंध-आँखि सँ टपकल बून्द जकां होयत अछि, जकर कसक सभ केओ चीन्हि जायत अछि । कोनो-कोनो संबंध, अधरक फुलझड़ी सन परिवार-समाज सभ कें उल्लसित कऽ जायत अछि। आ कोनो संबंध जकर चर्चा मात्र सँ आँखिक अश्रुकण पर प्रतिबंध लगब पड़ेत अछि - बड़ मुश्किल सँ पलक बंद कयओहि संबंधक बंधन कें खुशीक चाँदनी जकाँ अपन मोनक अंगना मे पसरल देखैत अछि । समस्त संसार, समस्त जिनगी मानु मानवक अन्तर मे बसल रहैत अछि आ प्रकटतः मात्र एकटा निसांस-नीरज एहि सभ संबंध मे ओझरायल मुदा सोझरायल बाट धयने दिल्ली विश्वविद्यालय मे अपन एकटा अलग अस्तित्व बनौने छल।

हेलो नीरज की भऽ रहल छैक - नीरजक जूनियर दोस्त विधु छल - सुनवा मे आयल अछि जे विधाक संग अहांक एफेयर ।

'माइन्ड योर लैंग्वेज एण्ड होल्ड योर टंग विधु -- नीरज तमतमाय उठल। सौरी नीरज - विधु ओहिठाम सँ खिसकि गेल ।

किछ क्षण लेल नीरज हतप्रभ भऽ गेल कोना साहस भऽ गेल विधुक । विश्वविद्यालय मे अपन रिजल्टक बल पर अपन धाख जमौने छल । केओ ओकरा सँ हल्लुक गप करैक साहसो नय करैत छल । होस्टलक कतेको कोठरी मे राति जवान भऽ रंगीन मादकता मे डूबि जाय। 'बॉयफ्रेन्ड' 'गर्लफ्रेन्ड' एकटा स्टैन्डर्ड मानल जायत छल। - ताहि ठाम विधुक उक्ति कोनो गलत नय छल - बे-चा-रा नीरजक अधर फड़फड़ायल। नीरज की कऽ रहल छी - चलु कत्तौ सँ घुमि आवी - बगलक कोठरी सँ परेश निकलि आयल । नीरजक अन्यतम दोस्त।

हँ परेश हम अहींक प्रतीक्षा मे छलौं - यार-विचित्र परिवेश अछि दिल्लीक ? लड़का लड़की मे कतेक अन्तर अपना देश मे मानल जाइत अछि । बेटीक जन्म पर दुःख आ बेटाक जन्म पर खुशी । मुदा, दिल्ली मे लड़का लड़की मे कोनो अन्तर नय - अपन अपन शारीरिक मानसिक आवश्यकताक पूर्ति करेत

अछि । देह सँ झटकल वस्त्र जकाँ एक फ्रेण्ड कें अलग कय दोसर कें अंगीकार करैत अछि - परेश दार्शनिक भेल जा रहल छल।

ठीक कहैत छी परेश - हमरा मोन पड़ै अछि जाहि दिन हम दिल्ली अबैत छलौं बी० ए० मे पढ़बाक हेतु हमर माँ बाबूजी एके बात कहने छलाह - बेटा दिल्ली मे दूटा रास्ता स्पष्ट खुजल अछि । एकटा बरबादी दोसर आबादी । जे बरबादीकक रास्ता पर डेग राखि देलक ओकरा लेल बरबादी आ तबाहीक सिवाय दोसर कोनो उपाय नय । सुरा-सुन्दरी, एलएसडी सभ किछु तँ । आ जे आबादीक रास्ता पकड़ि लेलक ओकर जिनगी मे सोनाक दिन चानीक राति होयत अछि.... नीरज भावुक भऽ उठल छल ।

होस्टलक समक्ष पार्क मे दूनू दोस्त बैसल । अलस हवा सभक गाल चुमि-चुमि बताहि जकाँ बहि रहल छल। कत्तौ कत्तौ 'गर्ल फ्रेण्ड बॉय फ्रेन्डक' मोडर्निटीक स्तर देल जा रहल छल, कोनो छात्रा अपन 'बॉय फ्रेण्डक' कटि मे एकटा हाथ देने आ एकटा हाथ सँ सिगरेटक छल्ला बनवैत ।

परेश आ नीरज विश्वविद्यालयक प्रतिभावान छात्र छल । राजनीतिशास्त्र सँ एम ए कय आब एम. फिल. कऽ रहल छल । दूनू दोस्तक दोस्ती सभ छात्रक लेल ईर्ष्या आ आदरक वस्तु छल । ठीक बजैत छी नीरज - ई उन्मुक्त वातावरण कुँठा सँ रहित सभ छात्र छात्रा अपन मदहोशी मे सभटा विस्मृत कऽ दैत अछि-

ओह नय परेश-कुंठा सँ रहित - इ नय बाजु अहाँ देखैत छी दिल्ली मे सभ सँ बेशी दहेजक शिकार लड़की भऽ रहल अछि । अहि दहेजक बीमारी आन जगह तँ दूर जे अपन मिथिला मे सेहो आबि गेल । जा धरि लड़की कॉलेज मे पढ़ैत अछ लड़की हेबाक हीन भावना सँ दूर उन्मुक्त वातावरण जीवैत अछि । इ किछ नय मात्र अपना के भुलएवाक प्रक्रिया थीक । नीरजक आँखि मे विघाक चेहरा अथाह समुद्र सँ नोरायल आँखि ओ सिंधी लड़की - ओकर सहपाठिनी - मौन मूक नीरजक लेल ओ सभ दिन समर्पित रहल । नीरज जानितो अनजान रहल - अपन दोस्तीक पवित्रता कें ओ जनैत छल ।

एकदिन विभागक छात्र छात्रा पिकनिक मनएवा लेल डर्ष्या.. लेक गेल छल । सभ अपन मस्ती मे हँसैत गावैत । नीरज चुपचाप झीलक श्यामल लहरि कें गीनि रहल छल । 'तू जहाँ कहीं भी जाए मेरा प्यार याद रखना' - गजलक कड़ी नीरजक कान मे किछ गावि गेल ओ चौंकि उठल - एकटा सम्मोहक स्वर मे विद्या गावि रहल छलीह । नीरज कें देखतहि एकटा विचित्र भावमंगी सँ ओ माथ झटकि मुस्काय चुप भऽ रहलीह । नीरजक भीतर किछ कॉपि-कॉपि गेल छल । अन्तर मे एकटा ज्वार उठल मुदा, पुनः वएहशान्ति, वएह मर्यादा रेखा- आबादी-बरबादी दूटा बाट - माता पिताक उक्ति ।

चलु कैफे के चाह पीबाक लेल - परेश बाजल - दूनू दोस्त अनमन सन अपन अपन भंवर मे डूबल-

चीनी मिट्टीक सुन्दर कप मे चाहक घोंट लैत नीरज बाजल - जनैत छी परेश हमहूँ अजीब व्यक्ति छी । गाम सँ दिल्ली अवय लगैत छी तँ स्टेशन पर माटिक कपटी मे चाह पीवा मे बड़ आनन्द भेटैत अछ ।

अच्छा-परेश हँसय लागल । से किएक ? - एखन अहाँक माटिक कप मोन पड़ि गेल ।

नीरज अपन आँखि चारू दिसि घुमाय देखलक कतेको लड़की लड़काक बाँहि मे बेसुध-कतेको अर्द्धनग्न वस्त्र मे भारतीय संस्कृतिक उपहास उड़ा रहल छलीह - एकटा नम्हर साँस लैत नीरज बाजल ...

माटिक प्याला भारतीय नारी थीक परेश जे एक व्यक्तिकक अधर सँ लागि अपन जीवनक अन्त कऽ दैत अछि - मुदा, चीनी मिट्टीक कप विलायती नारी थीक जे सभक अधर सँ लगैत रहैत अछ - नचैत रहैत अछि।

ब्यूटीफुल नीरज - रीयली ब्यूटीफूल - साँचे हम सभ एहि अवगुण सँ स्वयं कें बचाय लेलौं मुदा चीनी मिट्टीक कप तँ अधर सँ लगलै अछि - आ दूनू संगीक हँसी तनाव रहित छल ।

हेलो नीरज - विद्या ठाढ़ छलीह .... आउ बैसू बैसू विद्या । नीरजक पाछा बेहाल विद्याक स्थिति सँ परेश अवगत छल । विद्या अपन भावना सँ विवश । यदि नीरज ओकरा अंगीकार नय करत तँ ओकर माय बाप कत्तौ ओकर बेमेल ब्याह कय देत । जाहि ठाम मर्द निष्पक्ष, निरपेक्ष रहैत अछि स्त्रीक आकर्षण तीव्र होयत अछि । नीरज एकटा एहेन हस्ती छल जकर स्नेह आलोकक चाँदनी मे सभ आदर आ प्रतिष्ठा ओकर दैत छल मुदा स्वयं आकाश कुसुम सन - बैसू विद्या कहु की हाल छैक - स्नेहपूर्ण शब्दे नीरज बाजल ।

विद्याक दूनू आँखि दर्द सँ डबडबायल छल ।

एक मिनट नीरज - एक्सक्यूज मी विद्या - कहि परेश ओहिठाम सँ उठि अपन दोसर दोस्त सँ गप करय लागल -

हम अहाँ सँ किछ कहवा लेल चाहैत छी नीरज - साकार वेदना बनल विद्याक चेहरा नीरज कें तोड़ने जा रहल छल । ओ भावुक भऽ उठल - बाजू विद्या हम अहाँ लेल की कऽ सकैत छी ?

हमर ब्याह होय बाला अछि ... वेरी गुड, ई तँ खुश खबरी थीक । दुःख कथीक ?

नीरज, अहाँ नय बुझैत छी । हम अहाँ बिन नय रहि सकैत छी । आइ कान्ट लीव विदाउट यू नीरज । प्लीज....

आ हिचकि हिचक कानि उठलीह । टेबुल पर हाथ मे मुड़ी नुघरौने - रुदनक आवेग सँ ओकर समस्त देह कांपि उठैत छल - नीरजक हाथ भावावेश मे ओकर माथ पर सांत्वना देवा लेल, प्यार देवा लेल, विश्वास देवा लेल उठल - विचित्र सम्मोहन - आर्द्र अनुभूति मे डूबल नीरजक भावुक मोन! विद्याक

बिखरल केश राशि आ नीरजक स्वर्णातुर आंगुरक मध्य एकटा आकृति नाचि उठल माता पिताक - आध पेट खाय, आध वस्त्र पहिरैत संतानकें पैघ आदमी बनैक कामनाक संग सांस लेबऽ वाला माता पिता - टूटा बाट आबादी-बरबादी-मोने उठल एकटा घटना - ओकर काका पढ़वैत छलखिन, विजय कें - कतेक विश्वासक - आशाक संग... मुदा, विजय बरबादीक रास्त पकड़ि लेने छल - माय बापक विश्वास कें ठगइत पैसा बुकि रहल छल - वस्तुसिथिति ज्ञात भेला पर ओकर पिताक हार्टफेल भऽ गेलैक - नहि सहि सकलाह .... नीरजक हाथ थरथरा गेल - अंगुर सिहरि-सिहरि वापस आबि गेल। भीषण अन्तर्द्वन्दक अल - जाल अन्तर मे तूफान मचबैत रहल । विद्याक सर्वांग रुदनक आवेग मे कांपि रहल छल ।

जेना प्रकाशक हजारो ज्योति स्फुलिंकग अन्तरिक्ष सँ बरसय लागल - विद्या - अहाँ हमरा बिन नय रहि सकैत छी - हैं हैं - नीरज - इट इज टू... विद्याक पैघ पैघ आँखिक आँगन मे स्वीकृतिक गुलाब खिलि आयल।

कतेक भाग्यवान छी हम विद्या । हमहुँ अहाँके बड़ मनैत छी । जाहि ठाम समस्त दिल्ली यांत्रकिता मे जीवी रहल अछि । अपन राग रंग मे एक दोसराक देखबाक फुरसत ताहि ठाम अहाँक हृदयक निश्छलता मे हमरा देवताक आभास भेटल । मुदा, विद्या एक बातक उत्तर दियऽ - की प्रेम आ स्नेहक परिणति मात्र ब्याह थिक? की ब्याहक बिन प्रेमक कोनो निष्कर्ष नय ।

विद्या मौन मूक .... विद्या, कतेक उछाह सँ हमर माय बाप हमरा दिल्ली पढ़बा लेल भेजलैथ - पैघ आदमी बनवाक लेल । अहाँक माय बाप अपन अलग सपना पालने छथि । मुदा, क्षणिक आवेश मे आवि हम सब ब्याह कऽ ली ई शारीरिकता थीक विद्या, प्रेम नय, प्रेम तँ एकटा उच्च भाव थीक जाहि मे एक दोसराक कल्याण सोचि एक दोसराक संघर्षक मुस्कान बनी ।

विद्याक आँखि सुखि गेल - नीरजक महासागर व्यक्तित्वक समक्ष स्वयं के तुच्छ बुझए लगलीह - नीरज, यू आर ग्रेट - ठीक बजैत छी - आय वाज रौंग । नय विद्या, गलत नय तँ हम छी आ नय अहाँ ? हम सभ एकटा एहेन प्रवाह मे बहि रहल छी - एकटा एहेन होड़, जाहि ठाम अपन सभ सम्बन्ध, सभ संस्कार अपनत्व, अपेक्षा बिसरि गेल छी । हम सभ मात्र अपना लेल जीवि रहल छी । बी जॉली विद्या - हमर सभक कृतित्वक आगू हमर माता पिता, समाज देश गौरव सँ भरि उठय - इ हमर प्रतिबद्धता रहबाक चाही - विद्या निर्निमेष ताकि रहल छलीह नीरज कें - सम्मोहित जकाँ अपन तरहथ आगु बढ़ाय देलीह - भाव बुझि नीरज ओहि तरहथ पर प्रतिबद्ध भऽ अपन हाथ राखि बाजल - अपना लेल तँ सभ जीवैत अछि विद्या हम सभ परिवार लेल, समाज लेल, देश लेल जीयब।

◆◆◆

कर्त्तव्य-बोध

आइ महेन्द्र बाबूक पत्र आएल अछि । ओ सभ बरिआत लऽ बीस तरीखकें अओताह ।

उषाक कानमे पिताक स्वर पड़ल । ओ सतर्क भऽ गेलि । हम की बाजलहुँ, सुनलहुँ नहि की ?

हँ, सुनि रहल छी आब किछु सुनबाक शक्तियो रहल ? जे होइत छैक होबए दिऔक - फाटल दूधक स्वाद मायक स्वरमे छल ।

की बजैत छी उषाक माय । बेटीक माथ पर लागल कलंक मेटा रहल अछि । कुमरम कएल लड़की आ लड़का तखन भागि' गेल । की मन:स्थिति हतैक उषाक । आइ दू मास बादे लड़काके सुमति भेलैक... आ कनेक फुसफुसाके बजलाह आ चालीस हजार टकोतें गनने छी.... ।

उषाक सर्वांग हवामे उड़ैत बेसहारा पीपरक पात जकाँ डोलए लागल - एकटा जूड़ीपात, एकटा सन्निपात उषाक मन:स्थिति - पापा कहियो बुझलन्हि उषाक मोन । बेटीकें चीन्हि नहि सकलाह सभ दिन क्लासमे फर्स्ट करैत रहलि, पटना विश्व विद्यालयमे अपन स्थान बनौने । जाहि वीमेन्स कॉलेज नामसँ बिहार भरिक छात्रा तरसैत अछि, जहि वीमेन्स कालेजक "टैलेन्ट" सँ पटना विश्वविद्यालय गौरवान्वित होइत अछि-ओहि ठाम सँ उषाकें "ग्रेजुएशन" कराए प्रथम श्रेणी आनऽवाली उषाकें पीठ ठोकि प्रिंसपल कहले छलीह - वी हैव प्राउड फोर यू- हमे तुम पर गर्व है आ उषा झुकिकें ओहि क्रिश्चिएन प्रिंसिपलक पएर छुवि लेने छलि । उषाक संस्कार शिष्टाचारसँ हिम जकाँ द्रवित भए वात्सल्यक धरि उमड़ाए देने छल ओ क्रिश्चिएन प्रिंसिपल ......। गो अहेड - गो अहेड लाइक सन एंड मून ।

मुदा, शिवनाथ बाबू, धर्म-भीरू समाज-भीरु भए बेटीक पढ़नाइ बीचेमे रोकि वियाहक जोगार करए लगलाह। एतेक तेजस्विनी लेल वर कतएसँ कीनब? पेट काटि-अपन एकमात्र बेटीकें उच्च स्थान पर उच्च शिक्षा देवाक प्रयास केलन्हि । दूटा छोट बेटा स्कूलमे छलन्हि । पैष बेटी उषाकें ओ आकाशक नीलिमामे जगमगाइत नक्षत्र जकाँ देखवा लेल चाहैत छलाह मुदा, अचानक ओ समाजक रूप टका पर बिकाइत बेटा आ बेटाक मायबापकें देखि जेना सतर्क भए गेलाह । हमर उषा सन कैकटा बेटी होएतीह - भारती मैत्रेयी गार्गी....

हम अपन बेटीकें कलक्टर बनाएब ? विवाह नहि करब - उषाक माय सभ दिन प्रतिवाद करैत रहलीह-

गौरा, हम जानैत छी बेटी कतेक मेघावी अछि । एक बेरमे ओ सभ कम्पीटीशन पास कए लेति । मुदा की बापक कर्त्तव्यक नहि अछि जे नीक

वर-घर देखि ओकर गृहस्थी बसाए दिअए ? मानि लिए हम अचक्के आँखि मुनि ली ?

छि, छि, की बजैत छी ।

ठीकेतें कहैत छी । एहि समाजमे के ककर होइत छैक ? आ बेसी पढ़ि जाइत तैं योगय वर कतएसँ आनब? - आइ पैसाक युगमे सभ किछु पैसा भए गेल अछि । पैसा अछितें अहाँ धर्मी छी गौरा, आनहितें अधर्मी । अहाँ देखैत नै छी जे जतेक अधर्मी अछि, ओकर ओतवे विकास भऽ रहल अछि आ हम भोर खाइत छी तँ राति लेल झखैत छी - राति खाइत छी तँ भोर लेल । एतेक सुन्दरि, सर्वगुण सम्पन्न बेटी लेल कतऽस बर आनब गौरा । पहिनेतँ अपना समाजमे टाकाक चलन नहि छल । कतऽसँ आबि गेल ई रोगहा प्रथा ? बेटा-बेटीतँ भगवान सभकें देने अछि । बेटीमे एतेक कायर आ बेटामे एतेक नृशंस लोक कोनो भऽ जाइत अछि? ठीके कहैत छैक बेटीकें सभ किछु दऽ सकैत छी, भाग्य नहि ... एकटा शब्द-निसांस वातावरणकें सिहरा देलक।

पढ़ाई छोड़बाक नामसँ उषाकें झटका लागल छलैक ओकर सोनजूही सपना छिन्न-भिन्न भऽ गेलैक । मोरपंखी हृदय मौलाए गेलैक मुदा, संस्कार छलैक जे माय बापक इच्छाक प्रतिवाद नहि कएलक घरेमे चुप-चाप एम. ए. क तेयारी करैत रहलि । ओकर अन्तरमे आत्म-विश्वास दीप सतत जरैत रहै छलैक ओ कहियो गलत बाट नहि पकड़ति आ ने कहियो खराब होयति । मुदा, आक्रोश छलैक-एतेक 'एडवांस' रहितो पापा अतीतजीवी रहि गेलाह । परंपराकें तोड़ि नहि सकलाह आ हम सभ वर्त्तमानजीवी छी। भगैत क्षणकें पकड़ि जीवालेल चाहैत छी ।

गौरा उषाक दहेज विरोधी मोनकें जनैत छलीह । तें विश्वनाथ बाबूकें कहने छलीह टाका पैसाक कोनो गप करबतँ उषासँ नुकाकें नहि तँ अनर्थ भऽ जाएत ।

आ चालीस हजारमे इंजीनियर वर, सेट्ल नहि पढ़ैत (सेट्लक दाम आब लाखसँ ऊपर आबि गेल) ठीक कएलन्हि शिवनाथ बाबू । ई चालीस हजार बेटीक सुन्दर भविष्यक लेल सुखद भविष्यक लेल कोना, कोना जमा कएलन्हि केकरा -केकरा लग अपन जीवन बन्धक रखलन्हि ओ - ई एकटा करुण कथा अछि । आ सभ किछु देवाक बाद ओ बेटीकें भाग्य नहि दए सकलाह । बिआहक 'कार्ड' छपि गेल छल । सर-सम्बन्धी सभ आवि गेल। दही पौराए गेल। हलुआई बैसल छल ......

उषा अपन पढ़ाइक दुख बिसरि नवीन दुनियाक कल्पनामे मौलसिरी लता सन संगी लोकनिक हास परिहासमे झुमि गेलि । आइ कुमरम छलैक, भोरेसँ मटिकोड़ । घर-दुआरि मे नवीन चहल-पहल, नव उत्साह, नव राग, नव रंग, पसाहिनक डाला संग पिसिऔत पितिऔत भौजी हास-परिहासक भाङमे मातलि.

अचक्के ढोल पिपहीक स्वर रूकि गेल । श्वेत परिधान पर जेना स्याहीक सौंसे बोतल खसि वातावरणकें उदास कए देलक । उषाके लालिमा घोर अन्धकारमे परिवर्तित भऽ गेल हो जेना ।

लड़का भागि गेल लड़का भागि गेल । काल्हि वरिआती नहि आओत । कुमरम नहि होएत.... लड़का भागि गेल.... समस्त दिशा सँ जेना भीषण चीत्कार उठि रहल छल... लड़का भागि गेल आ उषाक हृदयक वर्णन करबाक शक्ति विश्वक कोनो लेखनीमे नहि ।

बलिपशु सन उषाक हृदय आहत छटपटा रहल छलैक मुदा, ऊपरसँ ओ निर्वात निर्वाक दीपशिखा सन मौन, मूक.... नहितँ नोर ने मुस्की.... ई अचक्के की भएगे लैक ? दोसर दिन विआहक समय तक उषाक हृदयमे आशाक किरण छलैक कहीं बरिआती आबि जाए । कही लड़का आपस आबि गेल होअए कहीं काल्हुक बात फुसि होअए शिवनाथ बाबू गौरा उषा तीनूक हृदय असहय वेदनाक सागरमे डूबल, आशाक क्षीण तप्त लहरि संग.... मुदा बीति गेल । विवाहक रातियो बीति गेल । तखन उषाकें चेतना अएलैक । ई की भऽ गेलैक ? कीसँ की भऽ गेलैक? विआहक नाम पर हमर अपमान करबाक ओकरा कोन अधिकार छैक ? ई माय-बाप बेटीक विआह लेल किएक चिन्तित रहैत छथि ? बेटाकें किएक नहि बोझ बुझैत छथि ? बेटा 'सेटल' करत तखन बिआह, आ बी. ए. क बाद बेटी बोझ... ई ग्लानिमय स्थिति जाधरि स्त्री स्वयं स्वीकारैत रहति ताध रि स्त्री एहिना भाग्यक हाथक कठपुतरी रहति ।

आ आस्ते, आस्ते उषाक हृदयमे आत्म विश्वासक दीया पुनः जरए लागल... पापा ठीके तँ अहा सभ किछु दइ हमरा भाग्य नहि दऽ सकैत छी। अहाँ सौभाग्य देवा लेल चाहैत छलहुँ, दुर्भाग्य देहरीए पर छीकि देलक... आब हमरा अपन भाग्य स्वयं बनवए दिअ पापा, हमरा एम.ए.क परीक्षा देमय दिअह पापा।

गौरा, शिवनाथ बाबूक हृदय काटल वृक्षक आर्त्तनाद लेने छल । उषा बिसरि गेलि । दुर्भाग्यक क्षण कहियो जीवनमे आयल छलैक । जीवनक किताबसँ अपन अतीतके फाटल पन्ना जकाँ फेकि देलक ।

मुदा, आइ चारि मास बाद फेर ओएह बात-चालीस हजार टाका देने छी. .. तँ पापा चालीस हजारमे एहि इंजीनियरकें खरीदकें अनने छलाह जकर ई भविष्य नहि जे नौकरी भेटते' कि ठेकेदारी करत.... तिलमिला उठलि उषा... चालीस हजार, चालीस हजार.... ओएह लड़का जे समस्त परिवार समाजक समक्ष हमर अपमान कए गेल.... चालीस हजार पता नहि टाका पर बिकाएल वर कोना कार पर चढ़ि बरिआत साजि अबैत अछि विवाह करबा लेल, पौरुषहीन, क्लीव... टाका पर बिकाएल घृणासँ, वितृष्णा सँ उषा विपण्ण भऽ गेल छलि. ... मुदा, उषा आब ओ उषा नहि रहलि....

हवा जकाँ क्षण भरिमे बात पसरि गेल । बीस तारीखकें ओही लड़कासँ

उषाक विआह अछि... । घरमे पुनः ओएह गहमागहमी मुदा, मोनमे एकटा आशंका । फेर पुनरावृत्ति नहि होअए... उषा बलिक बकरा जकाँ सभटा विध करबैत रहलि । निरीह अबला-समाजक दर दिआद - आहा बेचारी बड़ दुःख भोगलीह... बेचारी.... बरिआती दुआरि लागि गेल । सरिआती बरिआतीमे उत्साहक लहरि व्याप्त छल । उषाकें खूब नीकसँ सजा धजा कें परिछनसँ पहिने जयमाल लेल दुआरि पर सखी बहिनपा सभ लए गेलीह । मुड़ी नुघरौने थर-थर कँपैत उषा आ मोर पहिरने खल-खल हँसैत वर ! बरिआती सरिआती सम्मोहक दृष्टिसँ निहारि रहल छल । वरक हाथ उठल जयमाल लेने आ जेना बिजली चमकि गेल. ... । हजार दस हजारक वोल्ट जेना एकेबेर चकमका गेल.... अबला भऽ गेलि सबला... माथ पर सँ दुपट्टा खसाय वरक जयमाल वाला हाथ खट्ट दए पकड़ि लेलक.... बस, बस, बहुत भेलैक.... रणचंडी हुँकारि उठल .... जे व्यक्ति एकटा लड़कीक मर्यादाक रक्षा नहि कऽ सकल ओ अपन पत्नीक रक्षा कहियो नहि कऽ सकत । हम अहाँसँ कथमपि विआह नहि करब । हम जखन विआहक समाद आयल छल तखने मना कए दितहु... मुदा, हम चाहैत छलहुँ जेना कुमरम कएल लड़कीक बरिआती नहि अबैत छैक, तहिना दुआरि लागल बरक आपसीक की मनः स्थिति होइत छैक.... ई अहाँ अनुभूत करू । हम धैर्य बन्हने रही... रणचण्डी दहाड़ि रहलि छल । समस्त वातावरण आवाक । घोर अपमानसँ बर आ बरक बाप थरथरा रहल छल ।

पापा ! अहाँ जनैत छी हम कीनल लड़कासँ विआह नहि करब । मुदा, हमरासँ नुकाकें अहाँ सभ काज कएलहुँ । हमर अभाग्य बरक बाप दिस देखैत. ... अहाँ अपन बेटाकें लए जाउ । फेर कतहुँ भजा लिअ आ विश्वास कऽ लिअह जे हमर पापा अपनाकें बन्धक राखि चालीस हजारमे अहाँक, बेटाकें किनलन्हि। ओ हम आपस नहि माङब । जाउ, अहाँकें टाका देलहुँ, अहाँक बेटाकें दासतासँ मुक्त कए देलहुँ.... जाउ निकलि जाउ.... पापा, हम कहने छलहुँ, अपन भाग्य हम स्वयं बनायब... अपन बापके बन्धकसँ छोड़ाएब, बेटे नहि, बेटीओक कर्त्तव्य थिक ।

◆◆◆

लांछित के ?

लोक कहैत अछि-एहि लेडीक रेपुटेशन नीक नहि छैक'- अनुभवक बात सुनि लेखा चौंकलीह नहि अपितु चुप्पे रहि गेलीह।

-लोक एना किएक बजैत अछि लेखा' ? अनुभवक प्रश्न छल ।

-अनुभवक बाबू मोन नहि होइत छल जे एहि बातक जबाब हम कहियो दी ! आदमीकें जखन कोनो काज नइ रहैत छैक तँ ओ यैह सभ गप्प करैत अछि। कतेक ध्यान ककर बातपर दी ! हम जे छी से ईश्वर जनैत छथि आ हमर पति समीर । ककरोसँ हमरा काजे की ।

-नई लेखा,-आई जखन मौका भेटल अछि तँ हम बुझऽ चाहैत छी आखिर किएक ?

-अनुभव बाबू, अहाँ हमर सभक घनिष्ठ छी । आइ काल्हि ई मित्रता कतऽ भेटत ।

अकस्मात ट्रेनकें एकटा धक्का लागल आ ट्रेन रूकि गेल । लेखा देखऽ लागलि जे कोन स्टेशन छियैक। हइतैक कोनो छोट मोट स्टेशन - अनुभव ध्यान हटबैत बाजल ।

सौंसे स्टेशनपर दुपहरियाक रौद पसरल छल । रौदक ई चढ़ैत यौवन कतेको गोटे लेल असहय छल तें आँखि ओम्हरसँ हटा लेने छलाह । कतेको रसिक रौदक एहि निर्लज्ज जवानी कें आँखिपर कारी चश्मा लगा निहारि रहल छलाह ।

लेखाक अधर सुखा रहल छल ताप जप्त- उदास - लेखा ।

-'पिआस लागल अछि की' ? अनुभव पुछलक ।

-'अरे, अहाँ कोना बुझि गेलहुँ' ? लेखा प्रश्नपर प्रश्न कएलक ता धरि गाड़ी खुजि गेल ।

पानि तँ पहिलुके स्टेशनपर खतम भऽ गेल छल ।

-'अहाँ बजलहुँ किएक ने ?

-ई तँ पानिक पिआस छी अनुभव बाबू, एकरा कहुना सहि लेब मुदा मृत्युक पिआस जे हमर जिनगीकें लागल अछि ओ कोना भेटत ?

-अहाँ मरबा लेल किएक सोचैत छी लेखा । जकरा एतेक नीक पति होइक, जकर जीवन मे एतेक खुशी रहैक ओ मरबा लेल किएक सोचत ?

लेखा खिलखिला उठलीह - जे बेसी सेन्टीमेटल होइत छैक ने अनुभव बाबू ओ सभ बात उल्टे बजैत अछि। ओ 'सेन्टीमेन्टल' नै भऽ कऽ -'मेन्टीमेन्टल' भऽ जाइत अछि । दुनियासँ फराक, मानवक दृष्टिमे उपेक्षा आ उपहासक वस्तु? - लेखा कनी स्थिर भेलीह आ पुनः बाजऽ लगलीह- 'अनुभव बाबू समीरेक विश्वासक संवल लऽ कऽ तँ जीवि रहल छी । चिन्हलोकें नै चिन्हैत छी ।

गाड़ी अपन चालिमे दौड़ि रहल छल मुदा के जनैत छल जे लेखाक अन्तरमे कतेक प्रलयंकारी विरड़ो उठि रहल छैक । 'लोक कहैत अछि...' आ एकर आगुक शब्दक ओ कल्पनोमे नहि आनि सकैत छलीह । लोकक लगाओल एहि कैक्टसकें अनुभव कतेक निर्ममतासँ ओकर अन्तरमे गड़ा देने छल ? कैक्टसक दंशसँ ओ भीतरे भीतर छटपटा रहल छलीह । आहत स्वर कलेजाकें छीलि रहल छल ।

-'हम वयस्क शिक्षा विभागमे काज करैत छी । अहाँ जनिते छी अनुभव बाबू । समीरक विश्वासे नहि अपितु हुनकर जबर्दस्तीए हमरा एहि क्षेत्रमे अनलक। साधारणतः वयस्क शिक्षा आँगनबाड़ी वा कहु जे कोनो क्षेत्रमे कार्यरत महिलाकें लोक बड़ हल्लुक बुझैत अछि । हम तँ किछु परिस्थिति कारणें आ किछु कऽ देखबाक लालसासँ समीरक अनुरोधक आगु अपनाकें समर्पित कऽ देलहुँ । -एकटा उसाँस लैत लेखा बजलीह -अनुभव बाबू ई पुरूष, ई महिला, ओह, एकरा ईर्ष्या भाव कही-की अहंकार भाव-की आलोचना करबाक एकटा 'नेचर' मात्र ? -आ लेखाक मोनमे किछु सुगबुगायल जेना कोनो इतिहास कोनो महाभारत, कोनो रामायण । एकटा बात कहियो सोचने छी अनुभव बाबू रामायण मे अनावश्यक जोड़ल प्रसंग ?

अनुभव बाबू उत्सुक भऽ उठलाह । लेखा जारी छलीह-'रावण लगसँ सीता अयलीह तँ अग्नि परीक्षा देलनि। ठीक छै मानि लेलहुँ । लेखनी अहाँक हाथमे अछि । अग्नि परीक्षा देबे करतीह -राम नहि मात्र सीता । चौदह वरखक वनवासक बाद रामक राज्याभिषेक? रामायण तखने खतम भऽ जयबाक चाही? राम राज्यक सभसँ पैघ कलंक रहल एकटा धोबीक कथनपर पत्नीक त्याग । एहिसँ मानवता के कोनो आधार नहि भेटैत छैक । जन्मजन्मान्तरधरि सुख दुखमे पत्नीक संग देबाक शपथ ओ लेने छलाह । मुदा सुखक क्षणमे ओ सुख एकसरे भोगि लेलथि आ सीता? अनुभव बाबू आइयो धोबीक कमी नै अछि, रावणो अछि, राम नहि छथि, एकाध राम छथिओ तँ धोबीक बातपर पत्नीकें निर्वासित नहि कऽ स्वयं पत्नीक संग राज्य छोड़ि निकलि जाए बला । रामक राज कएलासँ तँ प्रजा आ देशपर कोनो खास उद्धारक गप नहि भेल ....'

-'लेखा तखन रामायण कोना लिखल जयतैक, लव आ कुशक जन्म वाल्मीकि आश्रममे भेलतँ... अनुभवक बात कटैत लेखा बजलीह -अनुभव बाबू कोनो ने कोनो वाल्मीकि सीता-रामक कठोर वनवास, रावण वधकें शब्द देबालेल अवश्य प्रकट होएतैक । धोबी प्रसंगमे आजुक समाजक जे स्थिति अछि से स्पष्ट अछि। जे सत्य अछि ओ तँ लिखले जाएत ने ? ओ तँ सीता रामक जीवनी थिक - अनुभव बाबू अधीर होइत बजलाह।

-नहि अनुभव बाबू, अहाँ तँ विचारवान लोक स्वयं छी ? जे सत्य अछि लिखले जाए इ कोन आदर्श? जहर पचाऽ अमृत बँटबाक चाही जाहिसँ मानवताक उद्धार भऽ सकए आ हम ...।

अकस्मात गाड़ी रूकि गेल । लेखाक गप ओही ठाम रहि गेल आ अनुभव बाबू स्टेशन देखऽ लगलाह। -'प्रायः कोनो जक्शन थिक । गाड़ी एहिठाम दस मिनट रूकत । बोतल दिअऽ पानि आनि दैत छी ।'

बोतल निकालैत लेखा बजलीह -'दस मिनट गाड़ी रूकत तँ हमहूँ नीचा उतरब । ओहि फर्स्ट क्लासक डिब्बामे बैसल एकटा दम्पतिकेँ समान देखैत रहवाक लेल कहि दुनू गोटे स्टेशन पर उतरि गेला ।

लेखा किछु क्षण लेल डिब्बाक औनाहटि बिसरि गेलीह ।

पानि पीबाक बाद चाहक चुस्की लैत एकाएक अनुभव हँसय लगलाह । लेखा बजलीह -एकटा गप कहू अनुभव बाबू । अहाँकेँ कोनो बातक 'कम्पलेक्स अछि ? अहाँ प्रत्येक क्षण कोनो ने कोनो टेंशनमे रहैत छी ।

-नै अहाँ गलत बुझैत छी लेखा, हमरा कोनो टेंशन नहि रहैत अछि। अनुभव अपन बातपर जोर दैत बजलाह।

-'अहाँ एहि बातकेँ फील नहि करैत छी मुदा ई सत्य अछि । अहाँ टेंशन फ्री तखने रहैत छी जखन अहाँ खिलखिला कऽ हँसैत छी । अहाँक एहि निश्छल हँसीमे हम आ समीर एकटा अपूर्व दोस्ती देखलहुँ आ हम सभ अव्यक्त विश्वाससँ भरल रहैत छी ।' -ओह लेखा अहाँक मोन बड़ दूर दूर धरि देखैत अछि । हमर मोनमे अहाँक रामायण प्रसंग नचैत छल।'

ताबत गाड़ी सीटी दऽ देलक । दुनू गोटे दौड़ि कऽ अपन डिब्बामे चढ़ि गेलाह । अंग्रेज दम्पति हुनका सभकेँ देखि विहुँसय लागल आ ओ सभ धन्यवादक आभार दैति बैसि रहलाह ।

लेखाक मोन किछु हल्लुक भऽ गेल छल । ओ समीर नै अपितु समीरक विश्वासकसंग गठबंधन कएने छलीह । आ ई विश्वास अटूट छल, अविच्छेद्य जकरा संसारक कोनो षडयंत्र, कोनो बदनामी नहि तोड़ि सकैत छल।

-'अनुभव बाबू ई तँ निश्चित अछि आ एकरा हमर घमण्डो बुझि लिअऽ जे हमर इच्छाक विरूद्ध क्यो हमर आँगुरो छुअत तँ ओकर आँगुर गलिकेँ नष्ट भऽ जाएत ।-

-'यदि हम छुबि ली तखन ?' अनुभव बाजल । चकित भऽ अनुभवकेँ पढ़ऽ लगलीह लेखा । ओकर अधर काँपि गेल- जनैत छी अहाँक मोनमे कलुषता नै अछि । अहाँक स्पर्श एकटा दोस्तक स्नेहिल संस्पर्श होयत वरदानसँ भरल ।'

-'बेस बुझलहुँ ।' किछु सोचैत अनुभव बाबू बजलाह । अहाँक अधर कखनो-कखनो काँपऽ किएक लगैत अछि लेखा ? पता नै।'

-'नै हम बुझैत छी, ई इमोशनसँ काँपऽ लगैत अछि ।'

चेहराक भावकेँ कठोर करैत लेखा उपेक्षासँ बजलीह - हम एहि सभ फालतू बातपर ध्यान नहि दैत छी।' अनुभव बाबु, अहाँ एकटा स्नेहशील मानव छी । अहाँक हृदयमे हमरा सद्भवनाक ओ झरना भेटल जे हमर शुष्क अन्तरमे संवेदनाक रस बरसा गेल । हमर आत्मा धरि पसरल उदासीक जहरकेँ अपन

रागक वेग मे बहा लऽ गेल। एकटा एहन स्नेह जे पूजा थिक, मानव मानवसँ कऽ सकय तँ धरती नन्दन कानन बनि जाय ।'

'लेखा, हम कोनो कवि आ लेखक तँ छी नहि, हमर अनुभूतियो सुखा गेल अछि । अहाँक आदर, अहाँक सम्मानमे हमरा लग मात्र शब्दहीन भाव पूजन अछि । अहाँ आर पैघ, आर पैघ मानवताक धवल आकाशक चन्द्रहार बनू । क्यो अहाँक विषयमे किछु बजैत अछि हमरा ककरो बातपर विश्वास नहि अछि, हमहुँ दुनिया देखने छी, हमहुँ लोककेँ चिन्हैत छी।'

-'अनुभव बाबू ई अहाँक महानता अछि । मुदा इहो बुझि लिअ जे हमरा ककरो दयाक आवश्यकता नहि अछि । ककरो सहानुभूति नहि चाही, अहुँक नहि चाही, अहुँक नहि ।'

-'नहि लेखा हमरा गलत नहि बुझू । हम दया नहि कऽ रहल छी मुदा अहाँक सहसँवेद्य होयबा लेल चाहि रहल छी । वस एतवहि ।'

समय गाड़ीक संग बढ़ल जा रहल छल । तीव्रता छल, भगल जा रहल छल मुदा समयक एहि तीव्रतासँ अनभिज्ञ दुनू यात्री अपन गप्पमे डुबल छलाह । गाड़ीक गति किछु मद्धिम भेल- लगैत अछि कोनो स्टेशन आवि रहल छैक ।'

लेखा किछु नहि बजलीह ।

-'आब अपन गंतव्य लग आबि रहल अछि ।' अनुभव बजलाह ।

-गंतव्य तँ अएवे करतैक । एखन आबऽ कि दू घंटाक बाद वा दू दिनक बाद । मुदा ई समाजक लोक ककरो बरबाद करबामे नहि हिचकैत अछि ।

बड़का-बड़का पदपर काज करैत मुदा सभक एके हाल अनुभव बाबू हम आइ धरि ककरो अधलाह तँ दूर जे ककरो अनिष्टो नहि सोचने छी तँ हमर अनिष्ट करवासँ पहिने एक वेर भगवानोक हाथ काँपि जायत ।'

गाड़ी एकटा झटकाक संग रूकि गेल । लेखा बड़ जोरसँ डगमगा उठलीह । अनुभव हुनका सम्हारि लेलनि मुदा इ सम्हारब अनुभव बाबूक तनकेँ विद्युत करेन्टसँ भरि देलक ।

दिन रतुका आंचरमे निष्पंद पड़ि गेल । डिब्बासँ अंग्रेज दम्पति कखन उतरि गेल ई दुनूमेसँ क्यो नहि बूझि सकल । हिनका दुनू गोटेक गन्तव्य एके छल मुदा पड़ाव फराक । संयोगसँ दुनूकेँ रस्तामे भेट भऽगेल आ खुशी-खुशी अपन घर जा रहल छलाह ।

'चाह -गरम चाह' -रातुक निस्तब्धता केँ चीरैत स्वर आएल । दुनू गोटे माटिक चुक्कड़मे चाह लऽ पीबय लगलाह ।

-'अहाँसँ भेंट भऽ गेल तँ हमहुँ फर्स्ट क्लासमे चलि अएलहुँ । नै तँ हमर सेकेन्ड क्लास जिन्दाबाद ! ओहुना फर्स्ट क्लास सुरक्षित नहि होइत अछि ।'

-'हँ लेखा फर्स्ट क्लासमे बैसि कऽ माटिक चुक्कड़मे चाह पीयब इहो जिनगीक एकटा मजा थिक ।

-'जिनगीक मजा हम कहियो नहि बुझलहुँ अनुभव बाबू । हम जहिया

मौज करबा लेल चाहलहुँ हमर कपमे जहर भरि देल गेल मुदा हम कहियो ध्यान नहि देलहुँ । मानवक संगमे जे रहैत अछि वैह दोसराकेँ दैत अछि। ओ अमृत बाँटय वा जहर प्रेम आ कि निन्दा । कहियो बोधगया गेल छी अनुभव बाबू ?

-'हँ, किएक नहि, कतेको बेर । '

-'ओहि ठाम भरतीय बुद्ध मंदिरक अलावा तिब्बत, जापान, चीन, थाइलैंण्ड आदिक वनाओल बुद्ध मंदिर देखने छी ?'

-'हँ लेखा ।'

-'की देखलहुँ ।'

-'एकसँ एक कलाकृतिक अनुपम नमूना सभ ।'

-'बस एतबे ।'

-'नइ अनुभव बाबू - भारतीय बुद्ध मंदिरक प्रतिमा विशुद्ध भारतीय युगसँ चलि आयल बुद्ध मूर्ति । मुदा आर सभ देशक मंदिर आ बुद्ध मूर्ति ओहि देशक मानसिकताक अनुरूप अछि । तिब्बती मंदिर लगैत अछि जेना कोनो तिब्बतीक घर होअय आ मूर्ति कोनो तिब्बत वासी सन । चीनी बुद्ध कोनो चीनवासी सन - अनुभव बाबू हम चमत्कृत रहि गेल छलहुँ । हम जएह छी लोककेँ ओहिना देखैत छी ।'

-लेखा, सरिपहुँ अहाँ विलक्षण छी । आइ संयोग भेटल तँ एकटा बात आर पुछिएलैत छी ? अनुभव बाजल।

लेखा कनिको उद्विग्न नहि छलि ....सागर सन शांत अनुभवक सभटा प्रश्नकेँ आत्मसात कऽ रहल छलीह।

-'लोक अहाँक नाम शिशिर बाबूक संग किएक जोड़ैत छथि ?

मारय वलाक हाथ पकड़ल जा सकैत अछि बाजय वलाक जीभ नहि । एकटा स्वादहीन हँसी लेखाक अधरपर आवि गेल - पूरा रामायण कहि गेलहुँ मुदा सीता ककर बहु ? खैर जखन पुछिए देलहुँ -शिशिर बाबू बदनाम, बड़ बदनाम छलाह ई तँ सभ जनैत अछि । पुरूष ओहिठाम खराब होइत अछि जाहि **ठाम स्त्री लिफ्ट दैत छैक।**

-'हँ, ई बात तँ सत्य थिक ।' अनुभव बाबू बजलाह -अनुभव बाबू स्त्री मोनसँ शक्तिशाली होइत अछि तँ पुरूष तनसँ-ई मानय पड़त । अहाँ जे हमरासँ पुछलहुँ ओहि सँ नीक होयत जे ई अहाँ समीरसँ पुछितहुँ वा नहि तँ शिशिर बाबूक पत्नीसँ पुछितहुँ । वैह दुनू गोटै एहि प्रश्नक उतर नीक जकाँ दऽ सकैत छथि ।' आ एकटा हल्लुक साँस लऽ लेखा आँखि मुनि लेलनि- अनुभव बाबू होहि दुनू गोटेक दाम्पत्य जीवन बड़ विषम छल आ तकर उत्तरदायी यैह महल्लाक लोक, यैह समाजक ठीकेदार-आ तखन शिशिर बाबूक पत्नी एक दिन कनैत बजैत हमर ओतऽ पहुँचल छलीह - 'अहाँ पढ़ल लिखल छी हमर घर बसाऽ दिअ ।' हमरा हँसी लागि गेल छल । -अहाँक घर हम कोना वसाएब ? अहाँक घर अहाँक अपन हाथमे अछि ।' आ अनुभव बाबू ताहि क्षण शिशिर

बाबूक पत्नीक जे हाल छल! एकटा निश्चल रूदन हुनक आँखि टा सँ नहि समस्त तनसँ प्रवाहित भऽ रहल छल । एकटा बाल बच्चा बला परिवारक टुटबाक दर्द लोक नहि बुझैत अछि । हम तखने सपथ खा लेने छलहुँ जे लोक कतबो बदनाम करत मुदा हम एहि परिवारकेँ बसा कऽ रहब। आखिर शिशिर बाबूक पत्नी हमरे लगमे किएक अयलीह, आनो लोक तँ छल, ई हुनकर अपन विश्वास छल । आ तकर बाद एकटा यात्रा गाथा हमर आ समीरक एहि परिवारक खुशी घुरेबाक रहल । आइयो ओहि घरमे जतेक आदर हमरा लोकनिक होइत अछि ओतेक प्रायःभगवानोक नहि । समीरो बजैत अछि जे अहाँक हृदयमे एतेक निश्छलता, कोमलता भगवान भरि देने छथि जे बड़कासँ बड़का शराबी जुआड़ीक हृदय परिवर्तन भऽ जाय- मुदा नहि अनुभव बाबू आब किछु नहि पुछू- तोड़ऽ बला नहि संसारमे डेग डेगपर भेटि जाएत मुदा जोड़ऽ बला ?'

आ लेखा दुनू पएर वर्थपर मोड़ि ठेहुनमे मूड़ी दऽ अपस्याँत बैसि गेलीह -ओकर केश हवाक झोंकसँ अनुभवक गालपर मेघ जकाँ पसरि जाइत छल । अनुभवक मोन उन्मन भऽ रहल छल । ओहि केश राशिक हल्लुक स्पर्शक विद्युत तरंग सँ अनुभवक देह काँपऽ लागल छल जकर हल्लुक झोंक थोड़े काल पहिने एक बेर आर ओकरा लागि चुकल छल। डिब्बामे मद्धिम प्रकाश । बाहर अन्हार गुज्ज । अन्हारक छातीकेँ चीरैत ई गाड़ी ई प्रकाश रेखा प्राणवंत भऽ भगल जा रहल छल । थोड़े कालक बाद लेखा वर्थक देवालमे माथ सटा मोनक घाटीमे विचरय लगलीह । -अहाकेँ किछु कहबाक आवश्यकता नहि लेखा । अहाँ हमर दोस्त छी पावनी गंगा ।अनुभव बाबू आस्ते बजलाह ।

-'हँ अनुभव बाबू अहाँकेँ देखैत छी तँ लगैत अछि दोस्ती शब्द साकार भऽ गेल । अहाँ हमरा सभक ओतऽ अबैत छी तँ लगैत अछि एकटा आदर, एकटा प्रतिष्ठा अपनहि आबि रहल हो ।'

-'लेखा एतेक पैघ स्तर हमरा नहि दिअऽ । अहाँक विश्वासकेँ धोखा नहि देब, बस एतबहि टा कहब विश्वास राखू ।'

-'आब कतेक काल बचल अछि अएबामे' । लेखा बाहर अन्हारमे दृष्टि घुमबैत बजलीह ।

-'प्रायः एक वा दू स्टेशन होयत । समीर स्टेशनपर अओताह ने ?'

-निश्चित, एहिमे कोनो संदेह? कोनो मीटींगमे हमरा बाहर जाए पड़ैत अछि तँ कर्तव्य बूझि, जी मसोसि कऽ चलि जाइत छी? दुनू गोटाक कार्य क्षेत्र फराक-फराक । कऽ की सकैत छी ।'

-लेखा फेर अपनामे डूबि गेलीह । अस्त व्यस्त आनन्द आ उल्लास मे डूबल रात्रिकनीरवता आ दोस्तीक एहि सामीप्य सँ अनुभवक मोन उद्वेलित नहि अपितु आर उन्मादित होमऽ लागल । ओकर देहक रक्त जेना बाहर अयबा लेल उधिआय रहल छल । पयर पर पयर चढ़ा दुनू हाथकेँ एक दोसरासँ ओझराय कसि कऽ दबौने अनुभव बाबू मोने मोन ईश्वरसँ प्रार्थनाकऽ रहल छलाह जे

स्टेशन जल्दी आबि जाय । जीवन भरि नामी गामी आ आदर्श व्यक्तित्व आइ कोन भँवरमे फँसि स्वयंकेँ असहाय बुझऽ लगलाह ।

अनुभवक बदलैत आकृति देखि लेखा पुछलनि -'की बात छैक अनुभव बाबू । अहाँ एना एकएक चुप किएक भऽ गेलहुँ ?

अनुभवसँ किछु बाजल नहि गेल । खिड़कीसँ बाहर तकैत मुड़ी डोला देलक ठीक छी ।

जहिना वर्षाक बाद आकाश निर्मल भऽ जाइत छैक तहिना लेखाक मोन आइ एकदम शांत भऽ गेल छल। कतेक दिनक बाद कोनो मित्रक आगु ओ अपन मोनक सभटा बात निकालने छलीह । मोन एकदम हल्लुक लगैत छलैक। घर आब आबि रहल छल । लेखाक मोन नाचि रहल छल मुदा अनुभव बाबूक मोन ओकरा काटि रहल छलैक । एकटा विचित्र चुप्पी । ओ अपना कारणे ककरो दुखी आ चिन्तित देखऽ नहि चाहैत छलीह । ओ अनुभवक हाथकेँ देखलनि जे एक दोसराक संग कसि कऽ ओझरायल छल । कोनो एक इच्छाकेँ जेना ओ समस्त तनमे दबा कऽ बैसल छलाह । जेना शरीरक कोनो कोनसँ हुनक इच्छा प्रकट नहि भऽ जाय । भावनापर मजबुत बान्ह बन्हने किछु नहि होइत अछि । ओकर भावना ग्रसित रहियो कऽ भीतरे भीतर लावा जकाँ फुटि रहल छल। अनुभवकेँ लगैत छल जेना कोनो क्षण विस्फोट होयत, तनक ज्वालामुखी फाटि जायत आ ओहिमे आदर्श मर्यादा आ विश्वासक बान्ह स्वाहा भऽ जाएत।

सकुचल सिकुड़ल अनुभवकेँ लेखा खूब जोरसँ झकझोरि देलक -'अनुभव बाबू-'?

आ एकाएक लेखाक स्पर्शक विद्युत स्पर्शसँ अनुभवक समस्त तन झनझना उठल । सभटा रक्त खौल कऽ माथमे आबि गेल, देहक सभटा सिरा जेना तनतना कऽ टूटऽ लागल । समस्त तनमे लाबा सन फुटऽ लागल। अनियंत्रित भऽ विक्षिप्त जकाँ अनुभव चिकरय लगलाह छोड़ि दिअ- छोड़ि दिअ- हमरा छोड़िदिअ, अहाँक चरित्र ठीके नीक नै अछि ।

गाड़ी जोरसँ धक्का लगाय रूकि गेल । स्टेशनक गहमा गहमी सुनाय पड़ऽ लागल आ क्षण भरि लेल अवाक् स्तब्ध लेखाकेँ जेना होश आएल हो । एकटा विद्रुप हँसी हँसैत एकटा बताह जकाँ ठहक्का लगबैत, लेखा डिब्बासँ उतरि गेलीह । समीर ठाढ़ छल । -बड़ हँसैत उतरि रहल छी ।

-'एकटा नव एचीभमेंट, चलू कहैत छी ।' ई कहैत लेखा समीरक संग आगू बढ़ि गेलीह ।

***

चिता पर बिहुँसैत फूल

हौ प्रमोद, कतऽसँ ? आबह-आबह - हँसैत चिकरल शेखर ।

ओह, डाक्टर ! बड़ नीक संयोग भेल । हम तँ एखन दार्जिलिंग सँ आबि रहल छी ।

-'अयँ दार्जिलिंग सँ ? से की बात ? बड़ दूरमे छह आइ काल्हि ।'

'हँ भैया भौजी गेलथि दाजिलिंग तँ भौजीक मधुर आग्रह भेल - 'बौआ अहूँ चलु ।' हम तँ दू नेनाक बाप छी मुदा भौजी लग नेने छी । ओना तँ लोक कतबो बूढ़ भऽ जाओ मुदा भौजीक शब्द सुनिते उल्लास सँ बतीसी बहरा जाइत अछि ।'

तावत प्रमोदक गाड़ी खुजऽ लगलैक 'हौ हमर गाड़ीक समय तँ भऽ गेल। तों गामे जाइ छह ने ? बेस फेर भेंट होएतह ।' हाथ हिलबैत प्रमोद दोसर प्लेटफारम पर चलि गेल ।

प्रमोद गेल मुदा ओकर बात रहि-रहि शेखर केऽ जेना झंकृत करऽ लगलैक । शेखर राँची मे डाक्टरी पासकऽ एकटा पैघ सर्जनक नीचा सिखैत छल। बहुत दिन पर माय बहिनक चिट्ठी पाबि आइ गाम जाइत छल, बहिनक बियाह गामक लगे भेल छलैक । ओ हरदम अबैत जाइत छलैक । गाम मे माय एकसरे रहैत छलीह। इहो अभाग्ये छलैक की ? बापक मृत्यु पहिनहि भ' गेल रहैक । एकटा पैघ भाइ छलथिन ।

- अशोक । दू वर्ष पहिने हुनक बियाह भेल छलनि । आ वियाहक डेढ़ मास बाद हैजा सँ मरि गेलाह । आ हुनकर मृत्युक बादे शेखर गाम सँ विरक्त भऽ गेल । आ शेखर केँ जेना कोनो विसरल बात मोन पड़ि गेलैक-जाहि दिन अशोकक बियाह छलनि, शेखरक परीक्षा चलैत छलैक। तँ बियाह मे नहि जा सकल । जखन भाय मुइलथिन तखन भौजी अपन नैहर मे छलीह । दुःखक कठोर आवेगक कारण भौजी लग जएबाक साहस नहि होइक। ओ एखन धरि भौजी केँ देखने नहिं छल । आइ गाम जाइत अछि । भौजी भरिसक गामेमे छथिन। हृदयक धुक-धुकी तीव्र छलैक । 'जीवनक प्रथम बसंत मे पयर रखिते जेना ओकरा पर पतझड़क राज भऽ गेलैक। चारु कात पतझड़े-पतझड़ । ओह, केहेन हृदयद्रावक ओकर स्मृति मात्र छलैक ? आ सोचैत ओ कखन गाड़ी सँ उतरि अपन घर लग पहुँचि गेल, तकर जेना ठेकान नहिं ?

शुभ्र धवल छोट छीन कनियाँ जकाँ सजल-धजन एकटा बंगलानुमा बासा। चारुकात युक्लिप्टसक पैघ पैघ गाछ कनैलक गाछ सँ घेरल छोट छीन हाता । शेखर जखन लगलेल, माधवीलता लग जेना क्यो ठाढ़ि छलि। पन्द्रह सोलह वर्षक एकटा अतीव सुन्दरि बाला । श्वेत परिधानपर छिड़िआयल कुन्तल

स्तवन जेना साक्षात् सरस्वती ठाढ़ि हो ? हाथ मे सूटकेस लेने शेखर चकित ठाढ़ निर्निमेष ओहि अपरूप दिस तकैत । ओ बाला सेहो अकबकायलि। ई के अनचिहार विस्मित विमुग्ध ठाढ़ ? आङन सँ स्वर अएलैक - कनियाँ। स्वर सुनि बालाकेँ जेना चेति अएलैक । माथ पर आँचर लेने भागि गेलि आंगन ।

भौजी - शेखरक ठोर पटपटायल आ जेना अवसादक घनघोर करियामेघ ओकर अन्तसमे सजल भऽ गेलैक? फक्क दऽ एकटा निसास छोड़ि ओ घरदिस गेल ।

'माँ आबि गेलियौक ?' बजैत ओ माय केँ गोड़ लगलक ।

'ओह शेखर बेटा, युग-युग जी ? -कनियाँ - कनियाँ । चिकरलीह माय-कनेक पानि लेने अबियौक हाथ-पयर धोबा लेल ।

घोघ तनने, बिद्धहरिणी सदृश, नेत्र उदास भावरहित, गोर-गोर हाथ मे लोटा लेने ठाढ़ि भौजी ।

'भौजी' कहि ओ सीमाक पयर छूबऽ लागल कि सीमा दूनू हाथ सँ ओकर हाथ पकड़ि दू डेग पाछाँ हटि गेलीह ।

'नहि-नहि, जेना बीणा बाजि उठल । शेखर विस्मय-विमुग्ध लोटा लऽ कऽ पयर धोबा लेल चल गेल। ओकरा आँखि मे रहि-रहि भौजीक उदास चेहरा नाचऽ लगलैक ?

'कनियाँ, पानि पीबा लेल किछु लेने अबियौक झट्ट दऽ-मन्थर गति सँ सीमा चलि गेलीह ।

माँ, भौजी तँ बड़ सुशील लगैत छथि ?

'बेटा, एहन रतन सन पुतोहु आ सोन सन बेटा हमर चलि गेल । कनियांक दुःख देखि-देखि जेना हमरा करेज टूटि-टूटि खसैत रहैछ । भगवान कोन पापक फल हमरा देने छथि से नहि जानि - कहैत मायक आँखि डबडबा गेल ।

'माँ' - शेखरोक आँखि अपन स्नेहिल भायक स्मृति मे छलछला गेलैक। पुनः बाजल -'माँ, अपना सभ यदि एना उदास भेल रहबैक तँ सोच भौजीक गति की होएतनि ? हम देखैत छी, एतेक देरी किएक भेलैक - 'कहैते शेखर भनसा घर दिस विदा भेल । ओ पयर दबाकँ भनसाघरक मुँह पर पहुँचल । सीमा मूड़ी निहुरौने बैसलि। आगूक छिपली मे चूड़ा भूजल, आलूक भुजिया, पापड़ राखल आ भौजीक आँखि सँ टप-टप नोर चुबैत गिलासमे राखल पानि मे खसि रहल छल -

'भौजी' - बड़ आदर आ स्नेहसँ बजौलक शेखर ।

सीमा हड़बड़ाय मूड़ी उठौलनि कि माथ पर सँ नुआ ससरि गेलैक बिना तेलक रुख केश चारू कात छिड़ियाकऽ उदास चान कें झाँपि देलक, कनिए काल मे स्थिर भऽ तुरंत नुआ माथपर राखि लेलनि ।

भौजी, अहाँ कनैत छी ? चलू बाहर निकलू - दुःखक आवेग सँ शेखरक

स्वर थरथराइत छलैक । एतबा सुनैत तँ सीमा ठोहि छोड़ि कानय लगलीह । कनैत-कनैत हिचकी लागि गेलनि । तखन शेखर अपने सँ भौजीक हाथ पकड़ि बाहर माय लग नेने गेल । माय कनियाँक आँखि देखि चकित भऽ गेलीह । कनियाँ हताश किएक होइत छी । हम सभ बड़ अभागलि छी । ओहि जनम मे कोनो बड़ भारी पाप कएने छलहुँ तकरे फल भेटि रहल अछि ।

शेखर दूनू सासु-पुतोहुक मोन स्थिर कऽ बाजल -'भौजी, जलखै तऽ करऽ देलहुँ आब पानि पीबऽ दियऽ।

आ कि सीमा कें जेना कर्त्तव्यक ज्ञान भेलनि । ओ तुरंत भनसा घर चल गेलीह । पाछाँ लागल शेखरो गेल जे भनसे घरमे खायब । सीमा चुपचाप पीढ़ी खसाकँ ओकरा आगु मे पानि आ जलखै राखि देलक । शेखर जनेत छल जे भौजी नहि जनैत छथि जे एहि पानिमे हुनकर नोर खसल छलनि । शेखर कें हरलैक ने फुरलैक, बाजल - भौजी, अहाँ बड़ दुखित छी अहाँक सभटा नोर एहि गिलास मे खसल छल । हम अहाँक छोट देयर छी । अहाँक दुःखक हिस्सा बाँटि अहाँक नोर पीबि रहल छी - बजैत ओ गट्ट-गट्ट कय सौंसे गिलास पानि पीबि गेल । चपल युवकक एहि स्फीत क्रिया देखि सीमा चकित हतवाक् जकाँ ठाढ़ि रहि गेलीह ।

'हम अहाँक छोट देयर छी ? अहाँक दुःखक हिस्सा बाँटि रहल छी' - जँ क्यो ककरो दुःख सरिपहुँ बाँटि सकितैक ? - अन्हार घर मे सीमा अपन ओछाओन पर सूतलि छलीह । रहि-रहि शेखरक बात मोन पाड़ए आ एकटा अवश हँसी हँसि दिअए। दुःख, ककर दुःख के बटैत अछि' सीमा अपन बियाहक छौ मास बादे विधवा भऽ गेलीह। तीन मास ओ अपन पति संग रहलीह । जीवनमे लगलैक जेना चारूकात बसन्ते-बसन्त अछि। फूले-फूल, सुगन्धे-सुगन्ध । स्त्रीक जीवनक सभसँ मधुरिम दिन राति बियाहक उपरान्ते तीन चारि वर्ष धरि रहैत अछि आ खुशीक सुखमय झूलापर पेंग लगबऽ लगलीह । सीमाक जीवनमे आलोक छोड़ि कतहुँ अन्हारो छैक ई सपनो नहि छल । तिमिरमय जीवनक कोनो हिस्सा ओ नहि देखने छलीह मुदा, छह मास बाद जखन हाथक चूड़ी फोड़ि देल गेल, सिंदूर मेटा गेल, सभटा गहना-कपड़ा खोलि एकटा श्वेत परिधान पहिरा देल गेलनि तँ ओ अप्रतिभ भऽ गेलीह ई कोन नियतिक खेलथिक । ई समाजक कोन प्रपंच । नोरक स्थानपर आँखि मे एकटा अबुझ बुझौअलि भरल छल । जेना जीवनक रेल पटरी सँ उतरि गेल हो । जेना कैकटा मोटरक भगैत पहियाक धूरी सँ जमीन घसकि गेल हो । ओ अपन चारूकात तकलनि - सूर्यकेँ की भऽ गेलैक ? एकर रंग किऐक मलीन भऽ गेलैक ? जीवन एखने तँ रंगीन सिनेमा जकाँ चहचहाइत छल । ई उज्जर कारी उज्जर कारी सिनेमा जकाँ उदास किएक भऽ गेल? आ अन्हारेमे सीमा सोचैत-सोचैत खिड़की लग ठाढ़ि भऽ सूदूर नीलाकाश निहारऽ लगलीह । सरिपहुँ हुलसैत कारक स्प्रिंगपर झुलैत जीवनमे नहि जानि कोनो बसक डीजलक जरल दुर्गन्ध समा गेल छल । सीमाक जीवन

जेना एकटा सतमाय बनि ओकर सभ किछु छीनि लेने छल ।

भौजी - एकटा स्वर कानमें आबि खसि पड़ल । मुदा ओकर अन्तर मे कोनो प्रतिक्रिया नाहि भेलैक ।

'माँ, भौजी कतऽ गेलीह -' सीमाक कान शेखरक स्वर सुनलक ।

'देखही ने अपन कोठली मे होएतौक ?'

'माँ कोठली तँ अन्हार गुज्ज छैक ? तखन कतऽ गेलखिन - शेखरक स्वर माय भौजी दूनूक कानमे जाय रहल छलैक ।'

बेटा ओकरा लेल अन्हार की ? तों कनेक देखहीक । कनैत-कनैत बताहि नय भऽ जाइक ।

शेखर मायक कहब सुनि मर्माहत भऽ गेल - 'माय भौजीक जीवनमे फेर बसन्त नहि औतनि की ? हुनक अन्तर मे उल्लासक भोर नहि होएत ? माँ-भौजीक वयस देखैत छी, हुनक उदासी देखैत छी जेना नीलकंठ जकाँ भीतरे-भीतरे सभटा विष पीबि रहलि होथि । हमर करेज जेना सालि रहल अछि। माँ हुनक जीवन कोनहुना सुखी बना दहीक.... । आवेश मे शेखरक गर बाझि गेलैक - सीमा प्रथम बेर देयरक ई आर्द्र करुण स्वर सुनि जेना चौंकि उठलीह ।

'बेटा - ओकर भाग्यकें हम की करबै ? ओकर करम फूटल छैक, हमर-तोहर कोन सक ।' अचक्के मे लगलनि जेना चारूकात इजोत भऽ गेल । ओ चौंकि चारूकात देखलनि तँ स्वीच बोर्ड लग शेखर ठाढ़ छल।

'भौजी एकसर अन्हार मे की कऽ रहल छी ?'

'एकसरे अन्हारमे - नहि तँ बाऊ; अन्हार तँ हमर संग भऽ गेल अछि। एकटा विवश हँसी हँसैत बजलीह सीमा । शेखर देखलक ओ हँसी उदास छल। गोधूली बेलाक लाल प्रकाशमे दूरसँ अवैत वंशीक स्वर कनिए काल लेल मानव-मोन उद्भ्रान्त कऽ दैत अछि, अकारण उदास कऽ दैत अछि, तहिना सीमाक ई हंसी क्षण भरि लेल शेखरकें उदास कऽ देलक मुदा तुरन्त सम्हरैत बाजल शेखर -'भौजी हम छी, माय अछि तखन अहाँक मोन नहिं लगैत अछि? ओह, चलू-चलू बाहर निकलू । माय एकसर बैसलि अछि । ओकरो संगी तँ अहीं छिऐक।

आ दिनक पंछी उड़ैत रहल । शेखरक मोन जेना कोनो अदृश्य आकर्षण सँ सीमा दिस घीचल जाइत छल। एक दिन बाते बात मे सीमा शेखर सँ बजलीह -'बौआ, आब अहाँ अपन बियाह कऽ लियऽ । मायक स्वास्थ्य ठीक नहि रहैत छनि । एहन हालतिमे हुनकर मोन तोड़ब ठीक नहि।

'नहि भौजी, हम बियाह एकदम नहि करब ।'

'बौआ, बियाहक बिना तँ जीवन भार भऽ जायत ।'

सीमाक गहीर-गहीर आँखिमे तकैत शेखर बाजल -'भौजी तखन तँ अहूँक जीवन दूभर भऽ गेल अछि । एहि आयुमे अहाँक इच्छा कामनाक प्रसून

मुकुलित होइत, हृदयक कण-कण अलौकिक सौरभ सँ उन्मादित रहैत।

'बौआ !'

'हँ भौजी, हँ, मुदा आइ अहाँक जीवन, बाट पर मौलायल फेकल फूल सन भऽ गेल जकर इच्छा कामनाक चिता धधका कऽ मानब तमाशा देखैत अछि।'

'नहि बौआ नहि ! अहाँ हमरा गलत बुझलहुँ । हमर जीवन भार नहि भेल अछि । हुनकर स्मृति हमर मूल पूंजी थिक । हुनकर स्मृति हमर सहायक अछि जकरा संगे इम जीवनक रास्ता काटि लेब ।

'नहि भौजी, ई अहाँक नेनमति थिक ।'

'ई स्मृति तँ हमर संचित धन राशि थिक ।'

हम सोचैत छी भौजी जे अहाँक उदासी दूर कऽ दी भाग्य जे उदासीक काँट सँ अहाँक आँचर क्षत कऽ देने अछि ओकरा उल्लासक तरेगण सँ भरि दी।'

आ सीमा एकदम चुप भऽ रहलीह । एकटा शोकातुर दृष्टि सँ शेखर दिस तकलनि जे अपन हृदयक सभटा भाव उघरल स्वेटर जकाँ ओकरा समक्ष राखि देने छल । अन्तर मे जेना कोनो दुर्बलताक छाह पड़ऽ लागल। ओह, शेखर किएक ओकर मोन कें घीचने जा रहल अछि ? यदि हमरा भाग्यमे सुख रहैत तँ की अशोकक मृत्यु होइत ? आ सीमाकें कानब छुटि गेलनि । शेखर भावुकताक आवेग मे बहल जा रहल छलि । शेखरकें सरिपहुँ सीमा सँ प्रेम छैक तैं ओ अपन मोनक बात साफ-साफ कहि देलक आ सीमा अपन भाग्य कें धिक्कारऽ लगलीह। मोन पड़ि गेल जे एक बेर ओ अशोक कें कहने छलीह - 'अहाँ छोड़ि हम ककरो सँ प्रेम नहि करैत छी।' जँ ओ शेखर सँ बिवाह कऽ लेतीह तँ ओ बचन झूठ नहि भऽ जाएत? ओ अपन आ अशोकक आत्मा कें की धोखा नहि देतीह । ओ फेर कानऽ लगलीह । कनैत-कनैत तकिया भीजि गेलैक। लगलनि जेना शेखर ओकरा समक्ष बाँहि पसारि प्रेमक भीख मांगि रहल हो ।

'नहि-नहि संसार की कहत ? सभक आँखि सँ नीचा, खसि जायब। अशोकक आत्मा कहियो चैन नहि पाओत ?

ओ धीर गति सँ ई कहि - 'ई सोचब पाप थिक बौआ ।' ओहिठाम सँ अपना कोठली चलि अएलीह । केवाड़ बन्द कऽ अपन स्वामीक फोटो लग माथ राखि कानऽ लगलीह - 'नाथ, अहाँ चलि गेलहुँ मुदा कोन मर्मान्तक पीड़ाक मेघमे झाँपि गेलहुँ । अहाँ कें एतबो हमरा सँ प्रेम नहि अछि जे कम-सँ-कम अपने लग हमरा बजा लितहुँ । अहाँक स्मृतिक संचित धन संग हम अपन तरूआरिक नोकपर जिनगी बिता लेब मुदा अहाँ हमरा नहि बजायब, नहि बजायब ?' आ सीमा फफकि-फफकि कानऽ लगलीह । कानसँ रहि रहि शेखरक स्वर टकराइत रहल - आ लागए जेना स्वतः ओकरा दिस घींचएल जाइत हो, चलल जाइत हो । खिड़की लग सँ भास्करक किरण राशि आबि सीमाक देहपर पड़ैत छल । ओहि इजोतमे सीमाकें अपन हृदय 'एक्सरे' जकाँ

देखा गेलै 'ई कोना दुर्बलता हमर मोन कें घेरने जा रहल अछि । ई कोन दुर्बलता?'

सीमाक मस्तिष्क अवश जकाँ एक करोट धुरि पड़ि रहलैक ? किछु काल धरि ओ आंखि मुनने रहलीह कि स्मृतिक बल्ब फक्क दऽ बरि गेल - अशोक जखन हुनका लग सँ जाइत छल तँ ओ भरि आँखि नोर नेने बजलीह -'अहाँ जाइत छी ने, हरदम हम आब कनिते रहब ?' अशोक बड़ प्रेम सँ हुनक माथ पर हाथ फेरैत बाजल-'अहाँके हमर प्रेमक सप्पत, कानब नहि ? अहाँ कानब तँ हमरा एक डेग बढ़बा मे मोन नहि लागत ?'

शेखरो आइ हुनका वैह सप्पत देने छल । 'भौजी- अहाँकें हमर प्रेमक सप्पत कानू नहि ।' विचित्र साम्यता छल । ओहि घरक एक एकटा चीज सँ अशोकक स्मृति जुटल छल । हुनक आँखि मे नोरक बिरड़ो उठि गेल, मुदा लागल जे अन्तरिक्ष सँ अशोकक स्वर गुँजि रहल हो - अहाँ कें हमर प्रेमक सप्पत, कानब नै ।' ओ दूनू हाथे अपन आँखि मीड़ऽ लगलीह। स्वर गरामे लसकऽ लगलनि । ठोर कंपित भऽ गेलनि । नहि जानि परमात्मा किएक हुनक जीवन सँ खेल कऽ रहल छथि । ओ ओहि ठामसँ छटपटा कऽ उठि भगवती घर गेलीह । चिंतित मोनक व्याकुलताकेऽ कोनहुना दबबऽ लेल चाहैत छलीह मुदा, जखन असमर्थ भऽ गेलीह तऽ भगवतीक पीड़ी पर माथ राखि कानऽ लगलीह । 'माँ, कोन अपराधक दण्ड हमरा दऽ रहल छी, किएक ? हमर मोन किएक एना अशक्त भऽ रहल अछि, किएक ? हमरा 'ओ शक्ति दियऽ माँ जे भारतीय नारीक सती मर्यादाक रक्षा कऽ सकी। हम ओ आकाशगंगा रही जकरा लोक देखिए टा सकए, छुवि नहि सकए । नारी तँ धरती जकाँ सभ दुःख सहवाक क्षमता रखैत अछि ? तखन हमर मोनक ई दुर्बलता ? हमर अन्तरमे राम-रावणक युद्ध चलि रहल अछि । असत् रावणेकें भस्मीभूत कऽ देअए । हमरा अन्तसमे कर्मक ओ तेज जगा दिअऽ जाहि मे सभटा मलिन वासना जरि छाउर भऽ जाय - आ अचक्के जेना सीमका मोन के कोनो अपूर्व संदेश आबि सुरभित कऽ देलक ? हुनक आनन पर दृढ़ निश्चयक अद्‌भुद आभा छल? मोने-मोन एकटा चट्टान सन कठोर निश्चय कयलनि ।

'कनियाँ,- स्नेह सँ माय सीमाकें उठवैत बजलीह -'किएक एना करैत छी? बेटा, कर्मक फल के टारि सकैछ ?'

सीमा अपन नोर पोछि तीतल आँखि सँ माय दिस तकलनि आ मायक करेज मे सटि गेलीह ।

'माँ, भगवान हमरा कथीक दंड देलनि । हम तँ ककरो मोन नहि दुखौलहुँ ।

'बेटी, पूर्व जन्मक फल रहैत छैक । मानव एहने दाहक परीक्षा मे तपि कुन्दन भऽ जाइछ ।'

'हँ माँ - ई ठीके कहै, छथिन । माँ, हमर एकटा बात मानथिन ?'

'कहू बेटी, अहाँक लेल तँ हम अपन करेज निकालि दऽ सकैत छी।'

'बस बस माँ, हमर मोन मे एकटा इच्छा जागल अछि । माँ, हम तँ मैट्रिक पास कयने छी । बौआ सँ कहि हमरा मास्टरीक ट्रेनिंग दिआए देथुन आ हम गर्ल्स स्कूल मे छोटका नेना भुटका कें पढ़ायब । अपन समय एहिना बिता लेब।

'कनियाँ ! हर्ष विह्वल स्वरे बजलीह माय - ई अहाँके नीक उपाय फुरल। वास्तव मे नारी-जीवनक मर्यादा अपन सतीत्वमे अछि । नारी जीवन एकटा अयना जकाँ अछि जकरामे जँ कतहु दरारि पड़ि गेल तँ ओ ठीक नहि होइत अछि आ भरि जिनगी अपने मुँह नोचैत रहैत अछि ।

'माँ, अहाँ भरोस राखू । हमरा संग हिनकर आ भगवतीक अशीर्बाद रहत आ हुनक पवित्र स्मृति ।'

अहाँ दुनू सासु-पुतहु मे बड्ड फुसुर-फुसुर भऽ रहल अछि - कहैत शेखर ओहिठाम आएल । सीमा लजाकऽ मायसँ कात भऽ गेलीह ।

हँ बेटा, कनियाँक गप सभ तोहूँ सुनि लेल ? माय शेखर के बुझावऽ बैसलहि तँ सीमा ओहिठामसँ चलि गेलीह । शेखर कें मोन मे भेलैक, आइ भौजी मानि गेलीह तेँ लजाकऽ चल गेलीह । अवश्य हमरे सभक विषयमे कोनो बात होयत - आ जखन शेखर सभटा बात सुनलक तँ हतबाक् रहि गेल, हतप्रभ-मोनक उल्लास उमंगमे जेना पाला मारि देलक। मौलश्रीक डारिमे लागल रेशम तागाक डोरिपर कतहु क्यो झूलि सकल । शेखर कें भेलैक ओकर इच्छा कामना छोट नेना जकाँ ओकर मुँह दुसि पड़ा गेलैक । कहुना पयर घिसिया कऽ गेल सीमा लग ।

भौजी - धीर स्वरे बाजल ।

'बौआ - शेखरक माथपर हाथ फेरैत बजलीह सीमा - भौजी आ मायमे कोनो अन्तर नहि होइत छैक । एहि रस्तापर हमरा देखि स्वर्ग सँ अहाँक भैया पारिजात सुमनक ढेर अपना आङनमे लगा देताह । सोचताह-शेखर हमर भाय थिक, मुदा आइ बेटा जकाँ भौजीक सहायक बनल अछि ।

भौजी ! सीमाक पयर छाबैत पश्चाताप एवं ग्लानिक स्वरे बाजल शेखर। अहाँ हमरा माय छी, अहाँ देवी छी । हम अहाँकें बड़ कमजोर बुझलहुं । हमरा मोन मे जे कलुष भावना आएल छल तकरा हम कोना धो सकब से नहि जानि।

'नहि बौआ, एहन बात नहि बाजू । ई तँ अहाँक महानता छले जे कतेक सुन्दर अनाघ्रात कुसुम कलिका कें छोड़ि अहाँ हमर जीवनक पीड़ा कें अपन पीड़ा बनएबा लेल चाहलहुँ । मुदा की मायक पीड़ा बेटा नहि बाँटि सकै ? छोट देयर पुत्रवत् होइछ । बौआ, आइ हमरामे ओ शक्ति आवि गेल अछि जे हम अपन जीवनक प्रबल झंझा कें हुनक स्मृतिक बलपर ठोकर मारि भगा देब ।

आ शेखरक आँखिसँ टप-टप नोर चुबैत रहल ।

◆◆◆

प्रतिवादक स्वर

'हँ हम खून कएने छी । हम सासु बनऽ नहि चाहैत छी । हम माय बनऽ नहि चाहैत छी । तैं हम ई खून कएलहुँ । तीन-तीन टा खून-हम नारी छी नारी -ग्लानि भऽ रहल अछि जे हम नारी किएक भेलहुँ । नारीकें किएक महान मानल गेल ? नारी प्रकृतिक निकृष्टतम कृति थिक । - ते हम अपन नारी जीवन जीवा लेल नहि चाहैत छलहुँ । हम माय बनि जीवा लेल नहि चाहैत छलहुँ । सासु बनि जीवा लेल नहि चाहैत रही - जज साहेब - सासु, ससुर, ननदि हम तीन-तीन टा खून कयलहुँ । जज साहेब, हम चाहितहुँ त भागि कऽ अपन जान बचा सकैत रही । दहेजक कारण हिनकर सबहक बनाओल षड्यंत्रक हमरा लग कोनो सबूत नहि अछि.... कोनो पुतोहुक संग कोनो सबूत नहि रहैत अछि । कानून सबूत चाहैत अछि, साँच हो वा झूठ हो । हमर सासु, ससुर हमरा मारबाक षडयंत्र कैलनि, एकर सबूत मात्र हम छी आओर हमर ईश्वर । सबूतक आधार पर चलए बला आन्हर कानून टाका पर सबूत अनैत अछि आ ओहि कीनला सबूत पर अहाँ न्याय करत छी, जज साहब । हमरा प्रतिकार लेबाक छल, समाजक ठीकेदार सभसँ । हमरा फाँसी दीयऽ जज साहेब, हमरा फाँसी दियऽ...'

सौंसे 'कोर्ट स्तब्ध । सभ वकील पाथरक मुरूत । जनताक अपार भीड़कें काठ मारि गेल छल । जज साहेब जेना हिमशिला सन श्वेत सर्द-लहास-आँखि मे अपन बेटाक ब्याहक मोल-भाव नचैत ।

मुदिता हफसि रहल छलीह । समस्त केशराशि साओनक अन्हार कारी राति सन छिड़िआएल छल । दुनू आँखि सँ घनघोर बरखा । दिनकरक इजोत कृष्ण-पक्षक रंग लऽ लेलक । कारी-कारी विषधर नाग सौंसे कोर्ट मे कतेको क्षण तक ससरैत रहल .... ससरैत रहल ।

मुदिता-जीवनक मात्र बीस बसन्त देखसवाली मुदिता एहेन वीभत्स कांड कऽ बैसती - ई अकल्पनीय छल आ मुदिता...?? पलक बन्द कएने -'पापा, पापा.... अहाँ कतऽ छी ? अहाँक बेटी, अहाँक नाम पर कलंक लगा देलक, हत्यारिन नहि मुदा अहाँक आदर्शक रक्षा कएलक । पापा, हम नारी जीवन नहि जी सकलहुँ.... ' आ आँखि मे जेना व्यतीत छलछला गेल... ।

'बेटा अहाँक ब्याह भऽ रहल अछि । आब पतिक घर अहाँक मान मर्यादा, जीवन-मरण सभ किछु थिक। हम सभ तँ अहाँ लेल पाहुन रहब-पाहुन।' मुदिताक पिता बेटीक माथ पर हाथ फेरैत बाजल छलाह ।

मुदिताक मोनमे अपन ब्याहक प्रति विरोध भाव उठल छल.... 'जमीन जाल बेचि हमर ब्याह नहि करू पापा! मुदिता बड़ भावुक छलीह। सदिखन चिन्तनमे डूबल खाली अभावे टा ओकर पूँजी छल । अभाव क्रान्तिक कारण भऽ

सकैत अछि, मुदा शर्त्त विवेक रहि जाइत अछि । पिताक गरीबी समाज मे अभिशाप छल । आदर्शवादी क्लर्क'क जिनगी की अछि - तेज जलधार मे कँपैत जलकुंभी सन । बी० ए० पास कऽ मुदिता बैसल छलीह । जतऽ देखू ओतऽ टाका - एतेक मूल्यवृद्धि वरक भऽ गेल छल जे बेटी'क बापकें मृत्युक अतिरिक्त कोनो बाट नहि ।

'मुदी ! रातुक भानसक की ओरिआओन कएने छी ?'

'आटा लेल मदना कें पठौने छी पापा ।'

'ओह, केहन मँहगी आबि गेल छैक ! -'नम्हर साँस लैत शिविर बाबू बजलाह ।

'कतेक सभ्यता बनल, मेटायल । समय अगरबत्ती'क गंध सन उड़ैत रहल। बच्चा जवान भऽ गेल, जवान बूढ़ -। समयक उठैत, खसैत देवाल देखलहुँ, सभ्यता संस्कृतिक बदलैत मान्यता देखलहुँ । आँखिक आगू सभ किछु घटि रहल अछि । पहिने दरमाहा कम छल । तैं अढ़ाय रूपया किलो कड़ुतेल, अढ़ाय रुपये मन कोयला किनैत छलहुँ । मुदा कष्ट तखनो छल आइयो अछि । पहिने रुपैयाक मूल्य छल । आइ मूल्य ह्रास भऽ गेल । दसटकिया एकटकिया बनि गेल आ नमरी दसटकिया । मानव भँवर मे फँसल शिशु सन चक्कर काटि रहल अछि-शिविर बाबूक स्वर अतीतक दर्द लऽ सिहरि रजि छल ।

'पापा, एकटा बात तँ अहाँ छोड़िए देलहुँ - मुदिता अधर पर मैलछाँह मुस्की लऽ बजलीह -'ओहि जमाना मे बेटीकें ब्याहऽ लेल लड़का मँगनी मे भेटैत छल आ आब मोल-भाव करऽ पड़ैत अछि ।'

शिविर बाबू बेटीक बात सुनि चौंकि पड़लाह - मुदी ? 'पापा एकटा बात पूछी ?... लोक अपन बेटाकें किएक बेचैत अछि... कोना बेचैत अछि...।

शिविर बाबूक आँखि मे रेतकण झिलमिला गेल । 'पापा, माय कोना अपन बेटा कें बेचैत अछि - बेटाक दाम लगबैत अछि ? अपन पेट मे बेटा कें जीवन दान दैत अछि, पालैत-पोसैत अछि, ओ माय कोना बेटा कें बेचवा लेल सहमत भऽ जाइत अछि । पापा, सौरभ तँ बड़ छोट अछि। केओ अहाँ कें दस हजार टाका देत तँ की अहाँ ओकरा सौरभ दऽ देबैक ? दस हजार टाका लेल सौरभकें बेचि देबैक पापा.... ।

'मुदी !' भारी स्वर मे शिविर बाबू बजलाह -'पागल भऽ गेल छी अहाँ? अनाप-शनाप बजने जा रहल छी..... की भऽ गेल अहाँके ? पापा अहाँ हमरा लेल खरीदल बर नहि आनब पापा, हम विवाह नहि करब - नहि करब.... ।

शिविर बाबू बेटीक पागल प्रलाप सुनि चुपचाप ओहिठाम सँ उठि गेल छलाह । ओहि रीत मुदिता अपन माय-बाबूजीक गप्प सुनने छलीह ।

'मुदिताक ब्याह एहन घर मे करब जे आदर्श हो । ओ बड़ भावुक अछि. ... विद्रोही प्रवृति....' आ बाप बेटीक बात सुनि माय दाँत कसि लेने छलीह ।

'एहि बेटीक भविष्य की अछि ईश्वर.... ? माय आशंकित ।

'सभ दिन बेटा जकाँ पोसने छी । आदर्श आ सिद्धान्तक शिक्षा देने छी। जवान अछि । माथ पर गृहस्थीक भार पड़तैक अपने शान्त स्थिर भऽ जएती ।'

आतीश बाबूक बेटा सप्तक अहाँके केहन लगैत अछि - बाबूजीक स्वर सँ मुदी चौंकली । आतीश बाबू छोट-मोट रोजगार करैत छथि । बेटा सेहो ओहि रोजगार मे लागल अछि । नीक खाइत पीबैत घर - सिद्धान्तवादी लोक । 'मुदा ओ बड़ टाका मांगताह -' मायक आशंका ।

'टाका ?' - हँसैत शिविर बाबू बजलाह 'दहेज विरोधी संघक 'प्रेसीडेंट' छथि । दहेज प्रथा हँटयबा लेल जी-जानसँ लागल छथि ।'

ओह, तखन तँ बड़ नीक । अपन विवाह एकटा गरीब घरक लड़की सँ कएने रहैथ । अहाँ कोन बजैत छी ? आतीश बाबू कें जनैत नहि छी की। मायक स्वर मुदिताक कान मे पड़ल । हुनकर ससुरक घर दुआरि, जगह जमीन सभ बिका गेल रहनि । हुँ, दहेज नहि नेने छलाह एहि मे कोनो शंका नहि । हँ सप्तक माय-बापक आज्ञाकारी परम सुशील ।'

मुदिताक आँखिमे सप्तकक रूप नाचऽ लागल । आदर्श आ सिद्धान्तक बात सुनि ओकर हृदय सप्तके लेल नहि अपितु समस्त परिवार लेल पूजा पुष्प सन समर्पित होइत रहल .... ।

आ एक दिन पालकी पर चढ़ि कनियाँ बनि मुदिता अपन सासुर आबि गेलीह.... ।

'खाली कनिये टा ? सर सामान, दान दहेज.... आहिरौबा.... ।' सासुक प्रथम स्वर सुनितहि मुदिता घोघ तरसँ देखऽ चाहली ।

'माँ, भौजीक गहनो एकोटा नैहरक नहि अछि ।' मुदिताक अंग परीक्षण करैत छोटकी ननदि बाजि उठली। 'बाबूजी हद्द कऽ देलथिन माँ।' मुदिताक समस्त देह तिक्त गंध मे आवेष्ठित भऽ गेल । सासुरक प्रथम स्वागत गान... मोटा जकाँ घरक कोन मे बैसल मुदिता ।

'माँ, फ्रिज नहि अछि । टी. वी. नहि । पलंग सोफा किछु तँ नहि अछि। कतेक उत्साह छल, भैयाक ब्याह मे एतेक सामान आएत ।'

'सीपी एखन तोहर बाबूजी सँ पूछैत छी । दहेज विरोधीक सभापति छथि समाज मे कि घरमे ? अपने घर जराय हम आगि नहि तापव । एकटा बेटा आ. ... पुनः मुदिता दिस घुमैत आग्नेय स्वर मे बजलीह -'हे कनियाँ, बैसल की टुकुर-टुकुर देखैत छी । हम भड़फोड़ी तड़फोड़ी नहि बुझैत छी। जाउ, भनसा कोठरी-काज-धाज करू - आ कि माय इहो सभ नहि सिखैलक ।'

अपरिचित घर अपरिचित लोक, अपरिचित परिवेश मे मुदिता निःसहाय जकाँ सप्तकके स्नेहिल दृष्टिएँ ताकि रहल छलीह । मात्र चारि दिनक जकरा सँ परिचय छल - चतुर्थीतक । ओ तँ माय बहिनक उक्ति सुनि कखन घसकि गेल

छल, कियो नहि बुझलक । मुदिता चुपचाप भानसघर दिस विदा भेलीह ।

'-हे, बनारसी पहिरि भानस मे नहि जाउ । बनारसी कहियो आँखि देखने छलौं । सीपी, एकटा अलगनी पर सँ साड़ी दऽ दही पहिरबा लेल ।'

एकटा रंग उड़ल पुरान साड़ी हाथ मे लेने मुदिता काँपि रहल छलीह। साँझक कजराएल आँखि नोरा गेल। आकाश मे तृतीयाक चान विधवाक टूटल चूड़ीक खंड सन लटकल छल आ भानस घर मे मुदिता सोचैत छलीह- 'कतेक सपना लोक देखैत अछि । सपना... कतेक विचित्र शब्द.... आँखि खुलेत अछि। आ टूटि जाइत अछि। नहि, नहि सपना कें पकड़बाक चेष्टा नहि करबाक चाही, परछाहीं, कतहु पकड़ल जाए ।' 'बाप रे, एतेक देरी सँ भनसाघर मे की अपन देह डाहि रहल छी ?' सासुक कर्कश स्वर... माय बाप भिखमंगा जकाँ बेटीकें साँठि देलनि आ बेटीक मलार कतेक... ।'

एही स्थिति मे दिनक पंछी उड़ैत रहल । विद्रोही मुदिताक सभ स्वर शांत भऽ गेल । सभ उत्ताप पर हिमपात भऽ गेल । सप्तक रातिकें अबैत छल, पतिध र्म निबाहि चलि जाइत छल । मुदिताक मोन सँ, सुख-दुःख सँ ओकरा कोनो मतलब नहि छल । ओ सरिपहुँ, माता-पिताक आज्ञाकारी छल ।

आतीश बाबू बड़ पैघ समाज-सुधारक छलाह । हुनकर नाम-प्रतिष्ठा - छल, मुदा दीप तर अन्हार । घर मे हुनक रूप -'अहाँ, शिविर बाबू कें की कहि विवाह ठीक कएने छलहुँ । कोनो सामान घर मे नहि आएल। समाज सुधारबाक चक्कर मे अपने घर मे अहाँ आगि लगा देलहुँ ।'

'हम कहने छलहुँ सीपीक माय, इशारा मे कतेक बात कहने रही । हम टाका नहि लेब, बेटा तँ एकेटा अछि - ओकरा मायक स'ख सेहन्ता.भाड़ मे जाय अहाँक कहब ।' - सीपीक माय अगुता गेलीह -'अहाँ टाका नहि लेलहुँ तँ अहाँकें किछु नहि भेटल ।'

'अहाँ स्थिर रहू । ठका तँ ठीके गेल छी । टी. वी., फ्रिज किछु तँ नहि भेल...।'

'कहू त' एकेटा बेटा, आब तँ हमर घर मे कहियो ई सभ वस्तु नहि आएत, कहियो नहि....' मुदिताक सासु दुःख आ वेदनासँ कानऽ लगलीह।'स्थिर रहू, हम उपाय सोचैत छी ।'

घरक एहन वातावण मे मुदिता डेराएल हिरणी जकाँ राति-दिन चौंकल रहैत छलीह । जंगली भेड़ियाक मध्य एकटा मृग शावक मुदिता.. माय-बापक अल्हड़, चंचल, विद्रोहणी मुदिता । घरक कण-कण मे ओकरा षडयंत्रक आभास होइत छलैक - डेराएल.... चौंकल.... भयभीत ।

ओहि राति सप्तक बाँहि पर पड़ल मुदिताक आँखि मे निन्न नहि छल । राति-दिन खुजल आँखि सँ ओ भयंकर सपना देखैत छलीह । 'की होइत अछि अहाँके? ने तँ अपने सुतैत छी आ ने हमरा सुतऽ दैत छी । -मुदिताक चौंकब सँ

अर्द्धनिद्रा मे पड़ल सप्तक खौंझा उठल ।

'निन्न नै अबैत अछि ।'-अपना आप सँ जेना कहि उठलीह मुदिता।

'धन्य छी महाराज, निन्न नै अबैत अछि । आश्चर्य अछि एहि बीमारीक। नै अबैत अछि तँ पड़ल रहू चुपचाप चौंकि चौंकि कऽ तिरिया चरित्त नहि देखाउ।' - मुदिता दिस पीठ दऽ बड़बड़ाइत सप्तक पड़ि रहल।

मुदिता लहुलहुआन भऽ गेलीह । तिरिया चरित्त ? भावुक मन कचोटि उठल । तिरिया-चरित्त ककरा कहैत छैक ? के बनौलक एहि शब्द कें ? पुरुष चरित्त कियो किएक नहि बजैत अछि ?... सभटा रामायण, गीता, वेद-पुराण पुरुषक लिखल अछि, तें ई पक्षपात । तें कतेक अबला, असहाय हम सभ छी। लंका सँ सीता कें आनि कऽ राम अग्नि परीक्षा लेलनि । मुदा एको बेर सीता प्रतिवाद नहि कएलनि । राम अग्नि परीक्षा किएक नहि देलनि? पत्नीसँ अलग तँ रामो छलाह, मुदा ओ नै बजलीह । रामायण पुरुषक लिखल छल ! - निस्तब्ध राति, कतहु कोनो मर्मर नहि। मुदिता अपन सोच मे डूबल - एहि आँखिक नोर ओहि आँखि मे टघरि टघरि सागर बना रहल छल।..... नहि, नारी निर्बल नहि अछि । नारी ठीके रहस्यमय अछि । नारीक रूप भयंकर मायाजाल अछि । सभ देशक लोक कहने अछि, 'फ्रेल्टी ! दाउ आर्ट वोमेन...... कियो स्त्रीकें नहि चीन्हि सकैत अछि । नहि तँ बेटाकें बेचबा मे मुख्य हाथ मायक रहैत अछि । पुतोहू बनि जरैत अछि आ बचि जाइत अछि, तें सासु बनि जरबैत अछि। बेटाक माय बनि स्त्रीकें की भऽ जाइत छैक । सरिपहुँ नारी जड़ि थिकीह सभ बुराइक।

असहाय मुदिता आक्रोशसँ भरल छलीह । नाना प्रकारक विचारधारा ओकर मानस मंथन कऽ रहल छल। पतिक प्रेमिल स्वरोसँ वंचित... कोनो माय-बाप अपन बेटीक स्थिति बुझि सकैत अछि । कतेक बेटी अपन सासुर मे एहिना राति बतबैत होएती डेरायल.... भयभीत । भूखल, पियासल आगि मे जरैत.... आह ! माय दोसरक बेटीकें गञ्जन करैत अछि, मुदा स्वयं ओकर बेटीक?

राति तीतल भीजल जाइत छल । नीरवता एतेक सघन छल जे खिड़की सँ बहैत मन्द हवाक स्वर वाचाल छल।

मुदिताक आँखि सँ निन्न कोसो दूर छल.... एकटा आशंका.... एकटा संशयक मेघ ओकर मानस पर घेरल.... लगैत छल, कोनो प्रलयंकार झंझा आबय बला हो - कोनो भयंकर प्रलयक आगि लागयबला हो- समस्त क्षितिज अंधकार सँ आच्छादित - अचानक किछु स्वर.... किछु शब्द अस्पष्ट सन मुदिताक कानसँ टकरायल । एकटा अनजान भय सँ ओकर छाती धड़कऽ लागल। ओकर समस्त इन्द्रिय सजग-सचेतन भ' ओहि स्वर कें, शब्द कें आत्मसात करय लागल... ।

-हमहुँ सैह सोचैत छी - सासुक स्वर कानमे पड़ल ।' ओ आर सजग भऽ

गेलीह ।

शिविर बाबू सभ सौख-मनोरथकें डाहि देलनि । विनिश बाबूक बेटीसँ गप्प चलावी - आतीश बाबूक स्वर - विनिश बाबू - नगरपालिकाक चेयरमैन? देब-लेब तँ खूब करताह, मुदा हुनकर बेटीक आँखि कखनो-कखनो चमकि जाइत अछि - मायक स्वर छल ।

-'आब लिय, आँखिक बात - नीक आँखिवाली अनलहुँ तँ की भेटल ?'

-'से तँ साँचे, मुदा, ई कनियाँक की होयत ? ई तँ हल्ला मचाय सभटा इज्जत प्रतिष्ठा खतम कऽ देत।'

-'एकरो उपाय अछि ।'

-'मुदिताक सर्वांग थरथरा रहल छल । साँस जोर-जोर सँ चलि रहल छलनि... आवाज अस्पष्ट भेल जा रहल छल.... पारामार, अछि.... हँ ठीके, पारामार तँ दोकानेमे अपन पड़ल रहैत अछि ।'-

'लोकके की? कहि देबैक आत्महत्या कऽ लेलीह, दोसर गोटेसँ फँसल छल, आइ पकड़ा गेलीह.... 'वाह ई तँ उत्तम । हम तेहन जोर सँ चिकरि बाजब जे सभ कियो हमर कथनक सत्यता पर विश्वास कऽ लेत। मुदिताक सासुक स्वर सँ खुशी छलकैत छल ।

-दोसर गोटे सँ फँसल.... पारामार.... मरणोपरान्त चरित्र पर दोषारोपण। आवेश आ उत्तेजना सँ काँपि रहल छलीह मुदिता.... आतीश बाबूक ऑफिस कोठरी मे टेबुलक दराज मे राखल लोडेड रिवाल्वर ध्यान मे आबि गेलनि - माय-बापक आज्ञाकारी पुत्र एहि सभ षडयंत्रसँ अनभिज्ञ निश्चिंत सूतल छल । एकटा आवेश - एकटा उत्तेजना - एकटा मूर्च्छना मे मुदिता यंत्रचालित सन रिवाल्वर लऽ सासु, ससुर, ननदिक समक्ष ठाढ़ भऽ गेलीह-

'बहुत भेल बाबूजी - अहाँ एहन समाज सुधारककें प्रतिष्ठाक संग जेनाइ आ एहि दुनिया सँ जेनाइ नीक'- आ एक गोली ससुरक छाती पर-

'माय अहाँ, 'मां' शब्द पर कलंक छी । नारी रूप पर कलंक छी - नारी भ' नारी कें प्रतिष्ठा नहि दऽ सकैत छी - 'दोसर गोली - 'हँ, सीपी हँ पैघ भऽ अहूँ माय बनब, बेटा बेचब, सासु बनि पुतोहूकें पारामार खुआयब - तँ ई अहाँक लेल.... ।

तीनू लाश तड़फड़ा रहल छल । सप्तक केराक भालरि जकाँ कँपैत दरबज्जा पर कखन ठाढ़ भ' गेल छल- 'नहि, अहाँकें किछु नहि कहब । अहाँ माता-पिताक आज्ञाकारी छी अवश्य, मुदा अहाँ हमर सुहाग छी- एहि सोहागक कारणे सीता अपन सासु-ससुर, महल-दोमहला सभकें त्यागि रामक संग वन चलि गेल छलीह... ।

◆◆◆

वी.आइ. पीज.

हाँ हाँ हाँ - एहि कुरसी सभकें नै छुवू - किएक की बात थीक ? कुरसीक ढ़ेर एक दिसि पड़ल छल।

ई वी. आई. पीज. लेल अछि होमगार्ड बाजि उठल -

हम चौकि गेलौ - वी. आइ पीज. के थीक ? संग मे महिला कालेजक तीन चारि टा व्याख्याता छल । सभ रौद घाममे नहाइत? झंडोत्तोलन देखबाक असीम उत्साह आ उत्कंठा लोगबाग मे ? छोटछीन शामियानामे कुरसी आ बेंच पहिने सँ लागल छल । बेंच पर महिलागण वैसल नै ठाढ़ छलीह केकरो पीठपर वी. आइ. पीज. क विल्ला नै सटल छल ।

हम जखन पुलिस लाइन पहुँचलौतँ साढ़े आठ बाजि रहल छल । शमियाना पहिनेसँ खचाखच भरल छल । बीचमे झंडोत्तोलन लेले सजल संवारल स्थान लेल एकटा मेन रोड लाल सुर्खीक बनल । सड़कक ओहि पार एकटा शामियाना आर बनल छल जाहि मे पुरूष वर्ग वैसल छलाह सिपाही होमगार्ड आ पदाधिकारीगण सभ एम्हर ओम्हर अपन रोब मे घुमि रहल छलाह संभ्रान्त महिला सभ, आबि रहल छलीह मुदा, कुरसीक ढेर वी. आई. पीज. कें ताकि रहल छल ।

एकटा होमगार्ड कोनो लड़कीकें कुरसी छूबा लेल मना कऽ देलक तँ हमरा तामस उठि गेल - एतेक कुरसी पड़ल अछि आखिर ई वी. आइ. पीज. थीकाह के ? की हुनकर पीठ पर लिखल रहत - ओ होमगार्ड किछु लजाइत किछु बड़बड़ाइत एम्हर ओम्हर ताकऽ लागल ।

एकटा महिला बजलीह - ई कार्ड वाला सभ लेल अछि -

कार्ड पर तँ हमहुँ आयल रही ? कहाँ केओ हमरा कुरसी देलक ? हम तँ स्वयं खीचि बैसि रहलौं । कार्ड देबाक काल तँ ओ सभकें परसाद जकाँ बाटि दैत छथि मुदा हुनक प्रतिष्ठाक ख्याल नै रखै छथि ?

आठ बजबामे बीस मिनट छल । अचक्के बड़का हंगामा भऽ गेल। एकटा पचास पचपनक आयुक सिपाही कें एरेस्ट कऽ जबरदस्ती जीप मे धकेलि रहल छल । दोसर सिपाही सभ आ एकटा वृद्धा ओकरा पकड़ि दहो-बहो कानि रहल छली । अपन वृद्ध माता कें कुरसी पर बैसेबाक ज्वार ओकरा उठल आन सिपाही विरोध केलक - ई कुरसी वी. आइ. पीज. लेल अछि । अहाँक कोन हस्ती ।

बेचारा चुपचाप माय कें कुरसीपर सँ उठा बेंचपर बैसबऽ लागल ओकर आगु सँ बेंचो छीनि लेल गेल । कतेक प्रेम आ आदर सँ ओ अपन वृद्ध माय कें जनतंत्रक झाँकी देखै लेल अनने छल मुदा ओकर आगुसँ कुरसी खींच लेल गेल, बेंच छिना गेल । स्वभावतः मातृ आ मातृभूमिक प्रथम पाठ सीखऽ वाला ओ सिपाही अपन माताक अपमानसँ आवेश मे छूरा खीचि लेलक । सभ अफसर ओहिठाम पहुँचऽ लगलाह । सिपाही छूरा निकालि लेलक ई सनसनी पुरवा जकाँ पसरि गेल । बहुत खतरनाक अछि ई सिपाही - पता नै कखन केकरापर छूरा फेकि दैक - लोकक जानपर आफत भऽ गेल । आ पुलिस प्रशासन ९ बजबासँ पहिने जल्दी-जल्दी ओकरा एरेस्ट कऽ ओहि ठाम सँ हँटा चैनक साँस लेलक । बाप रे एतेक खतरनाक आइ तँ सभक जान आफत मे..... । केओ इ सोचलक जे कतेक आदर आ उछाहसँ ओ अपन माय कें अनने छल गणतंत्र दिवस देखेबाक लेल - मुदा वाह रे कुरसी ? गणतंत्र दिवस अछि तँ की - ई तँ वी आइ पीज लेल अछि ।

एहि बीच कतेको महिला सुर्खीवाला सड़कसँ अपन-अपन अरदलीक संग सभ सँ आगु गेलीह । ओकरा सभकें ओहिठाम बैसाओल गेल । जानल बात छल जे सभ प्रशासन पदाधिकारीगणक पत्नी सभ छलीह । कतेक गौरव आ अहंसँ भरल गणतंत्र दिवसक नजारा देखवा लेल -

हमर बगलमे कुरसीक ढेर हमरे जकाँ वी. आइ. पीज. क बाट ताकि रहल छल । निरीक्षण करैत एकटा पदाधिकारीसँ पुछलौ -हमसभ कोना-कोनो कार्यक्रम देखिसकब -कुरसीक ढेरकें तँ हटवा दियऽ - किएक ठाढ़ भऽ कऽ देखि लियऽ -अनमन बजैत ओ ओहि ठामसँ चलि गेल -वाह की शान अछि एक चित्र आबि रहल छल -अपन मायकें कुरसीपर बैसएबाक अपराधमे एकटा सिपाही एरेस्ट भऽ गेल - दोसर चित्र प्रशासन पदाधिकारीगणक परिवार सभक आन-बान-शानकें-ई गणतंत्र दिवसो एकटा विचित्र पाबनि थीक? शहरक अमीर व्यक्ति सभक मोटर गाड़ी हवासँ गप करैत रहैत अछि । खादीक श्वेत परिधानमे सजल नेतागण अपन परिवारक संग मैदानमे अपन कुरसी खोजि ध्यानावस्थित भऽ जाइत छथि ? जेना खादीक थानक थान खजाना हुनका लोकनिपर उझलल रहैत अछि? रंग बिरंगी वस्त्र सँ सुसज्जित समाजक एक वर्ग आ अर्द्धनग्न भूखल-पिआसल नेना सभ हाथ मे कागजक तिरंगा नेने देशभक्तिक भाव लोकमे डूबल दोसर वर्ग -

भारतक कतेक सपूत मातृभूमिकें स्वतंत्र करबा लेल हँसैत अपन जीवन कें उत्सर्गकऽ देलक - मुदा स्वतंत्र भारतक नागरिक अपन स्वार्थक त्याग नै कऽ सकल । गरीब मजबूर सभ ले आजादीक कतौ कोनो चिन्ह नै। ओकरा धन दौलत नै, समाजमे मान नै । कतेको सरकार बनल मिटल गरीबक नारा दैत छल मुदा सरिपहुँ गरीब आइयो गरीबे अछि कोनो स्वरक्षण कोनो आरक्षण गरीब लग नै जा सकैत अछि, दीन हीन जनता हीने रहि जाएत । की आजादी समाजक एक वर्गक बाहुपाशमे जकड़ि गेल- लेन देनक तराजूमे प्रजातंत्र बटखरा बनि तुलऽ लागल-

रामपुरक जिलाधीशक बड़ चरचा छल । ईमानदारी, कर्मठता एवं जागरूकता मे ओ अपन जिलामे तहलका मचा देने छलाह । लोक आदरसँ हुनकर नाम लैत छल । मोन मे आक्रोश छल-जिलाधीकारी सँ जा सभ कथा बखानी सिपाहीसँ केकरो जान कें खतरा छल तँ ओकरा मैदानक एक कोन मे चारिटा सिपाहीक संरक्षणमे राखि देल जैतैक नहि की अंग्रेजक काल जकाँ हथकड़ी पहिरा एरेस्ट कएल जाए- मुदा, जिलाधीश तक पहुँचबाक चक्करमे हम अपनो स्थानसँ विलग भऽ जाइतौं ।

आठ बाजऽ वाला छल । ई घटना लऽक महिला सभमे बड़ सरगर्मी छल। एकटा सीधा सादा प्रशासन पदाधिकारीक पत्नी घामे पसीने नहाइत हमरा लग पहुँचलीह । - अरे अहाँ एतऽ किएक आबि गेलौ ?अहाँ सभ लेल तँ अलग इंतजाम अछि - हमर बगल मे कुर्सीक ढेर ओहिना पड़ल छल -होमगार्ड कें बाजलौं एकटा कुरसी दऽ दियौक-एकटा वी.आइ.पी. अछि । अनठा देलक ।

अहाँक अरदली कतऽ गेल । ओ अहाँके ओहि शमियानामे पहुँचा देत ? एहिठामसँ तँ अहाँ किछु ने देखि पायब ।

नै नै आब हम कतौ नै जायब अहाँ भेटि गेलो हम एहिठाम रहब ओ एकदम घबड़ा गेल छलीह ।

हमरो स्वर उदास भऽ गेल - जनैत छलौं - हमर बेटा संजीव एन.सी.सी मे भाग नेने अछि । ओकर बड़ मोन छल जे माय अवश्य आबय ! अहाँकें देखि हमरा उत्साह भेटत । ओकर बाबूजी कतौ प्रेसमे बैसल हेताह। आ हम एहिठामसँ ने तँ अपन बेटाकें देखि सकैत छी आन ओ जनैत होयत जे माय आएल हेतीह?

आब कमिश्नर साहेब चारु दिस घुमि रहल छलाह । जिलाधीश महोदय ओहिठाम ठाढ़ छलाह । सभ महिला पुछि रहल छलीह कलक्टर के छथि - डी. एम. के अछि - ठीक अमिताभ बच्चन जका कलक्टर साहबक लोकप्रियता छल। देहाती घरेलू सभ वर्गक महिलामे उत्सुकता छल । हमरो मनमे उमंग उठल काश जिलाधीश महोदय अपन लोकप्रियता बुझि सकितथि - कनिक मृदुता, मोनक विनयशीलता मनुष्यकें महान् बना दैत अछि । मुदा कतेको पदाधिकारी एहनो होइत छथि जे जखन हुनक केरियरक चरम उत्कर्ष एक दिसि रहैत अछि आ दोसर दिसि कनिके काल बाद अवकाश ग्रहण करवाक क्षण -तखन हुनक अहंकारो चरम सीमा पर रहैत अछि मुदा अपवाद रूपे ! झंडोतोलन भऽ गेल आ सरिपहुँ ओहि क्षण हमरा अपन स्वाधीन भारतक गरिमाक अंदाज भेल । सभ थपड़ी पाड़ि रलि छल की गरीब की अमीर सभक चेहरापर देश प्रेमक अदभुद लहरि - प्रत्येक हृदय गद्गद । आयुक्त महोदय सलामी लऽ रहल छलाह । जनगण मनक पुनीत पावन स्वर मोनकें रोमांचित कऽ रहल छल । जिलाधीश महोदय सलामी दऽ रहल छलाह - आ हमर मोनमे फेर ज्वार उठल - काश आजुक दिन सभ प्रशासन पदाधिकारीगण अपन परिवारक संग सभ सँ आगू

दरीपर बैसितथि आ जन साधारण लेल कुरसी आ बेंचक प्रबन्ध रहितैक - चारिचान लागि जाइत सभक महतामे! जनसाधारण हुनक अनुकरण करैत ई कुरसी छोड़ि नीचाम बैसि जाइत आ लोकक माथसँ कुरसीक भूत सेहो क्रमशः उतरैत जाइत ?

समारोह संपन्न भऽ गेल । हम अपन बेटाक एको झलक नै देखि सकलौं। कुर्सीक ढेर एखनो विवश नेत्रसँ हमरा दिसि ताकि रहल छल - वीआइपीज कखन अओताह ।

◆◆◆

नियति

जीवनक एहि नीरस-यात्रा मे खाली चारि दिन खेलयबाक-धुपयबाक अछि । उमंग भरल हृदय, उल्लास भरल अभिलाषा, आह्लाद भरल प्रसन्नताक घड़ी.... आ के अतीतक कटु-मधु साधनाकेँ स्मरण करैछ? एक टा गहन धुइयाँ जकाँ पसरि जाइत अछि बीतल संस्मरणक चतुर्दिक । तखन मानब सोचऽ लगैत अछि ।

आकाशमे मेघ अलगटेंट जकाँ एम्हर-ओम्हर दौड़ैत छल । आ नीरजाक कल्पना सेहो अगिलही जकाँ पाछाँ मुँहे दौड़ऽ लागल छलैक -

-प्रदोष, इएह नाम छलैक ओकर कॉलेजक अन्यतम सहपाठीक । अत्यन्त मेधावी आ एकटा विख्यात कवि । एक दिन कालेजमे कोनो कवि सम्मेलन छलैक जाहिमे गाओल प्रदोषक कविताक भाव एखनधरि नीरजाक हृतंत्रीकेँ छुवि जाइत छलैक - । 'अहां एक आँखि हमरा देखि टा लेलहुँ हमर सम्पूर्ण जीवन प्रेमक अनश्वर रश्मिसँ उदभाषित भऽ गेल । हमर कल्पना अपन दुनू बाँहि पसारि, अहाँक आँचर पकड़वा लेल बहकल छल तावत एक टा ठेस लागल आ यथार्थ बंजर भूमिपर हमर पयर रुकि गेल। सपना टूटि गेल आ नियति ठामे ठिठिआइत रहल । '

'लगैत छल जेना अपन कविताक ताप सँ स्वयं तपि रहल हो । नीरजा के भान भेलैक एकर प्रत्येक आखर प्रदीपक अन्तरसँ निकलल धुइयाँ हो जे नीरजाक मर्मकेँ छूवि रहल छलैक ।

-बड़, नीक कविता छल । धन्यवाद दैत कहलक नीरजा ।

-'ओह धन्यवाद ! कखनो कखनो एहिना भावावेश मे लिखऽ बैसि जाइत छी । लगैत अछि जेना अन्तरसँ कोनो उद्रेक बहरा रहल हो, विचलित, व्यथित भऽ कऽ ।' आ बजैत बजैत भावातिरेकसँ प्रदोषक ठोंठ बझि गेलैक।

निर्निमेष नीरजा प्रदोषक मुख-मण्डल निहारैत रहलि ।

-हमरा नहि बुझल छल अहाँ एतेक भावुक छी ?

-भावुकताकेँ हम जीवनसँ भिन्न नहि बुझैत छी ।

दुनू गोटे जेना एक दोसराक हृदयकेँ... चिन्ह लगलैक । ओहि दिनसँ प्रदोष नीरजा ओतऽ आबऽ-जाय लागल। प्रदोष हरदम गीत सुनबैत रहैत छलैक। ओहि गीतक प्रत्येक आखरमे ओहेन प्रेम भरल रहैत छलैक जे जीवनके रोग लगा दैत छैक । जीवन स्वप्न जकाँ बीतऽ लगलैक कि अचक्केँ टूटि गेल । देशपर पाक आक्रमणक मेघ घहराय लागल । चारू कात जवान सभक हृदयमे आगि ध धकि उठल । मातृ-भूमिक हेतु मरबा लेल सभक हृदयमे जेना गरम रक्त प्रवाहित भऽ गेलैक । आ प्रदोष अपन भावुकताकेँ छोडि, पढ़ाय-लिखाय छोड़ि, सेनामे

भरती भऽ गेल । आ ट्रेनिंग पश्चात ओकरा लड़ाई मे पठा देल गेलैक । प्रदोष गेल, ओकरा संगे ओकर गीत, ओकर विचार सभ चल गेल ।

नीरजा जेना अपन भाग्यपर अकचकाय गेलि । प्रदोष जहियासँ गेल, कोनो खबरि नहि आयल । आँखिसँ दूर गेल, हृदयसँ दूर गेल । नीरजा बूझि नहि सकैत छलि जे ओ एक टा क्षणिक प्रेम छल आ कि अनश्वर प्रेमक यथार्थ रूप, जे अन्तसमे नुकायल आगि जकाँ कहियो-कहियो धधकि, कोनो अव्यवत वेदनाकेँ अनन्त कालधरि जीवित रखैत अछि ?

तकर बाद ओकर विवाहक गप्प चलऽ लागल । ओ चुपचाप आँखिसँ देखैत रहलि सभटा मोन बौआइत रहलैक सुदूर नीलाकाशमे । मैथिल कन्या नीलकंठ जकाँ विष पीबि-पीबि अपनाकेँ जीवित रखैत अछि। पीयर नुआमे लटपटायल नीरजा आबि गेलि अपन भाग्य विधाता पारिजातक घर । आ ओकर दिनचर्या पूर्ववत रहलैक, कोनो त्रुटि नहि, कोनो अभाव नहि । मुदा कखनो कऽ ओकर अन्तरामे कोनो आगि धधकि जाइक, कोनो अभाव जकाँ बुझि पड़ैक । पहिल प्रेमक भावमय स्पर्शानुभूति एखनो ओकरा झकझोरि जाइत रहैक।

बड़ कालधरि नीरजा अपन अतीतमे झुलैत रहलि । कतेक चित्र बनलैक आ मेटयलैक, मेटलैक आ बनलैक - अस्त-व्यस्त एहि विचारक क्रम किन्नीक स्वरसँ टुटलैक -

-एहि ठाम की भऽ रहल छैक कवयित्रीजी ? कवि जीक आह्वान ?

-विना बुझने किन्नी ओकर मर्मपर आघात कऽ देलक ।

-ओह किन्नी ! आबह, आबह ।

-हे, तोहर कल्पनामे कतहु हमरो स्थान अछि कि नहि ?

-किन्नी हमरालोकनिक, स्त्रीगणक हृदय सूर्यास्तक बंद कमल सनक होइत अछि । जहिना , कमलक पाँखि बंद होयऽ लगैत अछि ओहि महक मधुपान करैत मधुपगण सभ टा बंद भऽ जाइत अछि आ बिना सूर्योदयक ओकर निकास कोनो तरहेँ नहि । हमरोसभक हृदयमे कतेक दुखः कतेक पीड़ा भरल रहैत अछि मुदा कमल जे बंद होइत अदि तँ बंदे रहैत अछि । कमलक हेतु तँ सूर्यादय वरदान थिक मुदा हमरालोकनि कहियो सूर्योदयक कल्पनो नहि कऽ सकैत छी । खाली बंद कमल, छटपटाइत कामना, आकांक्षा आ ।

छिः नीरू, अतीतकेँ विसरब मनुष्यक सभसँ पैघ महानता थिक ।

-नहि किन्नी, तोँ नहि बुझैत छह। हम एक टा अपन नैहरक खिस्सा कहैत छियह । हमर एक टा पिती छथि । ओ अपन प्रथम पत्नीक मुइलाक बाद पचपन वर्षक आयुमे बीस बर्षक कन्यासँ विवाह कयलनि । हम दुनू गोटे समवयस्के छी । तेँ दुनू गोटेमे बड़ मेल अछि । दुनू गोटे एक दोसराक सुख-दुखक सभसँ पैघ सहायक । ओह, एतेक निर्मल स्वभव छनि हमर कनियाँ काकीकेँ जे की कहियह । हमर माय वृद्धा छथि, तँ हम आ कनियाँ काकी दुनू

गोटे मिलि कऽ भानस-भात करैत छलहुँ । मुदा किन्नी, हुनकामे एक टा बड़ विचित्र आदति रहनि । ओ सभ हफ्ताहमे बुध-बुध दिन कऽ चिनवारपरक दछिनवरिया चूल्हाकें तोड़िकऽ फेरसँ बनबैत छलीह। पहिने तँ हम कोनो खास ध्यान नहि देलहुँ । मुदा एक दिन दुपहरियामे सभ सूतल छल । सर्वत्र निस्तब्धता । हमरा मोन नहि लगैत छल तँ कनयाँ काकीकें ताकऽ गेलहुँ । ताबत मोन पड़ल जे आइ बुध थिकैक । भनसा घरमे चुपचाप हुलकी मारिकऽ देख लगलहुँ । कनियाँ काकी चुल्हा बनौने जाइत छथि आ आँखिसँ टप-टप नोर खसि माटिमे मिलल जाइत छल आ एक टा अस्पष्ट सिसकीसँ किछ गुनगुनाइत छथि । हम ध्यान दऽ कऽ सुनऽ लगलहुँ-

युग-युग जीवथु, वसथु लाख कोस हमर अभाग हुनक नहि दोष ।

स्वरमे एतेक दरद, एतेक पीड़ा भरल छल जे कनियाँ काकी नहि गवैत छथि मुदा हुनक रोइयाँ-रोइयाँ कलपिकऽ गावि रहल छलनि । कतेक कालधरि हम ओहि मूर्तिमती वेदना कें देखैत रहलहुँ । पयर दबाकऽ कनियाँ काकीक लग आबि वैसि रहलहुँ --

--काकी ई की ?

कनियाँ काकी एकदम हड़बड़ा गेलीह जेना कोनो चोर सेन्ह कटैत काल पकड़ा गेल हो । हाथक माटि चिनवारपर खसि पड़ल आ ओहि हड़बड़ीमे भरल नेत्रसँ दू टा बुन्न टपकि गेल ।

-कनियाँ काकी, की बात थिकैक ? - हम चीत्कार करैत बाजि उठलहुँ।

-चुप-चुप, चुप रहू बुच्ची - हमर मुँहपर अपन हाथ राखि बजलीह कनियाँ काकी ।

-आखिर बात की थिकैक ? कोन चीज अहाँकें सता रहल अछि? अहाँ हमरो नहि किछु कहब ?

-नहि-नहि बुच्ची, कहाँ कोनो बात ? -हँसबाक उपक्रम करैत बजलीह कनियाँ काकी -'ओ तँ बाबू मोन पड़ि गेलथिन ।'

-अहाँ बात बहटारैत छी ने ? वेस, ठीक छैक अहाँ हमरोसँ नुकबैत छी?

-ही-ही-ही- कनियाँ काकीक दुष्ट हँसी-गूँजि-उठल-ठीके, अहाँ बड़ लगारी छी । आब की कहू ? किछु फेरि बनाकऽ कहि दी तँ अहाँक विश्वास होयत ?

-हँ अय कनियाँ काकी, अहाँ हमरा एकोरती अपन अन्तरंग नहि बुझैत छी तँ नै ? जे साँच बात नहि कहय से हमर चिता धधकैत देखए- आवेशमे बजलहुँ हम ।

-बुच्ची ! बड़ वीभत्स रूपे कनियाँ काकी चीत्कार कऽ उठलीह । दुनू हाथमे मूड़ी नूका फफकि-फफकि कऽ कानऽ लगलीह। हम तँ हतप्रत भऽ गेलहुँ। किछु अकवक नहि फुरल ।

-'नीरू' - कनियैं कालमे आश्वस्त भऽ कऽ स्नेह विगलित कंठसँ बजलीह - अहाँ एहन सप्पत देलहुँ हमरा तँ सुनि लियऽ । अहाँक मोनमे जे हमरा प्रति नीक भावना रहत से कथी लेऽ? बुच्ची, युवावस्था एहेन ऋतु अछि जाहिमे कतेक कामनाक वंशी बजैत अछि, कतेक अल्हड़ताक नाद निःसृत होइत अछि। चन्दर आ हम दुनू गोटे नेनासँ संगे खेलाइत धुपाइत छलहुँ । गामक गाछीमे टिकुला तोड़ैत , धानक खेतमे चोरा-नुक्की खेलाइत नहि जानि कहिया प्रेमक डोरमे दुनू गोटे बन्हा गेलहुँ ? आ प्रेम तँ स्त्रीकें जन्म सिद्ध अधिकार छैक । चन्दर एक टा गरीब गृहस्थक बेटा, हृष्ट-पुष्ट, बड़ सुन्दर युवक छल । ओकरा बड़ आत्मविश्वास छलैक । ओ जीवनक कोनो बाधाकें पयरसँ ठोकर मारि देत छल । बापकें दुइये कट्ठा जमीन छलैक आ छह गोटेक परिवार । बोनि करैत - करैत थाकि जाय मुदा तैयो दुइ बेरक खेनाइ बड़ मोश्किल सँ जुटैत छलैक। हमर परिवार तँ जनिते छी। दाम चलि गेल मुदा नाम तँ अछिये । आर्थिक विषमतासँ तंगआबि चन्दर सेनामे भरती होयबा लेल चल गेल । हम मोन मारने आमक गाछीमे चुप-चाप बैसल छलहु । माथ झुकल रहय ताहिसँ सभ टा अलक-जाल चारू कात पसरल छल । जयबासँ पहिने नहि जानि कोम्हरसँ चन्दर आबि हमर कुन्तल-स्तवकें मुट्ठीमे लऽ सुँघऽ लागल - सुनीती, एना केश खोलि नहि वैसू । चारू कात कारी मेघ जकाँ उमड़ि गेल, एहि अन्हरियामे पथिक रस्ता भोतिआ जायत । हम किछु नहि बजलहुँ । चुप-चाप बैसल रहलहुँ । ताहिपर ओ फेर बाजल -मोन होइत अछि दुनियाक सभ चिन्ता-कष्टसँ मुक्ति पाबि एहि अलक जालक छाहरिमे चिरनिद्रामे नुका जाइ ।

-छिः छिः ! - एहनो अशुभ बात लोक बजैत अछि ! - हमर आँखि डबडबा गेल ।

हाथमे एक टा औंठी पहिरबैत बाजल चन्दर नीती हम तँ बड़ गरीब छी। हमरा लग जे सभसँ अमूल्य वस्तु छल, प्रेमिल हृदय, से तँ अहाँकें दऽ देलहुँ । तैयो जाइत कालि मोन नहि मानलक । ई औंठी हमर प्रेमक चिन्ह थिक । अहाँ हमरापर विश्वास राखब ।

ई सुनिते हमर रूकल आवेग फूटि गेल । अपन रूमालसँ हमर नोर पोछैत बाजल चन्दर - छिः, नीती, कनैत किएक छी? हँसिकऽ हमरा विदा करू।

कोनो अज्ञात आशंकासँ हृदय धड़कि उठल । मुदा मुँहसँ बोल नहि बहरायल ।

-'बेस, हमर प्रतीक्षा करब नीती, हमर प्रतीक्षा करब ।

यंत्रचालित जकाँ हम ओकर पयर छूबि लेलहुँ । ओ हमर कान्ह थपथपा तीव्र गतिसँ भरल हृदये चलि गेल । ओ चलि गेल कि अकचका हमरा सुधि आयल । ओकर रूमाल हमर हाथमे पड़ल छल । हम रूमाल आँखिसँ सटा कानऽ लगलहुँ, मुदा ओ चलि गेल छल ।

एक वर्ष धरि ओकर कोनो समाद नहि आयल । हमर बाबू सभ कथा कुटमैती ठीक करबामे लागल रहथि । आ स्त्री जाति अपन मुँहसँ किछु नहि बजैत अछि तँ ओकर एहन दुर्गति होइत छैक । हमरा निस्तब्ध नीलाकाशमे बंदिनी बना देल गेल । हमरा इच्छा भेल जे भोकारि पाड़ि कऽ कानी । मुदा हम अपन कनबाक रस्ता सेहो अपने हाथे वंद कऽ देने छलहुँ आ बुच्ची, जखन महफापर चढ़ऽ जाइत छलहुँ तँ गामक बाहर राहड़िक खेत लग चन्दर ठाढ़ छल। घायल हरिण जकाँ ओकर आँखिक विवशता देखि हम छाती पीटि-पीटि कान लगलहुँ । ओह, ओकर आँखि लगैत छलैक जे कहि रहल हो - खूब प्रतीक्षा हमर अहाँ केलौं । इ बाजि काकी फेर कानऽ लगलीह

-मुदा कनियाँ काकी, एहि बातसँ बुध दिनेकँ चूल्हा बनयबामे कोन सामंजस्य ? कनियाँ काकी कनिये काल मे अपन मूड़ी झटकारि ओदारल माटिक तरसँ एक टा पाउडरक डिब्बा निकाललनि । हमरा तँ टकटकी लागि गेल। डिब्बा खोललनि । ओहिमे एक टा बड़ सुन्दर औंठी जगमगाइत छलैक जाहिपर मीनासँ लिखल छलैक - चन्दर । आ एक टा उज्जर मैलछाहा रूमाल राखल छलैक ।

ओ बुध छल जाहि दिन ई औंठी पहिरा चल गेल । ओ बड़ गरीब छल बुच्ची, ओकरा लग जे छलैक सम्पति से इएह औंठी । एहिठाम एकरा हम कतऽ रखितहुँ ? तँ चूल्हातर, चिनवारमे गाड़ि देने छी । सोचैत छी ओकरो स्मृति ओहिमे गड़ि जाय मुदा से नहि होइत अछि । प्रत्येक बुधकेँ ई चूल्हा बना दैत छी। --आ कहैत-कहैत कनियाँ काकी फेर कानऽ लगलीह । हम ओहि ठामसँ चुपचाप चल अयलहुँ ।

--किन्नी, हम सोचैत छी जे स्त्री आखिर अपन मुँह किएक नहि खोलि सकैत अछि ? कनिये मुँह खोलबाक बदलाओ जिनगी भरि खापरिमे लावा जकाँ भुजाइत रहैत अछि । सीता तँ अपन विवाहसँ पहिने रामके पसिन्द कयलनि । सावित्री सेहो अपन मुँह खोलि सत्यवानकेँ पसिन्द कयलनि । राधा आजीवन वियोगिनी भऽ कृष्णक प्रेममे कनैत रहलीह । तखन हमरालोकनि किएक एना आगिमे झोंकल जाइत छी ?'

आ किन्नीकेँ जेना ई सभ किछु नहि सुझैत छलनि । कनियाँ काकीक वीतल गाथा सुनि रहि-रहि ओकरा अशोक मोन पड़ैक --'ओह, कदाचित हमरो तँ इएह अन्त होयत ? कतेक कन्याक जीवनमे कतेक प्रदोष, चन्दर अशोक आलोक नुकायल रहैत छैक मुदा निष्कर्ष ???

◆◆◆

सायकिलक पहिया

अतीतक भग्न पृष्ठ जेना हवा मे उड़ि सप्तकक समक्ष नाचऽ लागल । चेतनाक दर्पण मे लुटायल समयककोष एकटा रिक्ततानेने उभरि उठल । वएह आयुवएह सप्तक, वएह लखना, वएह मोन वएह उत्साह सभ किछु तं समान छल। जीवनक जल सभमे अछ मुदा भिन्न भिन्न ! ओ स्वयं मि० सप्तक आइपीएस बनि सकैत छल, की कमी छल सप्तक मे आ आँखि विस्मृत अतीतक दर्द सँ नोरा गेल.......

भैया भैया - सप्तक दौड़ि रहल छल, हाँफि रहल छल ।

भैया हम पास कय गेलौं - मैट्रिक फर्स्ट डीवीजन सँ - खुशी सँ सप्तकक रोम रोम काँपि रहल छल -

असित पुलकित भऽ गेल - के कहलकौ - कोना बुझलीह ?

एखन स्कूले सँ आबि रहल छी - भैया -

की भेलै मालिक - बड़ खुश भऽ रहल छिएक । दोसरो जमींदारी भेटि गेल की - रौ तोरा खाली जमींदारीए रहैत छौक । कतेक खेत लेवे, कतेक बटैया। कखनो कोनो कमी भेलौक जे अपन जमींदारीक गप करैत छैक - नहि औ मालिक से तँ ठीके - हमरा सभ तँ अहींक छत्र छाया मे जीवि रहल छी - खैनी लटवैत टीरना बाजैत रहल - मालिक एहि गाम मे देखु ने केओ लघुशंको करैत अछि तँ अहींक जमीन पर-सभक तँ ससरी फँसरी अहाँ -

सप्तकक मोन छोट भऽ गेल - हम पास भेलौं से भैया तुरंत बिसरि गेलाह आ अपन गुन गाथा मे डुबि गेलाह - मुदा टीरना बुझि गेल आखिर छोटका मालिक तँ सप्तके छल - खैनी मुँह मे फांकैत तुरंत बाजल - आब तँ छोटका मालिक दरोगा बनि जेथिन ।

आ जेन असित के होश आयल ।

दरोगा - हुँह - दरोगा के तो बड़ पैघ बुझैत छीह - रे हमर सप्तक एस पी बनत एस पी आइ पीएस -

मालिक हिनका तँ दरोगा बन' दियौक बड़का हाकिम - बड़का - एस बी बनि की करताह ।

सप्तक आ असित दूनू भभाय हँसि देलक । इ अनपढ़ टीरना कतेक निश्छल अछि - दुनिया जहान किछु नय बुझैत छैक - रौ मूर्खाहा - एसबी नय ओ एसपी बनत जकर डर सँ दरोगा सभ छाहि काटैत रहैत अछि ।

से कहियौ ने मालिक इतँ बड़का बात - हम तँ बीडीओ आ दरोगा सँ बढ़ि के हाकिम जानिते नहि छी । अपन सप्तक बाबू एसपी बनताह । दरोगा डर सँ भागि जायत - आह ओ दिन कतेक नीक लगत कतेक नीक - कहिया आयत

ओ दिन - आ निर्दोष टीरना अपन छोटका मालिकक भविष्यक स्वर्णिम स्वप्न देखऽ लागल।

सप्तक चल अंगना माय कैं आ तों अपन भौजीकैं ई खुशखबरी सुना दहीक आ दूनू भाय भीतर अंगना गेल - सप्तक तँ पीपरक पात जकाँ हवा मे खुशी सँ डोलि रहल छल - माय कैं गोड़ लागलक - माय फर्स्ट डीवीजन सँ पास भऽ गेलीयौक-

पहिने गोसाँय कैं गोड़ लाग बाबू - कतेक खुशीक बात छैक - सप्तक गौसाँय के गोड़ लागि भौजी कैं गोड़ लागलक - भौजी मोन सँ आशीर्वाद दियऽ जे हम आइ पी एस बनी ।

एकदम मोन सँ आशीर्वाद दैत छी बाउ जे अहाँक सभ सपना पूरा होय - हँ लेकिन एकटा बात जानि लियऽ - आशीर्वाद केओ केकरो दैत छैक तँ मोने सँ - नहिं तँ ओ आशीर्वादे नहि थीक -

आस्था दीअरक सफलता सँ गदगद छलीह ।

भौजी - अहाँ तँ पंडित छी - एहि घरमे सभ सँ पैघ पंडित अहीं लगैत छी हमरा जखन कि पाठ हरदम माय करैत रहैत अछि - सप्तक भौजीक दुलार मे डुबल छल ।

छी छी केहेन बात बजैत छी - हम की कोनो पंडित छी - आ लोग कतबो पढ़ि लिखि लैक मुदा माय बापक समक्ष ओ बड़ कम होयत छैक । डिग्री लऽ लेनाय पंडित भेनाय नहि थीक सप्तक आदमी जतेक समय, परिस्थिति आ अनुभव सँ ज्ञान अर्जित करैत अछि ओतेक स्कूल कालेज मे नहि?

भौजी स्कूल कओलेज किएक बजलौं किताब कॉपी किएक नहि... - सप्तक कम नए छल -

किताब कॉपीक आवश्यकता आय काल्हि कहाँ अछि सप्तक । बस स्कूल कॉलेजक मुहर चाही आ लड़का एम.ए. बी. ए. पास कऽ लैत अछि ।

बाप रे बाप जखन देखु दोनो दीअर भौजाइ खाली बतकटे करैत रहैत अछि । रिजल्ट से पेट नय भरैत अछि आस्था आब भोजन चाही - भूख बहुत जोर लगि गेल ।

माय बड़ खुश रहैत छलीह । अपन पुतौह पर एतेक पढ़ल लिखल रहितो कहियो ओकरा घमंड नहि भेल । कहिया माय के उनटाकऽ जवाब नय देलक। आ सभ सँ पैघ बात छल जे ओ जतेक माय के आदर सम्मान देलक अपन बेटीयो सभ नय देलकैन - कोनो बात होय, बेटी सभ किछ गप करय, माय किछ बाजि माय आस्था कपक्ष लेथीन कि तुरंत सभटा बेटी उठि जायत - हेगे बुढ़िया, हेगे बुढ़िया - तों की बूझबीह। फट्ट सँ केकरो पक्ष लीय लगैत छी । माय चुप भऽ जाय छलीह । मुदा जखन कनिया रहैत छलीह तँ एकेटा बात बाजत-जतेक माय बुझथिन ओतेक हमरा सभ के बुझवा में बड़ समय लागत ।

माय बेचारी मोने मोन बेटी सभ पर कुढ़िजायत छली । पुतौहक पलड़ा भारी भऽ जायत छल मुदा प्रकटतः किछु बजैत नहि छलीह । बेटी आखिर बेटी अछि । कखनो मोने होयत छल जे पुतौहक खूब बड़ाई करि हृदय सं बड़ाई करि पर बेटी सभ बिगड़ि नय जाय डरे चुप रहि जायत छलै । इ नारी जाति आखिर एतेक भयभीत किएक रहैत अछि - पुतौहक बड़ाई करब तँ बेटी तमसा जायता एकटा पुतौहक बड़ाइ करब तँ दोसर बेटा-पुतौह दुखी भ' जायत। अपनहि बनायल कर्फ्यू मे ओ स्वयं लाचार रहैत अछि -

आस्था बड़ खुश रहैत छलीह । नैहर मे देल माता पिताक उपदेश मोन पड़ि जाय - अपन बेटी कैं सभ सुन्दर कहैत अछि जखन सासुर मे बेटीक प्रशंसा होय तखने बेटी सुन्दर होइत अछि । नहि तँ बेटी सुन्दर रहितो असुन्दर । आस्था आसनी बिछाय, पानि राखि दुनू भाइ के खुआबऽ लगलीह । आस्था बड़ पैघ बापक एकमात्र बेटी छलीह मुदा नहि तऽ ओकरा मे घमंड छल आ नइ अहंकार। फल सँ लदल वृक्षक शाखा जकाँ प्रत्येक क्षण नमित रहैत छलीह । ब्याहो भेल छल जमींदार खानदान मे । ससुर बड़का जमींदारी छोड़ि स्वर्गवासी भऽ गेलाह। असित आ सप्तक दूनू भाई छलाह । असितक विवाह भऽ गेल छल । आस्था के देखि ससुर बड़ आह्लादित रहैत छलाह । असित पिताक कुर्सी कैं सुशोभित करऽ लगलाह। आस्था हाथ पैर पटक लगलीह जे असित कोनो नीक नोकरी मे कोनो कम्पीटीशन मे चलि आवै । जमीन जायदादक कोन अस्तित्व अछि। पिताक अर्जल सम्पति तऽ पितेक रहत - मुदा एहि ठाम आस्था पराजित भऽ गेलीह । अपन पतिये पर ई जादू ओकर नइ चलल । एते कम उमर मे मालिकक कुर्सी पर बैसि ओ एक टा स्वामित्वक अहंकार मे डूबि गेलाह। चारु दिसि मालिक यौ, मालिकयौक गूंज मे अपन धीरता नम्रताक अस्तित्व बना रखनाय बड़ कठिन छलै । आ तैं यौवन, धन्य सम्पत्ति, प्रभुत्वम अविवेकता एकेक ममप्य अनर्थाय किमु यत्र.... चतुष्टयम् ? देश मे युवातुर्क सरकारक हलचल मे युवातुर्क सभ मालिक बनि गेलाह । तँ अइसऽ बढ़ि कोन उपलब्धि, मुदा आस्था असित अपन प्रकृति मे छत्तीसक गठजोड़ केने छल। आस्था सहैत छलीह । चुपचाप ओ जनैत छली जे किछु बजवा सँ विग्रह होयत एहि सँ नीक चुप्पे रही। माय बेचारी दिन राति पूजा घर मे लागल रहैत छली । हुनका एहि सब जंजाल सँ कोनो मतलब नहि छलैक । आ तैं आस्था चाहैत छली, सप्तक किछु बनै । यदि ओ ठकुरसुहाती आ दरबारी सभक बीच एक बेर फंसि जायत तं निकलि नहि सकत । कतेक बेर ओकरा समझावैत छली । देखू बाउ आदमीक जीवन साइकिलक पहिया सन होइत अछि कखनो उपर जायत आ कखनो नीचा - सभ दिन, सभक समय एक समान नहि रहैत छैक, व्यक्तिकैं अपन गुण अर्जन करबाक चाही । अपन पौरुष आ कर्मठता के अपन हथियार बनैबाक चाही । आ तैं सप्तक ओकरा पंडित कहैत छल । मुदा, की पंडितक एकोटा आखर सत्य

भेल - एकोटा उपदेश रंग आनलक - ओहि दिन खायत काल पुछलक असित कतेक फर्स्ट डिवीजन भेलै - एक सय फर्स्ट डीवीजन गेल छै । आस्ते सँ बाजल सप्तक - एक सैय - एक स्कूल सँ एक सैय मुंह मे जायत कौर हाथे मे रहि गेल कतेक काल धरि । चेहरा परक रंग कनि कम भ' गेल ।

अहि गाम मे के सभ गेल फर्स्ट डीवीजन - असित के पुछैत डर लागैत छल कहीं अहंकार के दंश नय लागि । मुदा दंश लगि गेल छलै जखन पता लागल साव टोलाक बेटा, कीर्ती मुसहरक बेटा, झींगुर मलाहक बेटा आओर एहेन एहेन ग्यारह लड़का एहि गामक फर्स्ट डीवीजन गेल छल । सभक माय बाप आइ बेटा के एस.पी. बनेबाक सपना देखैत होयत अहंकार फन काढ़ल - एहऽ, मालिकक बेटा सँ कम्पटीशन करत - टीरनाक भातिज छल कीर्तीक बेटा - आ टीरनो आउत एस.बी. के गप करत । आ ठीके टीरना आयल छल ओहि सांझ दलान पर - मालिक लखना सेहो पास कैलक । मुदा ओकरा हम डांटि देने छी । तों एस. बी. नहि बनबहैक , तोरा दरोगा बनै के छौ । हमर मालिक एस. बी. बनत । ओ हुनका डर से तँ भागि जायत आखिर मालिकक सम्मान तँ हमही सभ छियै । मुदा मालिक लगन छै छौड़ा मे - मोन कनि छोट भऽ गेल छल असित के - मुदा, ऊपर सँ हंसैत हंसैत सब टा सुनैत रहलाह । दुनू भाइ राति कते काल धरि गप्प करैत छल - एहु दरोगा बनैत छैक मुसहरवा- दुनूक व्यंग्योक्ति सुनि आस्था बीच बीच मे टोना दैत छली - सभ मुसहर थोड़बे बनि जायत अछि दरोगा । जकरा मे प्रतिभा आ लगन रहैत अछि ओ निकलिये जायत छै - चाहे कोनो जातिक होय । सप्तक मोने मोन दांत पीसैत छल। अच्छा एक दिन भौजी देखतीह, लोक देखत के की बनै छैक। आ सइकिलक पहिया घुमैत रहल ।

कतेको साल बाद सप्तक कम्पटीशन जखन नहि पास कैलक तँ ओहो गाम मे बैसि भाईक स्वामित्वक संग प्रत्येक चीज मे हाथ बटवऽ लागल । अनायास भेटल मालिकक उपाधि आ गौरव माछ मखान धान मूँगक खेती । आइ गाम मे हलचल छल । कलक्टर, कमिश्नर, मंत्री, एस.पी. सभ आबि रहल छल। टीरनाक भातिज मि० लखन सदा आइ पी एस बनि गेल छल ।

◆◆◆